

## विषय-सूची

<p>प्रथम अध्याय प्रारम्भिक ५-८</p> <p>द्वितीय अध्याय सन्धि प्रकरण ८-१० अच् सन्धि ९ इल् सन्धि ११ विषर्ग सन्धि १५ एत्व, षत्व विधान १६</p> <p>तृतीय अध्याय नाम प्रकरण १७-२० लिंग १८ वचन १८</p> <p>चतुर्थ अध्याय कारक प्रकरण २०-२३ पञ्चम अध्याय शब्द-रूपावली २३-२२</p>		<p>अष्टम अध्याय विशेषण ३१</p> <p>नवम अध्याय संख्यावाचकी शब्द ७५</p> <p>दशम अध्याय स्त्री-अत्यय ७९</p> <p>एकादश अध्याय अव्यय ८२</p> <p>द्वादश अध्याय उपसर्ग ८५-८</p> <p>त्रयोदश अध्याय समास ८६-९२</p> <p>चतुर्दश अध्याय धातु प्रकरण ९४-२१० म्नादिगण ९५ अदादिगण १२८</p>
--	--	---





# सुबोध-संस्कृत-व्याकरणम्

## प्रथम अध्याय

### प्रारम्भिक

जिन शब्दों द्वारा शुद्ध और अशुद्ध शब्दों का विवेचन किया जा सके उसे व्याकरण कहते हैं।  
शब्द वर्णों में बनते हैं और वर्ण ध्वनि के उन चिह्नों का नाम है जिनके स्वरट नहीं किये जा सकते। जैसे—अ, इ, ए, म्।  
'राम' इन शब्द में मोटे तौर से दो ध्वनियाँ कही जा सकती हैं—र और म। परन्तु यदि इन ध्वनियों को छानबीन करें तो पता चलेगा कि 'र' में दो ध्वनियाँ हैं—र और आ। ऐसे ही 'म' में भी दो ध्वनियाँ हैं—म और अ। 'र', आ, म, अ, के और ठुके नहीं हो सकते, अतः वे वर्ण हैं।  
वर्ण दो प्रकार के हैं—स्वर और व्यंजन।  
स्वर वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता नहीं चाहिए। वे तीन प्रकार के होते हैं; ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत।  
ह्रस्व वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में अन्त में अर्धव्यंजन आया करता है।  
दीर्घ वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में अन्त में व्यंजन आया करता है।  
प्लुत वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में अन्त में व्यंजन आया करता है।  
व्यंजन वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता चाहिए। वे दो प्रकार के होते हैं; मूलाक्षर और उपसर्ग।  
मूलाक्षर वे हैं जिनके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता नहीं चाहिए।  
उपसर्ग वे हैं जिनके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता चाहिए।

- अदादि—अद् (P.), अत् (P.), अद् (P.), अत् (P.), अद् (P.)  
 (P.), जाम् (P.), स्वद् (P.), स्त् (P.), विद् (P.)  
 (P.), and इ (P.)  
 आत् (A.), यी (A.), अरि+इ (A.),  
 (c) बुद्ध्यादि—द् (P.) and मी (P.)  
 दा (U.), and म् (U.)  
 (d) दिवादि—दिक् (P.), स्त् (P.), म्भ् (P.), नम् (P.)  
 यम् (P.), भ्रम् (P.)  
 विद् (A.), दुष् (A.), and जन् (A.)  
 (e) रसादि—त् (U.), आत् (P.), and यत् (P.)  
 (f) बुद्ध्यादि—द् (P.), इत् (P.), म्भ् (P.), म्भ् (P.)  
 (A.), विद् (U.) and म्भ् (U.)  
 (g) रसादि—इत् (U.), भुज् (U.) and पुज् (U.)  
 (h) तनादि—तन् (U.), क् (U.)  
 (i) कथादि—मी (U.), म्भ् (U.), झ (U.) and यत् (P.)  
 (j) चुगादि—चुर् (U.), विन् (U.), इत् (U.), म्भ् (U.)

N. B.—P. stands for परस्मैपद, A stands for  
 आत्मनेपद, U. stands for उभेपद ।

9. Prominent causal form ( कृत्स्न )

10. Voice — an elementary knowledge only ( १०१ )

11. Compound — an elementary knowledge only ( १०२ )

12. Krt — an elementary knowledge only ( १०३ )

13. The compound — an elementary knowledge only ( १०४ )



२. दीर्घ स्वर—ये हैं जिनके उच्चारण में द्वयस्व स्वर में दुगुना समय लगे। आ, ई, ऊ, अ, ए, ऐ, औ, औ।

३. प्लुत स्वर—ये हैं जिनके उच्चारण में द्वयस्व स्वर में त्रिगुना समय लगे। प्लुत स्वर लिखने के लिए स्वर के आगे प्रायः ३ का अंक लगा देते हैं। यथा—ओ३म्।

व्यंजन वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में स्वरों को सहायता अपेक्षित होती है।

व्यंजनों के तीन मुख्य भेद हैं—स्पर्श, अन्तस्थ तथा ऊष्म।

क से म तक पहले २५ वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। य्, र्, ल्, व्, अन्तस्थ (अर्धस्वर) तथा श्, प्, स्, ह्, ऊष्म हैं।

स्पर्श पाँच वर्गों में विभक्त हैं, प्रत्येक वर्ग का नाम पहले वर्ण के अनुसार रक्खा गया है—जैसे कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग।

इस तरह कुल व्यंजन संख्या में ३३ हैं। कुल स्वर १३ हैं। ज्, च्, ज्ञ् स्वतन्त्र वर्ण नहीं हैं, अपितु ये दो व्यंजनों के मिलाप में बने हुए संयुक्त अक्षर हैं।

किसी वर्ण के आगे 'कार' जोड़ देने से उमी वर्ण का बोध होता है, जैसे—अकार से 'आ' का, ककार से 'क' का। परन्तु र् कहा जाता है।

### स्थान

वर्ण के उच्चारण के समय जिहा मुख के भीतर जिस प्रदेश को छूता है, उसे वर्ण का स्थान कहते हैं।

ये स्थान छः हैं—फण्ट, तालु, मूर्ग, उष्म ।

भिन्न भिन्न वर्णों के उच्चारण स्थान निम्नलि

१ फण्ट स्थान—अ, आ, कवर्ग, च तथा ङ

( शकुर्दात्मवती तथा फण्ट )

२ तालु स्थान—इ, ई, चवर्ग, व् तथा ञ

( इचुयसानां तालु )

३ मूर्धा स्थान—ऋ, ॠ, टवर्ग, र् तथा ष का मूर्धा स्थान है।

( ऋदुरपाठां मूर्धा )

४ दन्त स्थान—लृ, तवर्ग, ल् तथा स् फा दन्त स्थान है।

( लृतुलसानां दन्ताः )

५ श्रोष्ठ स्थान—उ, ऊ, पवर्ग तथा उपध्मानीय वर्णों का श्रोष्ठ स्थान है। ( उपध्मानीयानामोष्ठी )

'य' 'फ' में पहले जो आधं विसर्ग होते हैं जिनका लिखने में ( ५ ) च्च आकार होता है, उन्हें उपध्मानीय कहते हैं। परन्तु अब इनका प्रयोग प्रायः नहीं होता।

६ नासिका स्थान—अ, म, इ, ए, न् वर्णों का नासिका स्थान भी है ( प्रसङ्गानां नासिका )। अतएव इन्हें अनुनासिक वर्ण भी कहा जाता है। अनुस्वार का भी नासिका ही स्थान है।

ग, ङ का स्थान फल्ल-तालु है। इसी प्रकार ओ, औ का स्थान फल्ल-श्रोष्ठ है। ष का स्थान दन्त-श्रोष्ठ है।

### प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण में जिहा का जो व्यापार अपेक्षित है, उसे प्रयत्न कहते हैं।

यह दो प्रकार का है—आभ्यन्तर तथा बाह्य।

आभ्यन्तर प्रयत्न—पाँच प्रकार के हैं—

१ मृष्ट—वर्ग ( ष् में व तथा ) वर्णों का।

२ इंपवृष्ट—घन्ताय वर्णों ( इ, ए, लृ, ए ) का।

३ विद्वत—स्वरो का।

४ ईष्वविद्वत—उच्च ( इ, ए, म, ए ) वर्णों का।

५ मज्ज—इस अक्षर का। परन्तु उच्चारण के प्रयोग में अन्य वर्णों के साथ व्यापार का भा विद्वत है।



२. दीर्घ स्वर—ये हैं जिनके उच्चारण में द्रव्य स्वर से दुगुना समय लगे। आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

३. प्लुत स्वर—ये हैं जिनके उच्चारण में द्रव्य स्वर में त्रिगुना समय लगे। प्लुत स्वर लिखने के लिए स्वर के आगे प्रायः ३ का अंक लगा देते हैं। यथा—ओ३म्।

व्यंजन वर्ण ये हैं जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता अपेक्षित होती है।

व्यंजनों के तीन मुख्य भेद हैं—स्पर्श, अन्तस्थ तथा ऊष्म।

कं मं मू तक पहले २५ वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। य्, र्, ल्, प्, अन्तस्थ ( अर्धस्वर ) तथा श्, प्, स्, ह्, ऊष्म हैं।

स्पर्श पाँच वर्णों में विभक्त है, प्रत्येक वर्ण का नाम पहले वर्ण के अनुसार रक्खा गया है—जैसे कवर्ण, चवर्ण, टवर्ण, तवर्ण और पवर्ण।

इस तरह कुल व्यंजन संख्या में ३३ हैं। कुल स्वर १३ हैं। च्, श्, ष्, म् स्वनन्व वर्ण नहीं हैं, अपितु ये दो व्यंजनों के मिलाप में बने हुए संयुक्त अक्षर हैं।

हिमां वर्ण के आगे 'कार' जोड़ देने में उमी वर्ण का बोध होता है, जैसे—अकार में 'अ' का, ककार में 'क' का। परन्तु र् को रेफ भी कहा जाता है।

### स्थान

वर्णों के उच्चारण के समय जिह्वा मुख के भीतर के कण्ठ आदि विभिन्न प्रदेशों को छूती है, उसे वर्ण का स्थान कहते हैं।

ये स्थान छः हैं—कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, श्रोत्र और नासिका।

विभिन्न विभिन्न वर्णों के उच्चारण-स्थान निम्नलिखित हैं—

१ कण्ठ स्थान—अ आ कवर्ण ङ तथा विमर्ग का कण्ठ स्थान है। ( अक्षुर्ध्वजवर्णों का नाम कण्ठ )

२ तालु स्थान—इ ई ववर्ण ञ तथा श् का तालु स्थान है।

(इतुपदानां वान्)

३ नृषां स्थान—रु, ऊ, टवर्ग, र् तथा ष का नृषां स्थान है।

(शुद्धागदां नृषां)

४ वृन् स्थान—रु, नवर्ग, ल् तथा न् का वृन् स्थान है।

(नृन्वदानां वनाः)

५ श्रोत्र स्थान—उ, ऊ, षवर्ग तथा उच्चारण वलों का श्रोत्र स्थान है। (उच्चारणानामोच्चारणौ)

यं ष में पते जो श्राव्य विभक्त होते हैं विदिका लिखने में ( ) यह आकार होता है, उन्हें उच्चारण कहते हैं। परन्तु अब इसका प्रयोग प्रायः नहीं होता।

६ नासिका स्थान—इ, ई, ऊ, ए, व वलों का नासिका स्थान भी है (उच्चारणानां नासिकाः)। अतएव इन्हें अनुनासिक वरुं भी कहा जाता है। अनुस्वार का भी नासिका ही स्थान है।

रु में क स्थान ऊठ-नरु है। इसी प्रकार ओ, औ का स्थान ऊठ-ओठ है। व् का स्थान वृन्-ओठ है।

### प्रयत्न

वरुं के उच्चारण में विदिका का जो व्यापार अपेक्षित है, उसे प्रयत्न कहते हैं।

यह दो प्रकार का है—आन्तर तथा बाह्य।

आन्तर प्रयत्न—तीन प्रकार के हैं—

१ लृप्त—स्वरां ( रुं, एं, वं ) वरुं का।

२ ईषलृप्त—अन्तर वरुं ( रु, ए, इ, व् ) का।

३ विकृत—स्वरां का।

४ ईषद्विकृत—अन्त ( रु, ए, इ, व् ) वरुं का।

५ संज्ञा—इव अक्षर का। परन्तु उच्चारण के प्रयोग में अन्य

स्वरां के मध्य अक्षर क संज्ञित है।

षाह्य प्रयत्न—११ प्रकार के हैं। परन्तु मुख्य भेद दो ही हैं घोष, अघोष।

१ घोष—प्रत्येक वर्ग का तामरा, चौया और पाँचवाँ वर्ण, मस्वर. य् . र् , ल् . य् और ह् घोष वर्ण हैं।

२ अघोष—वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण, श् , प् , स् अघोष वर्ण हैं।

एक ही स्थान तथा प्रयत्न वाले वर्ण सवर्ण कहाते हैं, जैसे—अ और आ परस्पर सवर्ण हैं। इसी प्रकार इ, ई और उ, ऊ आदि को भी समझना चाहिए। परन्तु इ और उ असवर्ण हैं क्योंकि दोनों के स्थान भिन्न भिन्न हैं।

### अभ्यास

१ व्याकरण का लक्षण लिखो।

२ स्वर कितने प्रकार के हैं ? अनुस्वार तथा विसर्ग स्वर हैं या व्यञ्जन !

३ तालुस्थान से बोले जाने वाले कौन से वर्ण हैं ?

४ आभ्यन्तर प्रयत्न कितने प्रकार के हैं ? उनके नाम लिखो।

## द्वितीय अध्याय

### सन्धि-प्रकरण

कहाँ कहीं दो वर्णों के आस-पास आने पर उनमें कुछ विकार (रूप-परिवर्तन) हो जाता है। इस विकार को सन्धि कहते हैं।

सन्धि तीन प्रकार की है—स्वर-सन्धि, व्यञ्जन-सन्धि और विसर्ग-सन्धि।

१ स्वर-सन्धि—स्वर के साथ स्वर के मेल का स्वर-सन्धि कहते हैं, यथा—हिम + शालय = हिमालय।

२ व्यंजन-सन्धि—व्यंजन के परे स्वर या व्यंजन के आने से व्यंजन में जो विकार होता है उसे व्यंजन-सन्धि कहते हैं। यथा—  
जगन् + नाथ = जगन्नाथ ।

३ विसर्ग-सन्धि—विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं। यथा—निः + फल = निष्फल ।

### स्वर ( अच् )— सन्धि

१ दीर्घ-सन्धि—यदि द्वन्द्व या दीर्घ अ. इ. उ अथवा ऋ ने परे इनका कोई सवर्ण स्वर हो तो दोनों के बदले सवर्ण दीर्घ स्वर हो जाता है। ( अकः सवर्णो दीर्घः ) यथा—

दिन + आलयः = दिनालयः । विद्या + अभ्यासः = विद्याभ्यासः ।  
रवि + इन्द्रः = रविन्द्रः । लक्ष्मी + ईशः = लक्ष्मीशः ।  
गुरु + उपदेशः = गुरुपदेशः । यशु + ज्ञानधः = यशुज्ञानधः ।  
पितृ + शरणम् = पितृशरणम् ।

२ गुणसन्धि—अ या ऋ के बाद इ या ई हो तो दोनों को मिलकर ए; उ या ऊ हो तो दोनों को मिलकर ओ; ऋ हो तो दोनों को मिलकर ऌ हो जाता है ( आइगुणः ) । यथा—

देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः । नदी + इन्द्रः = नदीन्द्रः ।  
दिव + उपदेशः = दिवउपदेशः । नदी + उपसर्गः = नदीउपसर्गः ।  
नदी + शरणम् = नदीशरणम् । नदी + शरणम् = नदीशरणम् ।

३ इ उ म न स—अ या ऋ के बाद ए या ई हो तो दोनों के बदले ए; उ या ऊ हो तो दोनों को मिलकर ओ; ऋ हो तो दोनों को मिलकर ऌ हो जाता है। ( इउमनस ) । यथा—

एव + इन्द्रः = एवेन्द्रः । नदी + इन्द्रः = नदीन्द्रः ।  
दिव + उपदेशः = दिवउपदेशः । नदी + उपसर्गः = नदीउपसर्गः ।  
नदी + शरणम् = नदीशरणम् । नदी + शरणम् = नदीशरणम् ।

४ यण् मन्धि—इत्य या हीर्षं इ. उ. श्र और लृ के बाद यदि कोई असवर्ण स्वर हो तो इ. उ. श्र और लृ के स्थान पर क्रमशः य् ष् र् ल् हो जाते हैं । (इको यणचि) यथा—

यदि + अपि = यद्यपि ।      अपि + ण्यप् = अप्येद्यम् ।

सु + आगतम् = स्वागतम् ।      अनु + एषणम् = अन्येषणम् ।

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा ।      गुरु + आदेशः = गुरोर्देशः ।

५ अयादिमन्धि—अ, ऌ, ओ और औ को किसी स्वर के परे होने पर क्रमशः अय्, थाय्, अय्, थाय् हो जाते हैं । ( ण्योऽयवायावः ) यथा—

ने + अति + नयति ।      भो + अन्तम् = भवनम् ।

ने + अकः = नायकः ।      पौ + अकः = पावकः ।

६ पूर्वरूपमन्धि—पद के अन्त के एकार, ओकार के बाद यदि अकार आवे तो उसका लोप हो जाता है । मन्धि दिग्गने के लिए लुप्त अकार के स्थान पर ( ऽ ) ण्मा चिह्न लगा दिया जाता है । (ण्डः पञ्जान्तादिति) यथा—

कवे + अवेहि = कवेऽवेहि । प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण ।

७. प्रकृतिभावमन्धि—(क) द्विवचनान्त पद के ई, ऊ, ऌ के बाद किसी स्वर के रहने पर परस्पर मन्धि नहीं होता । ( ईददेद् द्विवचन प्रगृह्यम् )

कयो + इमौ = कयो इमौ ।

माधु + अत्र = माधु अत्र ।

लने + इमे = लने इमे ।

( ख ) लुप्त स्वर को मन्धि नहीं होता । यथा—नामः आगच्छ

( ग ) अस्म शब्द के प ने परे ई क का मन्धि नहीं होता

अमो अय्या । ये गेहे । यम अमको । । हो गच्छ

८ पररूप मन्धि—कुछ शब्दों में अ क बाद ण् या होने पर दोनों को मिला कर क्रमशः ण् ओ हो रहता है । ( ण् ण् पररूपम् ) यथा—

प + ण्वन = प्वन

विन्द + ओष्ठी = विन्दोष्ठी ।

हल् ( व्यञ्जन ) सन्धि

१. सकार वा तवर्ग के पहले या पोंछे शकार वा चवर्ग हो तो स् को श् और तवर्ग को क्रमशः चवर्ग हो जाता है । ( स्तोः श्चुना श्चुः )

हरिस् + शेते = हरिश्शेते । रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति ।

सत् + चिन् = सच्चिन् । तद् + जयः = तज्जयः । यज्ञ् + नः = यज्ञः ।

शकार से परे तवर्ग को चवर्ग नहीं होता । प्रश् + नः = प्रश्नः ।

२. सकार वा तवर्ग के पहले या पोंछे पकार वा टवर्ग हो तो सकार को पकार और तवर्ग को क्रमशः टवर्ग हो जाता है । ( धुना धुः )

कृष्णस् + पट्टः = कृष्णप्पट्टः । धनुस् + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः ।

भवन् + टीका = भवट्टीका । इप् + तः = इष्टः ।

३. तवर्ग के परे ल् हो तो तवर्ग का ल् हो जाता है । न को अनुनासिक ल् होता है । ( तोर्ल )

विद्युन् + लता = विद्युल्लता । भवान् + लिखति + भवाल् लिखति ।

४. वर्ग के पहले, दूसरे और चौथे अक्षर को पदान्त में वर्ग का चौसरा अक्षर हो जाता है । ( मलां जशोऽन्ते )

वाक् + ईशः = वागीशः । अच् + अन्तः = अजन्तः ।

परिब्राट् + अयम् = परिब्राडयम् । जगन् + ईशः = जगदीशः ।

५. वर्ग के पहले दूसरे और चौथे अक्षर को वर्ग का चौथा या तामरा अक्षर परे होने पर वर्ग का तामरा अक्षर हो जाता है । ( मलां जश भणि )

कृध् - धः = कृद्धः । लम् + धुम् = लब्धुम् ।

६. वर्ग के चौथे तामरा और दूसरे अक्षर से वर्ग का पहला या दूसरा अक्षर अथवा श ष स् परे होने पर वर्ग का पहला अक्षर हो जाता है । ( मलां जश भणि )

कृध् - धः = कृद्धः । अच् - ति = अच्ति = अच्ति - मु = अच्तिमु

७. वर्ग के प्रथम चार वर्णों के परे ह् को विकल्प से उम वर्ग का चौथा अक्षर हो जाता है ।

वाक् + हरि = वाग्हरिः ( नियम ४ के अनुसार ) या वाग्हरिः ।

तन् + हितम् = तद्दहितम् ( नियम ४ के अनुसार ) या तद्दितम् ।

८. वर्ग के पदान्त प्रथम चार वर्णों के परे यदि श् हो और श् के बाद यदि कोई स्वर या ह्, य, र, व, ल में से कोई अक्षर हो तो श् को विकल्प से छ हो तो जाता है । ( शरद्वोऽटि )

तन् + भ्रुवा = तन्भ्रुवा ( नियम १ से ) या तन्भ्रुत्वा ।

९. छ् से पहले कोई ह्रस्व स्वर हो तो छ् से पहले च् लगाया जाता है, पर यदि छ् से पहले पदान्त दीर्घ स्वर हो तो छ् से पहले च् विकल्प से लगाया है ।

वृत् + धाया = वृत्तधाया ।

लक्ष्मी + धाया = लक्ष्मीच्छाया या लक्ष्मीधाया ।

१०. पदान्त वर्ग अक्षर ( क् से म तक ) तथा य, व, ल, को अनुनासिक अक्षर परे होने पर विकल्प से मधुर् अनुनासिक अक्षर होता है । ( यरेऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ) ।

दिक् + नाग = दिक् नाग या दिङ् नाग ।

पट् + माम्सा = पट्टमाम्सा या पट्टमाम्सा ।

जगन् + नाथ = जगद्नाथ या जगन्नाथ ।

परन्तु प्रत्यय का अनुनासिक अक्षर पर होने पर अनुनासिक अक्षर नासिक हो जाता है ।

किन् + मन्त्र = किन्मन्त्र

वक् + मन्त्र = वक्मन्त्र ।

अप + मन्त्र = अपमन्त्र

११. पदान्त य् के परे यदि कोई स्वर हो तो य् को विकल्प से च् लगाया जाता है । ( मोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ) ।

परन्तु लघाट् और साम्राज्य में म् को अनुस्वार नहीं होता ।

१२. अपदान्त न और म् को वर्गों के चौथे, तीसरे, दूसरे, और पहले अक्षर या श् . प् . स् . ह् परे होने पर अनुस्वार हो जाता है ।

यशान् + ति = यशांति ।

आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते ।

१३. अपदान्त अनुस्वार से परे यदि किसी वर्ग का कोई अक्षर प्रथवा य् , ल् , व् : में से कोई अक्षर हो तो अनुस्वार को उस अक्षर का सवर्ण अनुनासिक हो जाता है । यदि अनुस्वार पदान्त हो तो अनुनासिक विकल्प से होता है । ( अनुस्वारस्य यदि परसवर्णः )

( अपदान्त ) अन् + कितः = अं + कितः = अङ्कितः ।

कुन् + ठितः = कुं + ठितः = कुण्ठितः ।

शाम् + तः = शां + तः = शान्तः ।

( पदान्त ) त्वम् + करोषि = त्वं + करोषि = त्वङ्करोषि या त्वं करोषि ।

पूर्वम् + तावन् = पूर्वं + तावन् = पूर्वन्तावन् या पूर्वं तावन् ।

फलम् + चिनोति = फलं + चिनोति = फलञ्चिनोति या फलं चिनोति ।

१४. यदि पदान्त न् से परे च् . छ् . ट् . ठ् . त् और थ् में से कोई अक्षर हो और उनके बाद यदि कोई स्वर, ह् . य् . व् . र् . ल्, या किसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो तो न् को अनुस्वार और स् हो जाता है । ( नश्छव्य प्रशान् )

कस्मिन् - चिन् = कस्मिन् - चिन् = कस्मिन्चिन् ।

अस्मिन् = नडागे = अस्मिन्डागे ।

१५. पदान्त ड् . ण् न के पहले यदि ह्रस्व स्वर हो और परे भी कोई स्वर हो तो ड् . ण् न को द्विव्य हो जाता है ।

द्व्यङ् + आत्मा = द्व्यङ् आत्मा

मुगण् + देशः = मुगण्देशः ।

एकस्मिन् + अहति = एकस्मिन्नहति



१६. पदान्त स् को रु ( र् ) हो जाता है ।

रात्रिस् + गमिष्यति = रात्रिर्गमिष्यति ।

१७. पदान्त र् से परे यदि वर्गों के पहले, दूसरे अक्षर या रा, य, म में से कोई अक्षर हो अथवा कुञ्ज भां न हो तो र् को विभक्त हो जाता है ।

रामम् + कथयति = रामर् + कथयति = रामः कथयति ।

हरिस् = हरिर् = हरिः ।

१८. र् से परे यदि र् हो तो पूर्व र् का लोप हो जाता है और उमसे पूर्व यदि घ, इ या उ में से कोई स्वर हो तो यह दीर्घ हो जाता है ।

निर + रग्म् = निरसम् ।          निर + रोगः = नीरोगः ।

१९. पदान्त रु ( र् ) से पूर्व यदि ह्रस्व अक्षर हो और पाँच ह्रस्व अक्षर, ह, य, र, ल, अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें अक्षरों में से कोई अक्षर हो तो रु ( र् ) को उ हो जाता है ।

नरम् + यति = नरर् + यति = नर उ + यति = नरो यति ।

मनम् + रथः = मनर् + रथः = मन उ + रथः = मनोरथः ।

२०. पदान्त रु ( र् ) से पहले यदि ह्रस्व अ हो और पाँच ह्रस्व अ को छोड़ कर कोई और स्वर हो, या रु ( र् ) से पहले आ हो और पाँच कोई स्वर ह, य, य, र, ल या वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें अक्षरों में से कोई अक्षर हो तो रु ( र् ) के स्थान पर य होना है और ह्रस्व य का लोप हो जाता है ।

दमनकम् + आह = दमनकर् + आह = दमनक्य + आह  
= दमनक आह ।

देवाम् + इह = देवार + इह = देवाय + इह = देवा इह ।

इति नियम से य का लोप होने के बाद फिर मन्थि नहीं जाती, इसलिये 'दमनक आह' में अथ मात्र के पहले नियम के अनुसार 'देवाम्' के स्थान पर 'देवा' नहीं है ।

### विसर्ग-सन्धि

(१) चवर्ग, टवर्ग और तवर्ग के पहले या दूसरे अक्षर के परे होने पर विसर्ग को स् हो जाता है। ( विसर्जनीयस्य सः )

विष्णुः + प्राता = विष्णुप्राता ।

[ पूरी प्रक्रिया इस प्रकार होगी—विष्णुस् + प्राता = विष्णुर् + प्राता ( व्यञ्जन सन्धि के नियम १६ के अनुसार ) = विष्णुः + प्राता [ व्यञ्जन सन्धि के नियम १७ के अनुसार ] = विष्णुप्राता ।

( २ ) श्, प्, स् परे होने पर विसर्ग को श्, प्, न् विसन्धि से होते हैं। हरिः + शतं = हरिः शतं या हरिशतं । मनस् + पठम् = मनः पठम् या मनप्पठम् ।

( ३ ) प्रत्यय-सम्बन्धों विसर्ग से भिन्न विसर्ग से पूर्व यदि ह्रस्व इ या उ हो और यदि यदि चवर्ग या पवर्ग हो तो विसर्ग को स् हो जाता है ।

आधिः + कृतम् = आविष्टकृतम् ।

( ४ ) विसर्ग से पूर्व यदि अ हो और परे अ या यों के तांमरे, वांमरे और पांमरे पर्यं तथा च, व, र, ल, ह हो तो विसर्ग को उ हो जाता है । ( ननदुयो नः—अतो संस्पृताऽनुते—रति च ) यथा—

नृपः + अयश्च = नृपोऽयश्च ।

रामः + गच्छति = रामो गच्छति ।

मृगः + धावति = मृगो धावति ।

रामः + वदति = रामो वदति ।

( ५ ) सः और एषः के विसर्ग वा लोप हो जाता है, यदि परे अ भिन्न वांमरे पर्यं हो । ( एतदशोः सुतोरोऽशोरनम् नमामे हलि ) यथा—

सः + देवः = स देवः ।

एषः + शरः = एष शरः ।

सः + श्चिः = स श्चिः ।

(६) विभक्तियों में पूर्व यदि अ हो और पर अ भिन्न कोई स्वर हो तो विभक्तियों का लोप हो जाता है। (भो भगो अगो अर्धस्य वांङ्शि) यथा—

कः + इन्द्रति = क इन्द्रति ।

नृपः + उवाच = नृप उवाच ।

अतः + एव = अत एव ।

(७) र् से र् परे होने पर पूर्व र् का लोप हो जाता है और लुप्त स्वर से पूर्व द्वय स्वर दोष्य हो जाता है। ( रोरि—इच्छोने पूर्वस्य दोषोऽप्यः ) यथा—

निर् + रोगः = नीरोगः ।

पुनर् + रमते = पुना रमते

एत्व-पत्व विधान

१. एत्वविधान—न के पहले यदि एक हो पद में अ, इ, ए, उ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ओ, आ, इ, य, व, र्, ल् में से कोई एक स्वर हो तो न् को ए हो जाता है। स्वर, कर्म, पदार्थ इ, य, अनुस्वार के बीच में रहते हुए भी न् को ए हो जाता है।

विमृशाम्, विस्तीर्णः, पूष्णः, रामेण ।

परन्तु पदान्त न् को ए नहीं होता ।

रामान्, पितॄन् ।

२. पत्वविधान—स् से पूर्व यदि अ, आ, इ, ए, उ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ओ, आ, इ, य, व, र्, ल् में से कोई एक स्वर हो तो स् को प हा जाता है। अनुस्वार, विभक्तियों अथवा श् प, भो स् को प हा जाता है ।

हरिपु, भानुपु, कर्तृपु नरपु गापु  
हविःपु, हवीर्षि ।

अभ्यास

\* लोप होने के कारण है / उमर / जाने

२. यस्मिन्वि तथा पूर्वरूपसंधि के लक्षण उदाहरण-महित नष्ट करो ।

३. इन में सन्धि करो तथा निपम भी समजाओ—

विद्या + अर्थी, नर + इन्द्रः तथा + एव, नदी + उदकम्, भो + अति,  
सर्वे + अग्नि, भानू + उदयतः, कपी + एतौ उव् + चारचन्, नत् + टीका  
उव् + लङ्घनम्, सत् + आचारः, उव् + सरणम्, वाक् + माधुर्यम् इहम् +  
गच्छ, सम + इननम्, परपन् + आगच्छ, हत् + शोकः, गन्ध - छनम्  
निष् + चरः, यज् + नः, । एकः + चन्द्रः, बालः + श्रयन्, नरः +  
आयाति, जनाः + म्रियन्ते, निर् + खम् । वृत् + नान्, पुष् - नाति  
चवृ + मु ।

४. सन्धिच्छेद करो—

गुरुप्रकारः, राजर्षिः, तवीदार्यम्, मन्वानय, गावकः, कोऽपि, नक्षिदानन्दः  
उल्लासः, दिग्भ्रान्तिः, दिग्गस्ती, तन्मयम्, मातरं वन्दे, धावन्नो  
उच्छ्वातः, दुश्चरित्रम्, शिवो वन्द्यः, मन इदम्, वृषा दडति, शिशुर्हर्षा  
निरग्रहम्, भानू राजते, निष्कलहः ।

५. शुद्ध करो—गिरिशः, पत्न्यकारण, श्रयो व, उपरोत्, श्रुष्येती, सन्ना  
स्नुत्तम्, मनोकामना, लतापु, वाग्मापन्, फलेष, बहिष्कृतिः, निरोधः, कुञ्ज  
सन्मानम्, वशिष्ठोऽचार्यः ।

## तृतीय अध्याय

### नाम प्रकरण

शब्दों को मुख्यतया तीन भागों में बाँटा जा सकता है—१ नाम  
सुबन्त = क्रिया या तिङन्त = अव्यय

नाम में नन्ना ( No n ) सर्वनाम Pronoun । अन्य विशेष  
( Adjective ) सम्बन्धित है ।



युक्त हुआ है या दो के लिए अथवा दो में भी अधिक के लिए से वचन रहते हैं।

संस्कृत भाषा में तीन वचन हैं। अंग्रेजी या हिन्दी में द्विवचन का प्रयोग नहीं होता, परन्तु संस्कृत में होता है:—

संस्कृत	अंग्रेजी
१. एकवचन	...Singular Number
२. द्विवचन	...Dual Number
३. बहुवचन	...Plural Number

एक व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के बोध के लिए एकवचन प्रयुक्त होता है। यथा—मः, त्वम्, अहम्, पुस्तकम्, देशः इत्यादि।

दो व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों आदि के बोध के लिए द्विवचन प्रयुक्त होता है। यथा—वौ, युवान्, आवाम्, पुस्तके, देशौ इत्यादि।

दो से अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों आदि के बोध के लिए बहुवचन प्रयुक्त होता है। यथा—ते, यूयम्, वयम्, पुस्तकानि, देशाः इत्यादि।

संस्कृत में कई शब्द निम्न द्विवचान्त प्रयुक्त होते हैं। उनका प्रयोग अन्य वचनों में नहीं किया जाता। ऐसे कुछ शब्द नीचे दिये जाते हैं—

दम्बानि (दम्बानां) = पति पत्नी।

अश्विन (अश्विनां = ) दो अश्विनाकुमार

द्वि (द्वौ) = दो

इन्हीं प्रकार कुछ शब्द निम्न बहुवचनान्त प्रयुक्त होते हैं। ऐसे कुछ शब्द नीचे दिये जाते हैं—

वयं वयसः = पत्नी

अप अप = बल।

प्राण प्राणा = प्राण

सुनतन सुनतनः = पुत्र

वया वयसः = वयसः

अजान अजानः = अजानः।

इसी प्रकार त्रि, चतुर, पञ्चन, षष्प, इत्यादि बहुसंख्यावाची शब्दों में भी बहुवचनान्त ही रहते हैं। एक शब्द 'एक' (One) के अर्थ एकवचनान्त रहता है, परन्तु कई (Some) के अर्थ में बहुवचनान्त प्रयुक्त होता है, यथा 'एकें बदन्ति' इत्यादि।

## चतुर्थ अध्याय

### कारक-प्रकरण (CASES)

क्रिया को सिद्धि के लिए जो निमित्त बनते हैं, उन्हें कारक कहते हैं अथवा क्रिया के उत्पन्न करने वाले को कारक कहा जाता है।

कारक छः हैं। वैयाकरण लोग मन्वन्ध को कारक नहीं माने क्योंकि मन्वन्ध का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं होता, परन्तु उममे केवल नाम शब्दों का मन्वन्धमात्र प्रकृत होता है। इन कारकों को सूचित करने के लिए संस्कृत में भिन्न भिन्न विभक्तियाँ होती हैं। विभक्तियाँ सहाई हैं। कारकों और विभक्तियों का विवरण आगे दिया जाता है—

कारक	विभक्ति
१. कर्ता	प्रथमा (Nom nat ve)
२. कर्म	द्वितीया (Acc. nat ve)
३. करण	तृतीया (In str mental)
४. सम्प्रदान	चतुर्थी (Dat ve)
५. अपादान	पंचमा (Ablat ve)
६. मन्वन्ध	षष्ठी (Gen & ve)
७. अधिकरण	सप्तमा (Inst ve)

१ कर्ता—क्रिया का करने वाले का कर्ता कहते हैं। कर्ता में (कर्ता)

२ कर्म—क्रिया का करने वाला होता है। कर्म—





वृत्तान् फलं पतति = वृत्त में फल गिरता है ।

सिंहान् विभेति = शेर में डरता है ।

पापान् जुगुम्सते = पाप में घृणा करता है ।

स्वशुरान् लज्जते = स्वशुर में लज्जा करता है ।

दुग्धान् घृतं भवति = दूध में घी होता है ।

गुरोः विद्यां पठति = गुरु में विद्या पढ़ता है ।

६. पष्ठो—दो नाम शब्दों का परस्पर सम्बन्ध प्रकट करने के लिये पष्ठो विभक्ति का प्रयोग होता है । यथा—

रामस्य गृहम् = राम का घर ।

मम पुस्तकम् = मेरी पुस्तक ।

कूपस्य जलम् = कुएँ का पानी ।

७. अधिकरण—क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं । इस अर्थ में मत्प्रमा विभक्ति का प्रयोग होता है । यथा—

वने सिंहः गर्जति = वन में शेर गर्जता है ।

वृक्षे स्वगाः वसन्ति = वृक्ष पर पक्षी रहते हैं ।

### अभ्यास

बड़े टावर में छपे हुए पदों के कारक समझाते हुए निम्नलिखित श्लोक का अर्थ हिन्दी में अर्थ करो

(क) धर्मः सर्वभूतान्तरात्पुण्येण धर्मो दुःखः विन्यते ।

धर्मोऽस्य गमन्यते शिष्यस्य, धर्माय नमो नमः ।

धर्मान्ताम्यपरः भुङ्क्ते भवन्ती यमो हि द्वन्द्वं मता,

धर्मो नितमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मी वालव ॥

(ख) मन्यं वेदेषु जगति, कलं मन्यं ॥ श्रुतम् ।

मन्यान् धर्मो दमस्त्वेव, मय मन्यं प्रतिदिनम्

(ग) यस्मिन् प्रवृत्ति शीघ्रिण २६. १०२१ नीरु

काकोद्भिः किं न क्लृप्ते, चञ्च्वा त्योदत्पूरणम् ॥

(घ) चलं चित्तं चलं चित्तं चले जीवित-यौवने ।

चलाचलानिदं सर्वं, कर्तिर्यत्य न जीवति ॥

(ङ) आत्मार्यं जीवलोकेऽस्मिन्, को न जीवति मानवः

परं परोनकारार्थं यो जीवति न जीवति ॥

## पञ्चम अध्याय

### शब्द-रूपावली

संस्कृत में प्रयुक्त होने वाले नाम शब्द दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं—अजन्त (स्वरान्त) तथा हलन्त (व्यञ्जनान्त) । निम्न भिन्न विभक्तियों और वचनों में इनके रूप-परिवर्तन होते नमय निम्नलिखित विभक्ति-प्रत्यय इनके साथ लगते हैं ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा और सन्बोधन	सु	औ	जन्
द्वितीया	अम्	औट्	शम्
तृतीया	दा	भ्याम्	भिन्
चतुर्थी	हे	भ्यान्	भ्यम्
पञ्चमी	इति	भ्यान्	भ्यम्
षष्ठी	इन्	आन्	आन्
सप्तमी	इि	आन्	ान्

ये विभक्तियाँ 'सु' से शुरु होती हैं और 'प' पर समाप्त होती हैं ।  
 इस लिए उनके आदि और अन्त के अन्तर लेकर इन्हें 'सुप्' कहते हैं ।  
 इस प्रकार क्रिया में जो प्रत्यय लगते हैं इन्हें 'विङ्' कहते हैं ।  
 'इन्' वगैरे आगे आया । 'सुप्' और 'विङ्' प्रत्यय जिन

अन्त में लगें हों, उसे पद कहते हैं। ऊपर विभक्ति-प्रत्ययों के जो द्वियं हैं वे प्रारम्भिक हैं, परन्तु भिन्न भिन्न शब्दों के आगे लगने पर भिन्न-भिन्न परिवर्तन हो जाते हैं जो विद्यार्थियों के लिए दुर्बोध हैं। 'लिङ्ग' रूपों का स्मरण करना ही सुगम है। अतः भिन्न-भिन्न लिङ्ग कृत् शब्दों द्वारा अजन्त और हलन्त शब्दों के रूप भेद विभक्तियों बचानों में आगे दिख जाते हैं।

### अजन्त पुल्लिङ्ग

अजागन्त नर (आदर्श) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नर	नरौ	नराः
द्वितीया	नरम्	"	नरान्
तृतीया	नरेण	नराभ्याम्	नरैः
चतुर्थी	नराय	"	नरैभ्यः
पंचम्या	नरात्	"	नरैभ्यः
षष्ठी	नराय	नरयोः	नराणाम्
सप्तमा	नर	"	नरैषु
अष्टम्या	नर	हे नरी	हे नराः

शब्द 'मत्स्य' अजागन्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'नर' शब्द की तरह होते हैं। 'मत्स्य' के एकवचन और चतुर्थी के बहुवचन में शब्द विधान 'नर' = 'नरम्' के अनुगार 'न' का 'ण' दाहक 'नराय' और 'नराणाम्' बनते हैं। उदा. 'यम नियम में न को 'ण' नहीं होगा वहाँ 'मत्स्य'। 'अजागन्तान्' का ही रूप होगा। कुछ प्रमुख अजागन्त पुल्लिङ्ग शब्द के द्वियं आगे हैं—

नर	नरा	नरौ	नराः
नरम्	नरम्	नरौ	नराः
नरेण	नरेण	नराभ्याम्	नरैः

शब्द-रूपायली

मन्त्र = वनन्त्र  
शब्द = शब्द  
ल = समय  
न = नाग्य  
ल = यिला  
= गांवा  
= वगुला  
= हाय  
= दया भाई  
पादल  
मूर्ध  
= शिपर  
न  
नता

श्रींश = शनमां  
मान = गांवि  
कलठ = गला  
मूर्ध = मूर्ध  
मृषत्र = मृषत्र  
मय = मौर  
मं = मं  
वाल = वालक  
अनुज = छोटा भाई  
पुत्र = पुत्र  
पत्न = पत्नया  
मग = हरिण  
अर्थ = धन  
पापाणु = पत्थर

शब्द = शब्द  
दात्र = विद्यार्थी  
केग = बाल  
अनिल = हवा  
घायन = धीरा  
पिक = घोषल  
कपोत = कपोत  
जनक = पिता  
आशिया = आशिया  
धौर = धौर  
अमल = अमि  
शिक्षण = पढाने वाला  
नागर = नगर  
विश्वरूप = पर्वत

२५

पाद आदि शब्दों के जो-जो रूप होते हैं। उनमें से एक रूप  
जो होता है और हमारा जगते भिन्न।

इशारात्मक संज्ञिका मुनि शब्द

एक  
मुनि  
मुनि  
मुनि

दि  
मुनि  
मुनि

एक  
मुनि  
मुनि  
मुनि



नोट—भूपति (राजा), नृपति (राजा) आदि शब्दों के रूप पति शब्द का तरह नहीं होते, अपितु मुनि शब्द का तरह होते हैं।  
इकारान्त पुल्लिङ्ग सुबो ( बुद्धिमान ) शब्द

प्रथमा	सुबोः	सुबोर्यौ	सुबिदः
द्वितीया	सुबियम्	सुबियौ	सुबियः
तृतीया	सुबिया	सुबोभ्याम्	सुबोभिः
चतुर्थी	सुबिबे	"	सुबोभ्यः
पञ्चमी	सुबियः	"	सुबोभ्यः
षष्ठी	सुबिदः	सुबियोः	सुबियान्
सप्तमी	सुबिधि	"	सुबिधु
अष्टमी	हे सुबोः	हे सुबोर्यौ	हे सुबिदः

इकारान्त पुल्लिङ्ग नाधु ( नञ्जन ) शब्द

प्रथमा	नाधुः	नाधू	नाधवः
द्वितीया	नाधुम्	"	नाधून्
तृतीया	नाधुना	नाधुभ्याम्	नाधुभिः
चतुर्थी	नाधवे	"	नाधुभ्यः
पञ्चमी	नाधोः	"	"
षष्ठी	नाधोः	नाधोः	नाधूनाम्
सप्तमी	नाधौ	"	नाधुधु
अष्टमी	हे नाधो	हे नाधू	हे नाधवः

नाधु शब्द के रूपों के तरह निम्नलिखित इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों

नाधु = नाधुः

नाधु = नाधुम्

नाधु = नाधुना

नाधु = नाधवे

नाधु = नाधोः

नाधु = नाधू

नाधु = नाधून्

नाधु = नाधुभिः

नाधु = नाधुभ्यः

नाधु = नाधूनाम्

वायु = हवा  
 शत्रु = दुरमन  
 शिशु = बच्चा

त० = २४  
 शिशु = दुरमन  
 शिशु = चन्द्रमा

शुकारान्त पुँल्लिङ्ग पिठ ( पिता ) शब्द

प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्		पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	..	पितृभ्यः
पञ्चमा	पितुः		..
षष्ठा		पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमा	पितरि	पित्रोः	पितॄन्
अष्टमोऽन्त	हं पितॄन्	हे पितरौ	हं पितरः

इसी प्रकार भाट ( भाई ) जामाट ( मामाद ) आदि शब्दों के रूप होंगे ।

शुकारान्त पुँल्लिङ्ग शत्रु ( शत्रु ) शब्द

प्रथमा	शत्रु	शत्रुरौ	शत्रवः
द्वितीया	शत्रुम्		शत्रून्
तृतीया	शत्रु	शत्रुभ्याम्	शत्रुभिः
चतुर्थी	शत्रु		शत्रुभ्यः
पञ्चमा	शत्रु		
षष्ठा	शत्रु	शत्रोः	शत्रूणाम्
सप्तमा	शत्रु		शत्रून्

वक्त्र = बोलने वाला श्रोत्र = सुनने वाला गन्त्र = जाने वाला  
 होत्र = हवन करने वाला सवितृ = सूर्य जनयितृ = पैदा करने वाला

ऐकारान्त पुल्लिङ्ग रे ( धन ) शब्द

प्रथमा	राः	रायौः	रायः
द्वितीया	रायम्	"	"
तृतीया	राया	राभ्याम्	राभिः
चतुर्थी	राये	..	राभ्यः
पंचमी	रायः	राभ्याम्	राभ्यः
षष्ठी	..	रायोः	रायाम्
सप्तमी	रायि	..	रायु
सन्वोधन	हे राः	हे रायौ	हे रायः

ओकारान्त पुल्लिङ्ग गो ( बैल ) शब्द

प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	..	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
तुर्चय	गवे	..	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	..	..
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	..	गोपु
सन्वोधन	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

ऌकारान्त पुल्लिङ्ग ग्लौ ( चन्द्रमा ) शब्द

प्रथमा	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
द्वितीया	ग्लावम्	.	ग्लावः
तृतीया	ग्लावा	ग्लाभ्याम्	ग्लाभिः
चतुर्थी	ग्लावे		ग्लाभ्यः
पञ्चमी	ग्लावः		



पश्या	ग्लावः	ग्लावाः	ग्लावाम्
सप्तमा	ग्लावि	"	ग्लावु
सम्बोधन	हे ग्लाः	हे ग्लावी	हे ग्लावः

### अभ्यास

१. गज शब्द के सब विभक्तियों और वचनों में रूप लिखो ।
२. छात्र शब्द के तृतीया एकवचन और पश्या बहुवचन में रूप लिखो ।
३. मुनि, साधु, निरृ, गौ शब्दों के द्वितीया बहुवचन, तृतीया एकवचन तथा पश्या द्विवचन में रूप लिखो ।

४ हरि, सखि, कृपति मानु, भ्रातृ और दातृ शब्दों के सब विभक्तियों और वचनों में रूप लिखो ।

५ निम्नलिखित रूप किस शब्द के किस विभक्ति के किस वचन में हैं ?

प्राप्तेषु, कर्मलो, मर्षेण हरिणा, उदघेः, कवीनाम्, विचे, विषो, भूतये, यतिषु, शिशवे, पश्यन्, श्रोतु मन्त्रः ।

६. निम्नलिखित के शुद्ध रूप लिखो ।

नरै, वितारी, हे प्रभुः, साधुवाम्, भूतव्या, पतिना, कुष्ठा ।

### अनन्त स्त्रीलिङ्ग

आद्यागन्त स्त्रीलिङ्ग लना ( येन । शब्द

प्रथमा	लना	लने	लना
द्वितीया	लनाम्		
तृतीया	लनाय	लनाय	लनाय
चतुर्थी	लनाय		लनाय
पञ्चम	लनाय		
षष्ठी		लनाय	लनाय

शब्द-रूपावली

नममां लतायाम् लतयो लतासु  
 नन्योधन हे लतं हे लतं हे लताः  
 आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप प्रायः लता की तरह हैं—

- |  |                 |                   |
|--|-----------------|-------------------|
| माला = हार   | लज्जा = शर्म    | शाला = स्थान      |
| मार्या = पत्नी   | विद्या = विद्या | गङ्गा = गङ्गा     |
| ला = लज्जा   | निद्रा = नींद   | शोभा = शोभा       |
| शला = पत्थन  | कन्या = लड़की   | प्रमदा = युवती    |
| प्या = प्यान   | कला = हुनर      | आज्ञा = आज्ञा     |
| चमा = चूमा   | क्रीडा = खेल    | ध्याया = ध्याया   |
| प्रजा = प्रजा  | देवता = देवता   | कथा = कहानी       |
| व्यथा = माननिकटुःख   | निशा = रात्रि   | रसना = जीभ        |
| नन्तलिखित आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के शब्दों के रूप होते हैं— | निशा = रात      | जरा = बुढ़ापा     |
| एक रूप लता के नमान होता है—                                      |                 | समान ही होते हैं। |
| निद्रा = नाक   |                 |                   |

अन्या ( माता ) शब्द के रूप लता शब्द के समान ही होते हैं।  
 केवल नन्योधन के एकवचन में रूप 'हे अन्य' होता है।

- |           |       |         |
|-----------|-------|---------|
| प्रथमा    | नति   | मताः    |
| द्विताया  | नतिम् | मताः    |
| तृताया    | नतिम् | मतिभिः  |
| चतुर्थी   | नति   | मतिभ्यः |
| पंचमी     | नति   |         |
| षष्ठी     | नति   |         |
| सप्तमी    | नति   |         |
| अष्टमी    | नति   |         |
| नवमी      | नति   |         |
| दशमी      | नति   |         |
| एकादशी    | नति   |         |
| द्वादशी   | नति   |         |
| त्रयोदशी  | नति   |         |
| चतुर्दशी  | नति   |         |
| पौर्णमासी | नति   |         |

नीचे लिखे इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'मनि' के होते हैं—

श्रुति = वंद	रानि = नरोत्त	स्मृति = शास्त्र
कार्ति = यश	सुक्ति = मोक्ष	विमूनि = पेश्वर्य
स्तुति = प्रशंसा	मस्यन्ति = पेश्वर्य	सृष्टि = संसार
विपत्ति = दुःख	नानि = नानि	प्रीति = प्रेम
भूति = ऐश्वर्य	गति = चाल	रात्रि = रात
प्रकृति = स्वभाव	भक्ति = भक्ति	बुद्धि = बुद्धि
भूमि = पृथिवी	भित्ति = दीवार	विभक्ति = विभक्ति

ईकारान्त स्त्रीलिंग नदा ( नदी ) शब्द

प्रथमा	नदी	नद्यो	नद्यः
द्वितीया	नदां	.	नद्योः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्य		नदीभ्यः
पञ्चमा	नद्या		"
षष्ठी	..	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
अष्टमी	हे नदि	हे नद्यो	हे नद्यः

प्रायः ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप नदी की तरह होते हैं । ३ शब्द निम्नलिखित हैं—

जननी = माता	नखिनी = कमलिनी	पुरी = नगरी
महिषी = गनी	नारी = स्त्री	पुत्री = कन्या
महा = पृथिवी	राज्ञा = राज.	मम्या = महिली
विदुषा = विदुषा	कन्या = स्त्री	सौमुदा = सन्दिग्धा
दामा = दामा	पृथ्या = उमान	रजना = राज
विभक्षणा = राज	कुमारी = कुमार	नद्या = नद्य

देवी = देवी      भगिनी = बहन      शोधनी = झाड़ू  
 लक्ष्मी, तरो ( नौका ), तन्त्रां ( ब.ला आदि को तार ) आदि शब्दों  
 के प्रथमा एकवचन में लक्ष्मीः, तरोः, तन्त्राः आदि रूप होते हैं; शोध  
 प्रथम रूप नदी का तरह होते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग घी ( युद्धि ) शब्द

प्रथमा	घीः	घियौ	घियः
द्वितीया	घियम्	घियौ	घियः
तृतीया	घिया	घंभ्याम्	घंभिः
चतुर्थी	घिरं, घिये	..	घंभ्यः
पञ्चमी	घियाः, घियः	..	..
षष्ठी	.. ..	घियोः	घियाम्
सप्तमी	घियाम्, घियि	..	घीषु
सन्धोयन	हे घीः	हे घियौ	हे घियः

घी ( लक्ष्मी ), भा ( डर ), ह्यौ ( लज्जा ) आदि शब्दों के रूप घी  
 के समान होते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग स्त्री ( स्त्री ) शब्द

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	..	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रिरं	..	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	..	..
षष्ठी	..	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	..	स्त्रीषु
सन्धोयन	हे स्त्री	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग घेनु ( गौ ) शब्द

प्रथमा	घेनुः	घेनू	घेनवः
--------	-------	------	-------

द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्या	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्यै, धेनवे	"	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्याः, धेनोः	"	"
षष्ठी	" "	धेन्योः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्याम्, धेनी	"	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

इसी प्रकार रज्जु ( रज्जी ), तनु ( शरीर ), हनु ( टोही )  
 उच्चारण स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं ।

उच्चारण स्त्रीलिङ्ग वधू ( वहू ) शब्द

प्रथमा	वधूः	वध्वी	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	"	वधूः
तृतीया	वध्या	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	"	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्याः	"	"
षष्ठी	वध्याः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्याम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधू	हे वध्वी	हे वध्वः

इसी प्रकार वधू ( सेना ) आदि शब्दों के रूप होते हैं ।

उच्चारण स्त्रीलिङ्ग मू ( शिवी ) शब्द

प्रथमा	मूः	मुषी	मुषः
द्वितीया	मुषम्	मुषी	मुषः
तृतीया	मुषा	मूभ्याम्	मूभिः
चतुर्थी	मुषे, मुषे	मूभ्याम्	मूभ्यः
पञ्चमी	मुषाः, मुषः	मूभ्याम्	मूभ्यः
षष्ठी	मुषाः, मुष	मुषाः	मुषाम्, मुषाम्

सतमी                      सुवान्, सुवि      सुवोः                      मृषु  
सन्धोवन                  हे भूः                      हे सुवौ                      हे भूवः  
इत्नी प्रकार भू ( भौह ), सुभू ( सुन्दर भौह वाली ) आदि शब्दों के  
प भी होते हैं ।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग नावृ ( नावा ) शब्द

प्रथमा                      नावा                      नावरौ                      नावरः

द्वितीया                      नावरम्                      ..                      नातः

शेष पितृ शब्द के समान ( देखो पृष्ठ २८ )

दुहितृ ( लड़की ) शब्द के रूप भी नावृ के समान होते हैं ।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग स्वसृ ( वहन ) शब्द

प्रथमा                      स्वसा                      स्वसारौ                      स्वसारः

द्वितीया                      स्वसार                      ..                      स्वसृः

शेष नावृ शब्द के समान ।

ओकारान्त स्त्रीलिंग घो ( आकाश ) शब्द

प्रथमा                      घोः                      घोवौ                      घोवः

शेष गो शब्द के समान ( देखो पृष्ठ २६ ) ।

ओकारान्त स्त्रीलिंग नौ ( नौका ) शब्द

प्रथमा                      नौः                      नौवौ                      नावः

शेष 'नौ' शब्द के समान ( देखो पृष्ठ २६ ) ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के सब विभक्तियों और वचनों में रूप लिखो—

रत्ना, भृति, वारी, त्वरे, भी, खु, चमू, भ्रू, दुहितृ ।

२. रूप लिखो—

(क) कर्ग शब्द का पशु वचन में ।

(ख) बुद्ध शब्द का सतमी एकवचन में

- (न) गौरी शब्द का उच्चारण एकाचन में ।  
 १. निम्नलिखित का क्विप शब्द के क्विप निमल्ल के क्विप वचन में  
 नारीशाम्, निमल्लसाम्, केतोः, वयोः, नीपु ।

### अजन्त नपुंसकलिङ्ग

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग ( फल ) शब्द

प्रथमा	फलर्	फले	फलानि
द्वितीया	"	"	"

(रोग पुँल्लिङ्ग नर शब्द की तरह ( देखो पृष्ठ २४ )

प्रायः सभी अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप फल ही होते हैं । कुछ शब्दों को सूत्रों नाचे को जानते हैं—

घन = घन	वन = जगल	कार्य = काम
विण = विण	रत = रत	मुग्ध = मुग्ध
दुःख = दुःख	प.प = प.प	घृ = घर
नेत्र = अक्ष	मुग्ध = मुग्ध	पुत्र = पूत
कृगुम = कृत	वपन = वपन	नेदन = अक्ष
पुत्रक = पुत्रक	वक्र = वक्र	विण = वहर
वपन = वपन	नगर = नगर	नरप = नरप
मुचल = मोला	नय = नय	पुत्रप = पुत्रप
कमल = कमल	कृद = कृद	प्राग् = प्राग्
लक्षण = लक्षण	हिम = हिम	मित्र = मित्र
वन = वन	कृत् = कृत्	शेन = शेन
भोजन = भोजन	राज = राज	वेर = शत्रुता
गीत = गीत	राज = राज	भुवन = भुवन
वपन = वपन	वपन = वपन	कृत् = कृत्

स्थान = स्थान      आभरण = डेवर      दल = शक्ति  
 हृदय, उदक, मांस आदि शब्दों के दो-दो रूप होते हैं। एक  
 ल को भौति और दूसरा उनसे भिन्न।

इषारान्त नपुंसकलिङ्ग वारि ( पानी ) शब्द

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारिणि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	वारिणा	वारिण्याम्	वारिणिः
चतुर्थी	वारिणे	"	वारिण्यः
पञ्चमी	वारिण्यः	"	"
षष्ठी	"	वारिण्योः	वारिण्याम्
सप्तमी	ष वारिणि	"	वारिण्यु
अष्टमि	हे वारि, वारि	हे वारिणी	हे वारिणि

इषारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप प्रायः इतनी तरह होते हैं।

इषारान्त नपुंसकलिङ्ग दधि ( दही ) शब्द

प्रथमा	दधि	दधिनो	दधिनि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	दध्या	दधिण्याम्	दधिनिः
चतुर्थी	दधिने	"	दधिण्यः
पञ्चमी	दध्याः	"	"
षष्ठी	दध्याः	दध्नोः	दध्याम्
सप्तमी	दधिनि दधिति	"	दधिण्यु
अष्टमि	हे दधि हे दधि हे दधिनो	हे दधिनि	हे दधिनि

वर्षादि ( दही ) वर्षादि ( दही ) और शक्ति ( दही ) शब्दों के रूप  
 इतनी भौति होते हैं।

इषारान्त नपुंसकलिङ्ग ननु ( ननु ) शब्द

प्रथमा	ननु	ननुनि	ननुनि
--------	-----	-------	-------



द्वितीया	मधु	मधुनी	मधुनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	"	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	"	"
षष्ठी	"	मधुनोः	मधुनाम्
सप्तमी	मधुनि	"	मधुभु
अष्टोत्थान	हे मधो, हे मधु,	हे मधुनी	हे मधुनि

इसी प्रकार अम्बु ( जल ), वसु ( धन ), अश्व ( घोड़ा ) और  
आदि शब्दों के रूप होते हैं ।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग कर्त् ( करने वाला ) शब्द

प्रथमा	कर्त्	कर्त् णी	कर्त् णि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	कर्त्रा, कर्त् णा	कर्त् भ्याम्	कर्त् भिः
चतुर्थी	कर्त्रे, कर्त् णे	"	कर्त् भ्यः
पञ्चमी	कर्त् रः, कर्त् णः	"	"
षष्ठी	"	कर्त्रोः, कर्त् णोः	कर्त् र्याम्
सप्तमी	कर्त् रि, कर्त् णि	कर्त्रोः, कर्त् णोः	कर्त् णु
अष्टोत्थान	हे कर्त् रः हे कर्त् र	हे कर्त् णी	हे कर्त् णि

इसी प्रकार घाट, माट आदि शब्दों के रूप होते हैं ।

### अभ्यास

- ( १ ) मूलक मित् और पाटु शब्द के लक्ष विशेषणों और लक्षों  
रूप लिखो ।
- ( २ ) निम्नलिखित का प्रत्यय मूल की द्वित्व विभक्ति के द्वित्व  
रूप लिखो —

मदुन गीर्वा मन्त्र रत्न ।

( ३ ) निम्नलिखित रूपों को शुद्ध करो ।  
फलान्, वारधे, मधुशाम्, कर्तृनाम्

### हलन्त पुँल्लिङ्ग

जकारान्त पुँल्लिङ्ग भिपज् ( वैद्य ) शब्द

प्रथमा, सं०	भिपक्, भिपग्	भिपजौ	भिपजः
द्वितीया	भिपजम्	..	..
तृतीया	भिपजा	भिपग्भ्याम्	भिपग्भिः
चतुर्थी	भिपजे	भिपग्भ्याम्	भिपग्भ्यः
पञ्चमी	भिपजः	..	..
षष्ठी	..	भिपजोः	भिपजाम्
सप्तमी	भिपजि	..	भिपजु

घकारान्त पुँल्लिङ्ग पयोमुच् ( दादल ) शब्द

प्र०, सं०	पयोमुक्-न्	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वितीया	पयोमुचम्	पयोमुचौ	पयोमुचः
तृतीया	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः

शेष भिपज् की तरह ।

इसी प्रकार यखिज् ( दन्तिया ), श्यत्विज् ( यज्ञ करने वाला ), जलमुच ( दादल ) आदि शब्दों के रूप होते हैं ।

वकारान्त पुँल्लिङ्ग मरुत् ( वायु ) शब्द

प्र०, सं०	मरुत्-द्	मरुतौ	मरुतः
द्वितीया	मरुतम्	..	..
तृतीया	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः
चतुर्थी	मरुते	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः
पञ्चमी	मरुतः	..	..

मन्त्री	मन्त्रः	मन्त्रोः	मन्त्राणाम्
मन्त्रिणी	मन्त्रिणी	"	मन्त्रिण्यु

इसी प्रकार भूषण आदि लकारान्त शब्द लकारान्त पुल्लिङ्ग धीमन् ( युद्धिमन् ) शब्द

प.	धीमान्	धीमन्तो	धीमन्तः
दि.	धीमन्तम्	"	धीमन्तः
सं.	हे धीमान्	हे धीमन्तो	हे धीमन्तः

इस मन्त्र की भाँति ।

धीमन् गोमन्, वज्रमन्, भयन् ( ध्याय ) युद्धिमन् भगवन् यावन् नायन् आदि मन्त्रान्त तथा लक्षण शब्दा के रूप धीमन् की तरह होते हैं

लकारान्त पुल्लिङ्ग वरन् ( वेना दृष्या ) शब्द

प., सं.	वरन्	वरन्तो	वरन्तः
दि.	वरन्तम्	"	वरन्तः

इस मन्त्र की भाँति ।

उपधन्, लक्षण आदि लक्षण शब्दों के रूप वरन् की तरह होते हैं ।

लकारान्त पुल्लिङ्ग मरुदन् ( मरुता दृष्या ) शब्द

प., सं.	मरुदन्	मरुदन्तो	मरुदन्तः
दि.	मरुदन्तम्	"	मरुदन्तः

इस मन्त्र की भाँति ।

वरन् ध्यान वरुण वीरुण कुर्वन् धीमन् आदि शब्द लक्षण के रूप मरुदन् की तरह होते हैं ।

लकारान्त पुल्लिङ्ग मरुन् ( मरुत ) शब्द

प.	मरुन्	मरुन्तो	मरुन्तः
दि.	मरुन्तम्	मरुन्तो	मरुन्तः
सं.	मरुन्तः	मरुन्तो	मरुन्तः

सं० हे महन् हे महान्तौ हे महान्तः

शेष धीमन् शब्द की तरह ।

दकारान्त पुल्लिङ्ग सुहृद् ( मित्र ) शब्द

प्र०, सं० सुहृन्-द् सुहृदौ सुहृदः

शेष मरुन् की तरह ।

नकारान्त पुल्लिङ्ग राजन् ( राजा ) शब्द

प्र० राजा राजानौ राजानः

द्वि० राजानम् राजानौ राज्ञः

तृ० राज्ञा राजभ्याम् राजभिः

च० राज्ञे राजभ्याम् राजभ्यः

प० राज्ञः " "

प० " राज्ञोः राज्ञाम्

स० राज्ञि, राजनि राज्ञोः राजसु

सं० हे राजन् हे राजानौ हे राजानः

नकारान्त पुल्लिङ्ग आत्मन् ( आत्मा ) शब्द

प्र० आत्मा आत्मनौ आत्मानः

द्वि० आत्मानम् आत्मनौ आत्मनः

तृ० आत्मना आत्मभ्याम् आत्मभिः

च० आत्मने " आत्मभ्यः

पं० आत्मनः " "

प० " आत्मनोः आत्मनाम्

स० आत्मनि " आत्मसु

सं० हे आत्मन् हे आत्मनौ हे आत्मानः

यञ्जन , ब्रह्मन् आदि शब्दों के रूप आत्मन् की तरह होते हैं ।

नकारान्त पुल्लिङ्ग श्वन् ( कुत्ता ) शब्द

प्रथमा श्वा श्वानौ श्वानः

द्वितीया	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	"	श्वभ्यः
पञ्चमी	शुनः	"	"
षष्ठी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	"	श्वसु
अष्टमोप	हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वानः

नकारान्त पुल्लिङ्ग युवन् ( युवक ) शब्द

प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	"	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	"	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	"	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	"	युवसु
अष्टमो	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

नकारान्त पुल्लिङ्ग मघवन् ( इन्द्र ) शब्द

प्र०	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वि०	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृ०	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
च०	मघोने	,	मघवभ्यः
प०	मघान	,	,
ष०	,	मघानो	मघानाम्
स०	मघानि	,	मघवसु
अ०	हे मघवन्	हे मघवानौ	हे मघवानः

इन्द्रन्त पुँल्लिङ्ग पथिन् ( मार्ग ) शब्द

प्र० सं०	पन्थाः	पन्थानी	पन्थानः
द्वि०	पन्थानम्	"	पथः
तृ०	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
च०	पथे	"	पथिभ्यः
प०	पथः	"	"
प०	"	पथोः	पथान्
स०	पथि	"	पथिषु

इसी प्रकार मथिन् और श्नुसिन् ( इन्द्र ) शब्दों के रूप होते हैं ।

इन्द्रन्त पुँल्लिङ्ग शशिन् ( चन्द्र ) शब्द

प्रथमा	शशी	शशिनौ	शशिनः
द्वितीया	शशिनम्	"	"
तृतीया	शशिता	शशिभ्याम्	शशिभिः
चतुर्थी	शशिने	"	शशिभ्यः
पंचम्या	शशिनः	"	"
षष्ठी	शशिनः	शशिनोः	शशिनान्
सप्तमी	शशिति	"	शशिषु
सं०	हे शशिन	हे शशिनौ	हे शशिनः

एनिन्त सुसिन् मानिन् वलिन् प्राप्तिन् वरिष्ठन् शरीरिन्  
 वरिष्ठन् व मन विष्णोश्च मन्वन्त मन्वापन्त मन्वन्तिन् अणु-  
 मन्वन्त ए एन् म एन् मन्वन्त मन्वन्त मन्वन्त मन्वन्त मन्वन्त  
 मन्वन्त मन्वन्त मन्वन्त मन्वन्त मन्वन्त मन्वन्त मन्वन्त मन्वन्त

०४ . . . . .

पुस्तक  
 १०

ह०	पुंसा	पुंम्याम्	पुंभिः
च०	पुंमे	"	पुंभ्यः
प०	पुंसः	"	"
प०	"	पुंमोः	पुंमाम्
स०	पुंसि	"	पुंसु
सं०	हे पुमन्	हे पुमांसी	हे पुमांसः

सकारान्त पुंलिङ्ग विद्वस ( विद्वान् ) शब्द

प्र०	विद्वान्	विद्वांसी	विद्वांसः
द्वि०	विद्वान्सम्	"	विद्वपः
ह०	विदुपा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च०	विदुपे	"	विद्वद्भ्यः
प०	विदुपः	"	"
प०	विदुपः	विदुपोः	विदुपाम्
स०	विदुपि	"	विद्वत्सु
सं०	हे विद्वन्	विद्वांसी	हे विद्वांसः

सकारान्त पुंलिङ्ग चन्द्रमस ( चन्द्रमा ) शब्द

प्र०	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि०	चन्द्रमसम्	"	"
ह०	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च०	चन्द्रमसे	"	चन्द्रमोभ्यः
प०	चन्द्रमसः	"	"
प०	"	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स०	चन्द्रमसि	"	चन्द्रमसु
सं०	हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः

वेधम , दुर्मनम मुर्मनम अदि शब्दा के रूप भी इसी प्रकार होते हैं ।





पठ्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
मममी	वाचि	"	वाचु

इसी प्रकार स्रज् ( माला ) शब्द के रूप होते हैं ।

दकारान्त स्त्रीलिङ्ग आपद् ( आपत्ति ) शब्द

प्र० सं०	आपन्	आपदी	आपदः
द्वि०	आपदम्	"	"
तृ०	आपदा	आपदभ्याम्	आपद्भिः
च०	आपदे	"	आपदभ्यः
प०	आपदः	"	"
ष०	"	आपदीः	आपदाम्
स०	आपदि	"	आपदु

इसी प्रकार गरिन् ( नदी ), वीरुध ( लता ) ममिष्, युष्, ह्य शब्द आदि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं ।

रकारान्त स्त्रीलिङ्ग गिर ( घागी ) शब्द

प्रथमा, सं०	गीः	गिरी	गिरः
द्वितीया	गिरम्	"	"
तृतीया	गिरा	गीर्येत्	गीरिभिः
चतुर्थी	गिरे	"	गीर्येः
पञ्चमी	गिरः	"	"
षष्ठी	"	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	"	गीषु

रकारान्त स्त्रीलिङ्ग गृ ( नगर ) शब्द

प्र० सं०	गृ	गृ	गृ
----------	----	----	----

द्वि० सं० गृ

रकारान्त स्त्रीलिङ्ग गृ ( नगर ) शब्द

प्रथमा सं०	गृ	गृ	गृ
------------	----	----	----

द्वितीया	दिशाम्	दिशी	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	"	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	"	"
षष्ठी	"	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	"	दिक्षु

पकारान्त स्त्रीलिङ्ग आप् ( पानो ) शब्द  
आप् शब्द नित्य बहुवचन में प्रयुक्त होता है

प्र०	—	—	आपः
द्वि०	—	—	अपः
तृ०	—	—	अद्भिः
च०	—	—	अद्भ्यः
प०	—	—	"
ष०	—	—	अपाम्
स०	—	—	अप्सु

पकारान्त स्त्रीलिङ्ग आशिप् ( आशीर्वाद ) शब्द

प्र०, सं०	आशीः	आशिपौ	आशिपः
द्वितीया	आशिपम्	"	"
तृतीया	आशिपा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
चतुर्थी	आशिपे	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
पञ्चमी	आशिपः	"	"
षष्ठी	"	आशिपोः	आशिपाम्
सप्तमी	आशिपि	"	आशीःपु

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

नकारान्त नपुंसकलिङ्ग जगन् ( संसार ) शब्द

प्र० म	जगन्	जगता	जगान्त
--------	------	------	--------

स०	हविषि	हविषोः	हविष
	सकारान्त नपुंसकलिङ्ग धनुस् ( धनुष ) शब्द		
प्र०, सं०	धनुः	धनुषो	धनुं
द्वि०	"	"	"
तृ०	धनुषा	धनुभ्याम्	धनु
च०	धनुषे	"	धनु
प०	धनुषः	"	"
स०	"	धनुषोः	धनु
स०	धनुषि	"	धनु

इसी प्रकार धनुम् ( अस् ) शब्द के रूप भी होते हैं

### अभ्यास

१. धनु, धनुस्, धनुष और धनुष शब्दों के सब विभक्तियों के वचनों में रूप लिखो ।

२. रूप लिखो—

(क) गिर शब्द का प्रथमा एकवचन में ।

(ख) आशिष शब्द का सप्तमी बहुवचन में ।

(ग) अगत शब्द का प्रथमा बहुवचन में ।

(घ) नामन् शब्द का सप्तमी एकवचन में ।

३. निम्नलिखित रूप किस शब्द की किस विभक्ति के किस वचन में आएँ, पयः, वासोः, धनुषा ।

४. निम्नलिखित रूपों को शुद्ध करो—

गिभ्याम्, अगती, नामेन, अयंश्च ।

५. निम्नलिखित श्लोकों के अर्थ लिखो और मोटे टाइट में मुद्रित के क. रको को स्पष्ट करो ।

(क) विद्या ददाति विनय, विनयान् यात पापताम् ।

यात्र वात् मनसाश्रीत् धनं च धर्मं तत रूक्षम् ॥

- (ग) विना कस्युर्धवाः कर्म, विना कस्यि पश्यते  
पश्यामि मान्यमपावामि, गर्वायै नरु कस्युर्धवाः ।
- (घ) उपवासिषु याः वापुः, वापुषे नय को मुहः ।  
अनवापिषु याः वापुः, न वापुः वापुषे मुहः ।
- (ङ) एतेषां लक्ष्मिः यन्तुः सुमः शिष्ये एतेषां देवः ।  
पृथिव्यां नानिदं नरु इत्यं, नृदेवता आरणी मदेवः ।
- (च) उपव विष्णु विष्णवे, मुहमयी नः कस्युर्धवाः पावः ।  
न कस्युर्धवाः, अनापिषु वापुषे नय मुहः ।
- (छ) मतां विष्णुषु वापुः वापुषे नय मुहः,  
विष्णुः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।

विष्णुः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।  
कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।  
कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।

(द) एते कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।  
कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।  
कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।

कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।

कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।  
कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।  
कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।  
कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।  
कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।

कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।  
कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः कस्युर्धवाः ।

विदुषी होती थी। हम माता के आशीर्वाद से दीर्घायु प्राप्त कर सकते हैं।  
 स्नानाभ्यसन बहनों का स्वोदार है।

प्रतिदिन पत्नी को खाओ—स्वास्थ्य लाभ होगा। स्वच्छ जल पीओ  
 दूध दही का सेवन करो। मधु का प्रयोग भी स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

(ख) वैद्य (भियक्) की विद्विष्टता में निश्वास रखो; अन्वय ल  
 होगा। शुद्ध वायु (मफन्) में प्रातः सायं भ्रमण करो। बुद्धि  
 (धीमान्) पुष्प स्वास्थ्यरक्षा के लिये अनाथों का प्रयोग करता है।  
 मार्ग में जाता हुआ (गच्छत्) मनुष्य कभी मल त्याग न करे।  
 राजा उनको दरबंद देता है, जो समाज के स्वास्थ्य का नाश कर  
 है। अपने (आत्मन्) स्वास्थ्य की रक्षा के साथ दूसरों की रक्षा  
 रक्षा भी हमारा धर्म है। यदि कुत्तो (इहन्) का स्वभाव है, तो  
 जावे वहाँ गन्दा कर दें। जवान (युवन्) मनुष्य तो अन्वय  
 सेतो में बाहर प्रातःकाल जाएँ। मार्ग में (पयिन्) मल  
 करना पाप समझें। चन्द्रमा (शशिन्) की चाँदनी में  
 करने से पुष्प (पुन्) का स्वास्थ्य अच्छा होगा है। अ  
 (दृश्) को शान्ति प्राप्त होती है। विद्वान् लोगों का कथन  
 शरीर सबसे प्रथम साधन है।

दौरी की बाणी (बाक्) के दोष से महाभारत हुआ है। अग्नि  
 बहुत आगतिषी (आद्) का स्थान होगा है। राजा इन्द्रिन्द्र का पठ  
 दिशाओ (दिश्) में फैल गया। बूढ़ों की अमीषी में (आशिन्) अ  
 रिषा, वध और बल की वृद्धि होती है। जगत् में ऊँची का नाम रहता है।  
 शुभ कर्मों (कर्मन्) का आनन्द करते हैं। दिन-दिन (अहन्) अ  
 अपने कर्मों का निरीक्षण कर और मन में सदावश्य सा निश्चय करे।

## षष्ठ अध्याय

### उपपद विभक्तियाँ

समासपूर्वो पद के योग से जो विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं, उपपद विभक्तियाँ कहते हैं।

उपपद विभक्तियों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।  
द्वितीया—निम्न-लिखित शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति का योग होता है :—

अन्तरेण, अन्तरा, अभितः, परितः, उभयतः, सर्वतः, उपर्युपरि, अप्यधि, अधोऽधः, धिक्, विना, निरुपा, प्रति अनु, समया, श्ते। यथा—

(क) विद्यामन्तरेण जनस्य न सुखम्—विद्या के विना मनुष्य के सुख नहीं मिलता।

(ख) प्रानमभितः नदीं वर्चते—प्रान के चारों तरफ नदी है।

(ग) निरुपाः प्रानं नदीं वर्चते—प्रान के पान नदी है।

(घ) ज्ञानं विना (ज्ञाने) न मुक्तिः—ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।

(ङ) धिक् पापिनं पुत्रम्—र.पां पुत्र को धिक्कार है।  
द्वितीया—१. निम्न-लिखित शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति का योग होता है :—

अलम् एतम् नदं तप न् के समानार्थक नामान् समन् नार्यः  
आदि शब्द।

(क) अलं विवादेन = लड़ाई से दन।

न एतमेनि विलसः = इन विलस से दन

न एताना नदं तपि कौमुदी = सन्दन के साथ बाँटना दन  
समा है

० जिग विहन अज्ञ मे देशे का विचार मशिय होगा हे तज  
राज्दों के साथ कृगोया विभक्ति का प्रयोग होगा हे—

अगण्य वगण्य शब्देन कुन्तः

धनुर्ध्या—निम्नलिखित शब्दों के योग में धनुर्ध्या विभक्ति का प्र  
योग होता है—

रज्, कुष्, दुग्, ईर्ष्या, धमूग अर्ध को धानुर्ध्या के योग में  
नमः, स्वस्ति, अलम् ( ममर्थ ) शब्दों के योग में ।

(क) महर्षं पत्नं रोचते = मुझे पत्न अच्छा लगता है ।

(ख) गुरुः शिष्याय कुष्पति = गुरु शिष्य पर गुस्से होता है ।

(ग) विरयामित्रो यमिच्छाय दुष्पति = विरयामित्र यमिच्छ से  
घरता है ।

(घ) ननो ब्राह्मणाय = ब्राह्मण को नमस्कार ।

(ङ) भूतेभ्यः स्वस्ति अस्तु = प्राणियों का कन्यरण हो ।

पञ्चमी—निम्नलिखित शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति  
प्रयोग होता है ।

प्रभृति, आरभ्य, वदिः, अनन्तरम्, ऊर्ध्वम्, पृथक्, विना ।  
इत्यादि ।

(क) जन्मनः प्रभृति ( आरभ्य ) मया मांमं न भुक्तम् = जन्म  
मेंने मांम नहीं खाया ।

(ख) मामाद् वदिः अस्माकं विशालयोऽस्ति = माम से बाहर हम  
मिशालय है ।

(ग) अध्ययनादनन्तरं स क्रीडति = पढ़ने के बाद वह खेलता ।

(घ) ज्ञानान् विना ( पत्ने ) न मुक्ति = ज्ञान के विना मुक्ति  
नहीं मिलती ।

(ङ) गृहान् पृथक् मे नो भोजनान् अस्ति = घर में अलग में  
भोजनशाला है ।

दूर-समीप. दुन्व राज्यों के योग में पञ्चमी और षष्ठी दोनों ग होना है।

नगरस्य (नगरान्) दूरं गृहम् = शहर में घर दूर है।

पानस्य (पानान्) नर्मोपमाधमम् = गाँव के पान ही आसन है।

पन्द्रस्य (पन्द्रान्) तुल्यं तुल्यम् = पन्द्र के समान तुल्य।

नर्मो-निर्धारण (चुनाव) अर्थ में नर्मो या षष्ठी विभक्ति का होता है।

नृणां (नृषु) प्राङ्मुखः शेटः = नरुणों में प्राङ्मुख शेट है।

गवां (गोषु) कृन्वा पशुक्षीरा = गायों में काली गौ पशुत दूध।

दात्राणां (दात्रेषु) मैत्रः पदुः = विचारियों में मैत्र पदुर है।

### अभ्यास

शूदे, विना, अनन्तरम्, अनन्तरे, प्रकृति के योग में शूदेक न आती है। इनका वाक्यों में प्रयोग करो।

1. शूदे करो।

2) रामस्य सह गच्छ।

3) किम् प्राङ्मुखः पलायद्भोजिने।

4) रामस्य विना न शूदेति वन्यः वदुर् लक्ष्मिणम्।

5) वदुषोः श्रवः।

6. निम्नलिखित श्लोकों में निर्दिष्ट उपरत विभक्तियों को लक्ष्य कर के अर्थ भी लिखो—

7. शशिनो सह यानि कौतुहं,

सह मेनेन वदितुं प्रवृत्ते

नन्दोः संवत्सरात् २३

संवत्सरात् १ विद्वत्सरे



- (ख) न विना परवादेन, रमते पुर्जनो जनः ।  
 काकः सपरसान् मुह्यते, विनाऽमेघं न तुष्यति ।
- (ग) सत्सङ्गतोद् विदित्वा तव मच्छिद्युः  
 साप्यद्य नास्ति तव पण्डितमानिनो मे ।  
 कामन्तरेण न हि सा न्य च बोधवतां  
 तस्मात् स्वमद्य शरणं मम दीनस्थो ॥

## सप्तम अध्याय

### सर्वनाम शब्द

आ पद सहा के स्थान पर उसके श्यर्ष को प्रकट करने से  
 व्युत्पन्न होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहा जाता है, जैसे—“बालिकाः  
 गान् सिञ्चतः अभ्युपयन्ति” वाक्य में ‘गान्’ पद ‘बालकान्’ पद  
 पर आया है, अतः यह सर्वनाम है ।

सर्वनामां का प्रयोग दोनों लिङ्गों में होता है । पुँल्लिङ्ग संज्ञा-  
 के स्थान में पुँल्लिङ्ग सर्वनाम, स्त्रीलिङ्ग संज्ञा-शब्दों के स्थान में स्त्री-  
 सर्वनाम, तथा नपुंसकलिङ्ग संज्ञा-शब्दों के स्थान पर नपुंसकलिङ्ग  
 नाम शब्दों का प्रयोग होता ।

व्यतिहरण प्रयोग में आने वाले सर्वनाम शब्द निम्नलिखित हैं—  
 सर्वं, तद्, यद्, एतद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, इदम् तथा अद्  
 सर्वनाम शब्दों के कारण अंगि वचन भा मत्ता-शब्दों के नष्ट  
 होते हैं । इनका सम्बन्धन नहीं होता ।

मय (मय) शब्द

१९०३

सर्वम्  
नर्वेष  
सर्वस्मै  
सर्वस्मात्  
सर्वस्य  
सर्वस्मिन्

सर्वी  
नर्वाभ्याम्  
"  
"  
नर्वयोः  
"

सर्वान्  
सर्वैः  
सर्वेष्व्  
"  
सर्वेषाम्  
सर्वेषु

सर्वा  
सर्वाम्  
सर्वेषा  
सर्वस्यै  
सर्वस्याः  
"  
सर्वस्याम्  
सर्वम्  
"

सर्वलिङ्ग  
सर्वे  
"  
सर्वाभ्याम्  
"  
"  
सर्वयोः  
"

सर्वाः  
"  
सर्वामिः  
सर्वाभ्यः  
"  
सर्वास्वाम्  
सर्वानु  
सर्वाणि  
"

नपुंसकलिङ्ग  
सर्वे  
"  
सर्व पुंसि लिंग की तरह ।  
पूर्व ( पहला ) नपुंस  
पुंसि

पूर्व  
पूर्वम्  
पूर्वम्  
पूर्वम्  
पूर्वम्  
पूर्वम्

पूर्वम्  
पूर्वम्  
पूर्वम्  
पूर्वम्  
पूर्वम्

स० पूर्वस्मिन् पूर्वयोः पूर्वेषु  
 श्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में पूर्व के रूप मर्ब की तरह होते हैं।

तद् ( वह ) शब्द  
 पुंलिङ्ग

स०	सः	ती	ते
द्वि०	उम्	"	तान्
स०	तेन	ताभ्याम्	तैः
स०	तस्मै	"	तेभ्यः
स०	तस्मान्	"	"
स०	तस्य	तयोः	तेषाम्
स०	तस्मिन्	"	तेषु
		श्रीलिङ्ग	
स०	सा	ते	ताः
द्वि०	साम्	"	ताः
स०	तया	ताभ्याम्	ताभिः
स०	तस्मै	"	ताभ्यः
स०	तस्याः	"	"
स०	"	तयोः	ताभ्याम्
स०	तस्याम्	"	तासु
		नपुंसकलिङ्ग	
स०	तद्	ते	तानि
द्वि०	"	ते	"

नेत्र पुंलिङ्ग की तरह  
 एतद् ( यह ) शब्द  
 पुंलिङ्ग

सर्वनाम

द्वि०

ए०

व०

प०

ब०

म०

एतम्, एनम्

एतेन, एनेन

एतस्मै

एतस्मात्

एतस्य

एतस्मिन्

एतौ, एनौ

एताभ्याम्

..

एतयोः, एनयोः

..

एतान्, एनान्

एतेभिः

एतेभ्यः

..

एतेषाम्

एतेषु

प्र०

द्वि०

ए०

व०

प०

०

०

०

एषा

एषाम्, एषाम्

एषया, एषया

एतस्यै

एतस्याः

..

एतस्याम्

स्त्रीलिङ्ग

एते

एते, एने

एताभ्याम्

..

..

एतयोः, एनयोः

..

नपुंसकलिङ्ग

एते

एते, एने

शेष पुंलिङ्ग की तरह ।

यद् ( जो ) शब्द

पुंलिङ्ग

यौ

यौ

याभ्याम्

ययं

एतानि

एतानि, एना

एतासाम्

एतासु

यः

यम

येन

यस्मै

यस्मात्

यस्य

ये

यान्

यैः

येभ्यः

..

येषाम्

	वस्मिन्	यथा. स्थोक्तिग	येषु
३०	वा	व	वाः
दि०	वाम्	"	"
६०	वयो	वाभ्याम्	वाभिः
७०	वरी	"	वाभ्यः
८०	वस्थाः	वाभ्याम्	वाभ्यः
९०	"	वयोः	वामाम्
१००	वस्थाम्	"	वामु

नपुमाकृतिग

३०	वत्	वे	वानि
दि०	"	"	वानि

शेष पुंलिङ्ग की तरह ।

दिम् ( दीन ) शब्द

पुंलिङ्ग

३०	दः	दौ	द्वे
दि०	दम्	"	द्वान्
६०	द्वेन	दाभ्याम्	द्वेः
७०	द्वी	"	द्वेभ्यः
८०	द्वामान्	"	"
९०	द्वान्	द्वयोः	द्वेभ्याम्
१००	द्वामान	"	द्वेभ्यु

दाडितग

३०	दा	द्वे	दा
६०	दाम	"	दाः
९०	दाया	द्वेभ्याम्	दाभिः

कस्यै	कान्याम्	काम्यः
कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
कस्याः	कयोः	कासाम्
कस्याम्	"	कासु

नपुंसकलिङ्ग

किम्	के	कानि
"	"	"

शेष पुँलिङ्ग की तरह  
युष्मद् ( तू ) शब्द  
तीनों लिंगों में -

त्वम्	युवाम्	यूयम्
त्वाम् . त्वा	युवाम् . वाम्	युष्मान् , वा
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
तुभ्यम् . ते	युवाभ्याम् . वाम्	युष्मभ्यम् , वा
त्वन्	युवाभ्याम्	युष्मन्
तव ते	युवयोः . वाम्	युष्माद्गम् , दा
त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् ( मैं ) शब्द

तीनों लिंगों में

अहम्	आवाम्	वयम्
माम् मा	आवाम् नौ	अस्मान् नः
मया	आवभ्याम्	अस्माभिः
मह्यम् मे	आवभ्याम् नौ	अस्मभ्यम् . नः
मत्	आवभ्याम्	अस्मन्
मत् मे	आवय नौ	अस्माकम् नः
मयि	आवय	अस्मासु

कुम्भर भीर अरुमर शब्दों के रूप तीनों शिबों में समान होते

इरम् ( यह ) शब्द

पुंल्लिङ्ग			
प्र०	अरुम्	इमी	इमे
द्वि०	इराम्, एराम्	इमी, एमी	इमान्, ए
तृ०	अरुन, एरुन	आरुणाम्	एभिः
च०	अरुमी	"	एभ्यः
प०	अरुमान्	"	"
स०	अरुम	अरुभ्योः, एरुभ्योः	एरुम
स०	अरुमिन्	" "	एरु

स्त्रीलिङ्ग			
प्र०	इराम्	इमे	इमाः
द्वि०	इराम्, एराम्	इमे, इने	इमाः, एनाः
तृ०	अरुया, एरुया	आरुयाम्	आरुभिः
च०	अरुमी	"	आरुभ्यः
प०	अरुया	"	"
स०	"	अरुभ्योः, एरुभ्योः	आरुयाम्
स०	अरुयाम्	" "	आरुयु

नपुंसकलिङ्ग			
प्र०	इरम्	इमे	इमानि
द्वि०	इरम्, एरम्	इमे, एने	इमानि, एनानि

एष इति-वत्त्वं वा ननु

अरुम् इति ननु

इति-वत्त्वं

अमुम्	अम्	अमून्
अमुना	अमूभ्याम्	अनीभिः
अमुष्मै	"	अनीभ्यः
अमुष्मान्	"	"
अमुष्य	अमुयाः	अनीपान्
अमुष्मिन	"	अनीषु

स्त्रीलिङ्ग

असौ	अम्	अमूः
अमूम्	"	"
अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
अमुष्यै	"	अमूभ्यः
अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
"	अमुयाः	अमूषाम्
अमुष्याम्	"	अमूषु

नपुंसकलिङ्ग

अदः	अम्	अमूनि
"	"	"

शेष पुँल्लिङ्ग षी तरह

उभ ( दोनो ) शब्द

उभ शब्द के रूप केवल द्विवचन में होते हैं ।

पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
उभौ	उभे	उभे
.		"

उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
-----------	-----------	-----------

"

"



५०	कमयोः	कमयोः
५०	"	"

### अभ्यास

१. सर्वनाम क्रिसे करते हैं
२. निम्नलिखित सर्वनामों के रूप लिखो—  
 सर्व ( पुल्लिंग ), एतद् ( स्त्रीलिंग ), सुप्पद् ( नपुंसकलिंग ) ।
३. रूप लिखो—  
 किम् शब्द का स्त्रीलिंग में पष्ठी बहुवचन में ।  
 अस्मद् शब्द का तृतीया द्विवचन में ।  
 यद् शब्द का स्त्रीलिंग में चतुर्थी एकवचन में ।
४. शुद्ध करो—  
 सर्वाय, सुभाम्याम्, अस्तेषु ।
५. निम्नलिखित श्लोकों में सर्वनाम शब्दों की विभक्तियाँ पढ़कर उनके अर्थ करो :—  
 (क) यत् पृथिव्यां मीरिवधं, शिरस्यं पशवः क्षिपः ।  
 नालमेकस्य तन् सर्वं, इति पश्यन् मुञ्चति ॥  
 (ख) येन केन प्रकारेण, यस्य कस्यापि जन्तुनः ।  
 तन्तोदं जनयेत् प्राणः, तदेवेधरपूजनम् ॥  
 (ग) ह्यसि ह्य च गमिष्यामि, करचाहं विभिद्रामतः ।  
 को वन्द्युर्मम कस्याहम्, इत्यात्मानं विविक्षत ॥  
 (घ) वस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यः  
 तस्मिन् तथा वर्तितव्यं स धर्मः ।  
 वाचाचारो मायया वर्तितव्यः  
 वाचवाचा वापुना वन्दुषैः ॥ ३  
 (ङ) न करिष्यदपि जानानि, किं कस्य शो भविष्यति ।  
 एत इति काशीदानि, कुशादयोः सुविमान् ॥

नाम शब्दों के प्रयोग का ध्यान रखते हुए अनुवाद करो—  
 नगर में सुधी यह है, जो गंध कामनाओं को त्याग देता है और गंध  
 भावना में परता है। उगधी बिच गदा प्रगल रहता है। परी  
 म मार्ग है। इस पर चलने में शीर्ष मनुष्य का भी दुःख नहीं  
 जो इस मत्प को समझ लेता है, उगधी आत्मा उदा ज्ञान रहती  
 उग अधरथा में जो मनुष्य है, उग उगने यह मनोर करे और  
 का पालन करे। संसार में सौन सा पदार्थ स्थिर है, सौन सा  
 सौन सी विभूति अनश्वर है। हे अर्जुन ! तुम फेरल आत्मा  
 मनो। दुःखारा शरीर भरता है, आत्मा नहीं। मेरा तथा भक्त  
 देवा जानने हुए निरकाम बुद्धि में कर्तव्य का पालन करता है।

## अष्टम अध्याय

### विशेषण

शब्द में संज्ञा या सर्वनाम के गुण, अवस्था, संख्या तथा  
 आदि का बोध हो, उसे विशेषण ( adjective ) कहते हैं।

नमः प्रभृतं धनं, त्रिचतुराः बालकाः, इमानि पुन्यदानि,  
 अक्यों में न ल प्रभृत त्रिचतुराः तथा इमानि शब्द क्रमशः

बालक तथा पुन्यदान के विशेषण हैं। विशेषण शब्दों  
 करने हैं इसलिये इन्हें विशेषित करने वाला

संस्कृत भाषा में विशेषण शब्दों का  
 अर्थ होता है अतः विशेषण शब्दों का अर्थ

विशेषण शब्दों के विना विशेषण शब्दों के अर्थ का  
 प्रयोग बचन के अर्थ का अर्थ का अर्थ का अर्थ का अर्थ का

विशेषण शब्दों के अर्थ का अर्थ का अर्थ का अर्थ का अर्थ का

(२) विरोधण शब्दों से तारतम्य (Degrees of Comparison) का भी बोध होता है। इसके लिए 'तर' 'तम' प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। कुछ विरोधण शब्दों के उदाहरण आगे दिये जाते हैं—

स्वरूपवाचक Positive degree	तुलनावचक Comparative	अतिशयवाचक Superlative
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
लघु	लघुतर	लघुतम
मदुर	मदुरतर	मदुरतम
बलवान	बलवन्तर	बलवन्तम

यदि स्पष्ट है कि दो में किमा एक का उत्कृष्टता दिखाने के लिए तुलनावचक 'तर' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है और सत्र में किमा एक का उत्कृष्टता दिखाने के लिए अतिशयवाचक 'तम' का प्रयोग किया जाता है।

(३) क्रिया तथा अज्ञेय शब्दों के पाँच 'तर' 'तम' रूप 'तराम्' 'तमाम्' का उपयुक्त अर्थों में ही प्रयोग किया जाता है। यथा—  
राशिंतराम्, राशिंतमाम्। जल्पन्तराम्, जल्पन्तमाम्। उद्यमन्तराम्, उद्यमन्तमाम्। नावीन्तर, नावीन्तम। इत्यादि।

(४) तर' तम' प्रत्ययों के अर्थ में ही इतर' और 'इतम' प्रत्ययों का भी प्रयोग होता है। यद्यपि ये प्रत्यय कुछ निश्चित गुणधर्म के विरोधणों के लिए ही लगे सकते हैं। तर' तम' प्रत्ययों का ही प्रयोग के लिये ही प्रयोग हो सकता है। इतर' और 'इतम' के उदाहरण आगे दिये जाते हैं। इतर' अर्थान्तर' का अर्थ होता है—

वाचक itive ree	अर्थ Meaning	तुलनावाचक Comparative	अतिशयवाचक Superlative
	दूर	दूरायत्	दूविष्ट
	निकट	नेदायत्	नेद्विष्ट
	बड़ा	गरायत्	गरिष्ट
	छोटा	लशायत्	लविष्ट
	कौमल	अदायत्	अद्विष्ट
	बलवान्	बलायत्	बलविष्ट
	बड़ा	महायत्	महविष्ट
	प्यारा	प्रेयत्	प्रेष्ट
	छोटा	कनायत्	कनिष्ट
	बड़ा	व्यायम्	व्यष्ट
	कनडोर	अशायत्	अशष्ट
	विशाल	प्रथायत्	प्रथिष्ट
	चतुर	पटयत्	पटिष्ट
	पक्का	दृढायत्	दृढिष्ट
	गंदा	अप्यायत्	अप्यिष्ट
	अच्छा	नार्थायत्	नार्थिष्ट
	मंटा	अवायत्	अवविष्ट
	छोटा	हनायत्	हनिष्ट
	गंध	सैपायत्	सैपिष्ट
	कुच्छ	सोदायत्	सोदविष्ट
	रू	स्ययत्	स्यष्ट
	विशाल	वरायत्	वविष्ट
	लक्ष	दू पायत्	दूविष्ट

विशेषण शब्दों के रूप अजन्त भववा हलन्त शब्दों की लिङ्गातुमार बन सकते । यथा—( अजन्त पुं० ) प्रियाः, प्रियाः; ( स्त्री० ) प्रिया, प्रिये, प्रियाः; ( नपु ) प्रियम्, प्रिये, प्रियादि । ( हलन्त पुं० ) महान्, महान्ती महान्तः; ( स्त्री० ) महद्वी, महद्व्यः; ( नपु० ) महत्, महती, महन्ति ।

इष्ट-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप लिङ्गातुमार नर, लता तथा फल महश पताये जा सकते हैं । यथा—( पुं० ) ज्येष्ठः, ज्येष्ठी, ( स्त्री० ) ज्येष्ठा, ज्येष्ठे, ज्येष्ठाः; ( नपु० ) ज्येष्ठम्, ज्येष्ठे, ज्येष्ठाः ।

ईयम्-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप नीचे दिये जाते हैं ।

प्रेयम् ( बहुत प्यारा ) पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रेयान्	प्रेयांसी	प्रेयांसः
द्वितीया	प्रेयांगम्	"	प्रेयसः
तृतीया	प्रेयमा	प्रेयांभ्याम्	प्रेयोभिः
चतुर्थी	प्रेयमे	"	प्रेयोभ्यः
पञ्चमी	प्रेयसः	"	"
षष्ठी	"	प्रेयसोः	प्रेयसाम्
सप्तमी	प्रेयसि	"	प्रेयसु
अष्टमि	हे प्रेयन्	हे प्रेयासी	हे प्रेयांसः

स्त्रीलिङ्ग

	ए०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	प्रेयसी	प्रेयसी	प्रेयस्यः
द्वितीया	प्रेयसिम्	"	प्रेयसीः
तृतीया	प्रेयस्या	प्रेयसाभ्याम्	प्रेयसीभिः
चतुर्थी	प्रेयसे	"	प्रेयसाभ्यः
पञ्चमी	प्रेयसः	"	"



को यह कन्या अधिक प्यारी है । तुम दोनों में कौन बड़ा है ? मैं रावेन्द्रकुं से छोटा हूँ । इन तीनों में कौन सा फल अधिक कोमल है ।

(ग) भारत में जगन्नाथ का मन्दिर सबसे बड़ा है । हिमालय सब से ऊँचा है । सब नदियों में गंगा का पानी सबसे अधिक स्वच्छ है । पृथ्वी हाथी सबसे भारी है । छोटे पुत्र माता को सबसे प्यारे होते हैं । पाप ई पुरण में पुण्य की विजय होती है । दशरथ की सब पत्नियों में सीताला ग थी । दशरथ का सबसे बड़ा तथा सबसे अधिक गुणवान पुत्र राम था । राम राम का छोटा भाई था ।

५. अधोनिदिष्टे में विशेषण शब्दों को स्पष्ट करते हुए श्लोकों के अर्थ को

(क) सन्नुष्टस्य निरीदस्य, स्वात्मारामस्य य मुत्तमः ।

कुपस्तत् कामलोभेन, धारतोऽर्थे वा दिष्टः ॥

(ख) कुपस्तथा कश्चनमिदं, विपमे समुत्थितम् ।

अनायं शुद्धमस्वर्ग्यमकार्तिकमर्जुन ॥

(ग) मन्ति नद्यास्तरयः कथोद्गमैः

नगाभुभिर्दुःखितम्वनो धनाः ।

अनुदनाः सन्नुष्टया समृद्धिभिः

स्वभावे लक्ष्येण फोडवाग्निनाम् ॥

(घ) संगीरीरे दिमगिगिठिलाः स्वपद्मानम्य ।

ब्रह्मैश्यानामनमिधिना योगनिष्ठो गलम्य ।

रु तैमोऽप्य मम मुद्रिमेः वय ते निर्विशङ्काः ।

कण्डूवग्ने आडरिणाः स्वागमैः मर्षयैः ।

## नवम अध्याय

संख्यावाची शब्द ( १ ) ( १५० )

संख्यावाची शब्द विशेषण शब्द व अकार्यवाची संख्या

अतः इनके लिङ्ग, विभक्ति और वचन भी संज्ञा के अनुसार ही होते हैं। इनका प्रयोग संज्ञा शब्दों के अनुकूल दोनों लिङ्गों में किया जाता है। नीचे एक से दस पर्यन्त संख्यावाची शब्दों के रूप दिये जाते हैं—

### एक ( एक ) शब्द

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	एकः	एका	एकम्
द्वि०	एकम्	एकाम्	एकम्
तृ०	एकेन	एकया	एकेन
च०	एकेनै	एकस्यै	एकेनै
प०	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मान्
ष०	एकस्य	"	एकस्य
स०	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

एक शब्द 'एक' अर्थ में नित्य एकवचनान्त होता है। 'कई' अर्थ में इसके बहुवचन में 'सब' का तरह रूप होते हैं।

### द्वि ( दो ) शब्द

( द्वि शब्द केवल द्विवचन में ही होता है )

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	द्वयम्	द्वयम्	द्वयम्
चतुर्थी	"	"	"
पंचमी	"	"	"
षष्ठी	द्वयं	द्वयं	द्वयं
सप्तमी	"	"	"



### त्रि ( तीन ) शब्द

( 'त्रि' शब्द केवल बहुवचन में ही होता है )

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	त्रिस्रः	त्रंषि
द्वितीया	त्रान्	"	"
तृतीया	त्रिभिः	त्रिमृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिमृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	"	"	"
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रिमृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिमृषु	त्रिषु

### चतुर् ( चार ) शब्द

( चतुर् शब्द मो नित्य बहुवचन में ही होता है )

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	चत्वारः	चत्वारः	चत्वारि
द्वि०	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृ०	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
प०	"	"	"
ष०	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स०	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

'पञ्चन्' से लेकर 'दशन्' तक शब्द तीनों लिंगों में समान होते और सदा बहुवचन में होते हैं ।

### पंचन् ( पाँच )

प्र० पञ्च

### षष् ( छः )

प्र० षट्  
द्वि० "

ख्यावाची शब्द

६०	पञ्चभिः	६०	पट्भिः
७०	पञ्चभ्यः	७०	पट्भ्यः
८०	"	८०	"
९०	पञ्चानाम्	९०	पट्याम्
१००	पञ्चसु	१००	पट्सु, पट्सु
सप्तम ( सात )		अष्टम् ( आठ )	
११०	सप्त	११०	अष्टौ, अष्ट
१२०	"	१२०	" "
१३०	सप्तभिः	१३०	अष्टाभिः, अष्टाभिः
१४०	सप्तभ्यः	१४०	अष्टाभ्यः, अष्टाभ्यः
१५०	"	१५०	" "
१६०	सप्तानाम्	१६०	अष्टानाम्
१७०	सप्तसु	१७०	अष्टानु, अष्टसु
नवम् ( नौ )		दशम् ( दश )	
१८०	नव	१८०	दश
१९०	"	१९०	"
२००	नवभिः	२००	दशभिः
२१०	नवभ्यः	२१०	दशभ्यः
२२०	"	२२०	"
२३०	नवानाम्	२३०	दशानाम्
२४०	नवसु	२४०	दशानु
कति । कितना । शब्द		कति । कितना । शब्द	
२५०	कति शब्द भे निन्व जहवय ल ह	२५०	कति
२६०	"	२६०	कति

१०	कर्त्तव्यः
२०	कर्त्तव्यः
३०	"
४०	कर्त्तव्यम्
५०	कर्त्तव्य

### गणना

दस तक संख्याएँ ऊपर दी गई हैं। इनके आगे की संख्याएँ संख्यावाचक शब्दों का मिलाने से बनती हैं। यथा एक + दश = एकादश (ग्यारह), चतुर + दश = चतुर्दश (चौदह)।

द्वि, त्रि और अष्टन् जब अन्य शब्दों से मिलते हैं तो इनमें परिवर्तन हो जाने है। जैसे द्वि को द्वादश त्रि को त्रयोदश अष्टन् को अष्टादश—अष्टादश। पञ्चन्, सप्तन् आदि के लोप का लोप हो जाता है। दश के योग में एक को 'एका' हो जाता है एकादश। १६, २६, ३६, आदि की रचना में नव अथवा 'एकोन' प्रयोग किया जाता है। विद्यार्थियों के लिए इन संख्यावाचक शब्दों (Card nals) की तालिका नीचे दी जाती है।

संख्यावाचक शब्दों का एक और प्रकार भी है, जिसे क्रमवाचक अथवा पूरण (Ordinal) कहते हैं। एक, द्वि, त्रि, चतुर और पञ्च क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम पूरण बनते हैं। पञ्च तथा सप्तन् से दशन् तक की संख्याओं के पूरण 'न्' को 'म' करने से बनते हैं। दश के बाद एकादश आदि में कोई विकार नहीं है केवल विंशति आदि के दो रूप बनते हैं। एक तो अन्त में 'तम' लोप से—यथा विंशतितमः—दशम 'ति' का लोप करने से—यथा विंशतितमः आदि। संख्यावाचक शब्दों के साथ ही क्रमवाचक शब्द भी नीचे दिये जाते हैं। यहाँ इनके केवल पुल्लिङ्ग रूप ही दिये गये हैं।



अद्भु	मङ्गवावाचक	पूरण	
२५	पञ्चविंशतिः	पञ्चविंशतितमः	पञ्चविंशः
२६	षड्विंशतिः	षड्विंशतितमः	षड्विंशः
२७	सप्तविंशतिः	सप्तविंशतितमः	सप्तविंशः
२८	अष्टाविंशतिः	अष्टाविंशतितमः	अष्टाविंशः
२९	{ नवविंशतिः एकोनविंशन्	नवविंशतितमः एकोनविंशत्तमः	नवविंशः एकोनविंशः
३०	त्रिंशन्	त्रिंशत्तमः	त्रिंशः
३१	एकत्रिंशन्	एकत्रिंशत्तमः	एकत्रिंशः
३२	द्वात्रिंशन्	द्वात्रिंशत्तमः	द्वात्रिंशः
३३	त्रयस्त्रिंशन्	त्रयस्त्रिंशत्तमः	त्रयस्त्रिंशः
३४	चतुस्त्रिंशन्	चतुस्त्रिंशत्तमः	चतुस्त्रिंशः
३५	पञ्चत्रिंशन्	पञ्चत्रिंशत्तमः	पञ्चत्रिंशः
३६	षट्त्रिंशन्	षट्त्रिंशत्तमः	षट्त्रिंशः
३७	सप्तत्रिंशन्	सप्तत्रिंशत्तमः	सप्तत्रिंशः
३८	अष्टात्रिंशन्	अष्टात्रिंशत्तमः	अष्टात्रिंशः
३९	{ नवत्रिंशन् एकोनचत्वारिंशन्	नवत्रिंशत्तमः एकोनचत्वारिंशत्तमः	नवत्रिंशः एकोनचत्वारिंशः
४०	चत्वारिंशन्	चत्वारिंशत्तमः	चत्वारिंशः
४१	एकचत्वारिंशन्	एकचत्वारिंशत्तमः	एकचत्वारिंशः
४२	{ द्वाचत्वारिंशन् द्विचत्वारिंशन्	द्वाचत्वारिंशत्तमः द्विचत्वारिंशत्तमः	द्वाचत्वारिंशः द्विचत्वारिंशः
४३	त्रयश्चत्वारिंशन्	त्रयश्चत्वारिंशत्तमः	त्रयश्चत्वारिंशः
४४	चतुश्चत्वारिंशन्	चतुश्चत्वारिंशत्तमः	चतुश्चत्वारिंशः
४५	पञ्चचत्वारिंशन्	पञ्चचत्वारिंशत्तमः	पञ्चचत्वारिंशः
४६	षट्चत्वारिंशन्	षट्चत्वारिंशत्तमः	षट्चत्वारिंशः

संख्यावाची शब्द

४५	सप्तचत्वारिंशत्	सप्तचत्वारिंशत्तमः	सप्तचत्वारिंशत्
४८	अष्टचत्वारिंशत्	अष्टचत्वारिंशत्तमः	अष्टचत्वारिंशत्
५६	{ नवचत्वारिंशत् एकोनपञ्चाशत्	नवचत्वारिंशत्तमः एकोनपञ्चाशत्तमः	नवचत्वारिंशत् एकोनपञ्चाशत्
५०	पञ्चाशत्	पञ्चाशत्तमः	पञ्चाशत्
६०	षष्टिः	षष्टितमः	
७०	सप्ततिः	सप्ततितमः	
८०	अशीतिः	अशीतितमः	
९०	नवतिः	नवतितमः	
१००	शतम्	शततमः	
१०००	सहस्रम्	सहस्रतमः	
१००००	अयुतम्	अयुततमः	
१०००००	लक्षम्	लक्षतमः	

शत से अधिक संख्या बनाने के लिए 'अधिक' या 'उत्तर' शब्द प्रयोग किया जाता है।  
 यथा—१२५ = पञ्चविंशति + अधिक + शतम् = पञ्चविंशत्यधिक-  
 १, १६६ = नवनवत्युत्तरशतम्।  
 १५ के लिए संस्कृत शब्द 'पञ्चदशाधिकद्विशतम्' है। एवं ४३५ =  
 ४३५ = सप्तविंशत्यधिक-त्रिचत्वारिंशच्छताधिकनवशताधिकसहस्रम्।  
 इन में लेकर अष्ट दशान् पयन्त नव शब्द तथा नवदशान् शब्द  
 वचनान्त एव तातो लिङ्गो में एक समान होते हैं। एकोनविंशति  
 नवनवति पयन्त नव्यावाचक नव शब्द नदा एकोनविंशति  
 ननु इत नव क विनाशय एववचनान्त हा होते : यथा—  
 नव्यावाचक एकोनविंशते में लेकर नवनवते पयन्त नमन्  
 नवते विंशते पाष्टि समान अन्ति नवति अ दृक्कारान्त

शब्दों के रूप मति शब्द की तरह होते हैं और त्रिशत्, चत्वारि पंचाशत् आदि शब्दों के रूप भूमत् के समान होते हैं। किन्तु वे तीनों लिङ्गों के विरोध होते हैं, यथा—विरातिः बालकाः, बालिकाः विरानिः फलानि। शत, महस्र, अयुत, लक्ष आदि नपुंसकलिङ्ग में हैं उनके रूप फल शब्द के समान होते हैं। बोधक होने पर शतादि शब्दों का द्वियचन तथा बहुवचन भी हो सके है। यथा = द्शे शते ( दो सौ ) त्रीणि शतानि ( तीन सौ ) ।

### अभ्यास

१. ५५, ६३, ६४, १२६, २-५, ४६७, ७८६, ६६६, १६ १६६३, ३४३५२, २४४४३३ के संग्रहावाची शब्द लिखो ।

२. अनुवाद करो—

(क) मुक्त शिव फल दा। उमे मान पुस्तकें दो। मैं अपने नौम बारह रुपये प्रति मास देता हूँ। उसके दा पुत्र तथा तीन कन्याएँ। कुम्हार के नार भाई थे। वह पाँचों भाइयों में सबसे बड़ा था।

(ख) हम भोगी में दश गजक तथा चार कन्ये हैं पढ़ी हैं। ६ विद्यालय में ३३३६ छात्र तथा ३८८ प्रध्यापक हैं।

(ग) ये तीन फूल अति सुन्दर हैं। इन तीनों कन्याओं में कौन १ आगती है। रामचन्द्र २४ वर्ष तक पन में रह। भोगी में चौथी ६ की। ली है? महान पाँचवाँ भाई था।

३. छोटे वाक्य में छपे हुए शब्दों को स्थान करने हुए शब्दों के अर्थ लिखो।  
क) कन्या लिखे तु मय पद्य शत च न ।

अथ नर विवाह तु, तप शय नः शतम् ॥

(ख) पद्यवर्ति वपु वा शान्तिः शान्तिः ॥

अथ च शान्तिः च मः शान्तिः ॥

४. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों के अर्थ लिखो।

व्याप्तम् । ५. शान्तिः च शान्तिः ॥

- (६) तृणानि भूमिच्छकं वाक् चतुर्धा च दृशता ।  
एतान्परि सता गेदे, नोच्छिद्यन्तं कदाचन ॥
- (७) लालयेत् पञ्च वर्षाणि, दश वर्षाणि ताडयेत् ।  
प्राते तु षोडशे वर्षे, पुत्र मित्रवशाचरेत् ॥

## दशम अध्याय

### श्री-प्रत्यय

संस्कृत में पुंल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए चार मुख्य प्रत्यय हैं—श्री, ई, ऊ, ति । यद्यत् से बाला, पुत्र से पुत्री, श्वसुर के श्वश्रु तथा युवन से युवति ।

इन प्रत्ययों के सन्धन्व मे निश्चित नियम स्थिर नहीं किये जा सकते । क्यापि कुछ आवश्यक प्रयोग स्मरण रखे जा सकते हैं ।

श्री

१. अत्र आदि अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों में 'श्री' लगाने से स्त्रीलिङ्ग बन जाता है । यद्यत्—अज्ञा, अश्वा, चक्रा, कोशिता, वल्ता, कान्ता, गान्ता, पठिता इत्यदि ।

२. त्रिन शब्दों के अन्त में 'क' हो उनमें भी 'श्री' लगाने से स्त्रीलिङ्ग बनता है, साथ ही 'क' से पूर्व 'अ' को 'इ' हो जाता है ।  
श्री—

करिका पठिका पत्रिका परित्राजिका दर्शिका, मृषिका इत्यदि ।  
अन्धका अश्विनका कन्वका आदि कुछ शब्दों में 'क' से पूर्व 'अ' को 'इ' कहें ।

ई

गौर आदि अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों को 'ई' लगाने से



स्त्रीलिङ्ग धनता है। यथा—गौरी, सुन्दरी, मातामही, नर्तकी, पितामही, आदि।

इनके अनिश्चित कुमारी, क्षिरोरी, पुरी, माभिकी, चतुर्षी, बडोडशी, सादशी आदि शब्द भी ईकारान्त ही बनते हैं।

२. ह्रस्व ऋकारान्त, इन्द्रन्तरान्त, पन्, मन् प्रत्ययान्त, वन्, एयस्, अच् प्रत्ययान्त शब्दों को भी 'ई' लगाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनता है। यथा—

कवृ + ई = कवी

गन्तृ + ई = गन्त्री

मानिन् + ई = मानिनी

भवन् + ई = भवती

धलवन् + ई = धलवती

श्रीमन् + ई = श्रीमती

गरीयम् + ई = गरीयसी

श्रेयस् + ई = श्रेयसी

प्रत्यये + ई = प्रतीची

उदच + ई = उदीची

धीमन् + ई = धीमती

विद्वस् + ई = विदुषी

३. शत्रन्त शब्दों का स्त्रीलिङ्ग भी 'ई' प्रत्यय लगाने से बनता है। यथा—गच्छन्ती, परयन्ती, निष्ठन्ती, पिवन्ती, वदन्ती, स्मरन्ती, ज्ञिषन्ती, जाग्रन्ती, जुह्वन्ती, विभ्यन्ती, ददन्ती, नश्यन्ती, दीव्यन्ती, आशुषन्ती, इच्छन्ती, कुर्यन्ती, गृह्यन्ती, चोरयन्ती आदि।

४. जातिवाचक अकारान्त शब्दों के बाद भी 'ई' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनता है। यथा—प्राज्ञणी, मृगी, हंसी, काकी, एम्वरी, बकी, सिंही, विडाली, महिषी आदि।

५. गुणवाचक उकारान्त शब्दों के बाद 'ई' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनता है। यथा—गुरु—गुर्वी, मृदु—मृद्वी, साधु—साधुर्वी आदि।

६. इन्द्र आदि शब्दों के बाद भी 'ई' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनता है, माथ ही 'आन' का आगम भी हो जाता है। यथा—इन्द्राणी, वग्गानी मानुलानी तत्रियाणी आचार्याणी इत्यादि।

परन्तु स्वयं व्याख्यात्री (आप पढ़ाने वाली) के अर्थ में 'आ' प्रत्यय से 'आचार्य' रूप घनता है। इसी तरह उपाध्याय की स्त्री व्याख्यात्री तथा स्वयं व्याख्यात्री उपाध्याया कहलाती है। शूद्र की शूद्रा परन्तु वयं से शूद्र स्त्री शूद्रा कहलाती है।

ऊ प्रत्यय उकारान्त मनुष्यवार्त्ता शब्दों के पीछे लगता है। यथा—  
 वधू, पद्म, इत्यादि।

ति शब्द के साथ 'ति' प्रत्यय आता है और मध्य के न् का लोप होता है। युवन् + ति = युवति।

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीप्रत्ययान्त रूप बनाओ—  
 प्राचक, आचार्य, उपाध्याय, शूद्र, ब्राह्मण, भीमन्, बलन्, क्षीन्, वृत्, पति, बाक, ईश, पशु, पुत्रन्, मृग, तरुण, श्वन्, निह, मूषक।

- पाठ करो—  
 1) पर लक्ष्मी हमारे विद्यालय में पढ़ती है।  
 2) हमारी दोही बहुत सुन्दर है।  
 3) दिल्ली में कुर्दिया को पकड़ लिया।  
 4) नानी का दो बेटा भी मृनाली है।  
 5) पर आध्याय वही है।

... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..

दिनम् नृपस्यं पगस्यं भिक्षा ,

छात्रेः मैत्री मन्मथनात् ॥

(ग) इने भीमे इने डोणे, कर्णे न विदिये लो ।  
प्राया सत्तवणी रावन, गयो जेभणि पावडवान् ॥

(घ) कथं भूतानो गयो, जोगन्तो नृपमानि ॥  
मानुजान् गयो, या नारी सा मयोधना ॥

## एकादश अध्याय

### अव्यय ( Ind-variables )

मदां त्रिषु लिङ्गेषु सर्वानु न विभक्तिषु ।

पचनेषु च सर्वेषु घञ् कर्त्तव्यं तदव्ययम् ॥

अव्यय शब्द वे हे जो माना लिङ्गों में, साथ विभक्तियों में मय पचनों में एक समान रहते हैं, और कभः बदलते नहीं अव्यय शब्द क्रियाविरोधेषु आदि के रूप में प्रयुक्त होने हैं । \* में अव्यय घट्टन है । निम्न के प्रयोग में आने वाले कुछ अव्यय दिये जाते हैं ।

तत्र = वहाँ

अत्र = यहाँ

क. कुत्र = कहाँ

यत्र = जहाँ

सर्वत्र = मय जगद्

तदा = तब

कदा = कब

तव = ही

तवम् = तब तब

यदि = अगर

जानु = कदापिन्

तूष्णीम् = चुपचाप

नूनम् = निरचय से

परचान् = पाले

यदा = तब

सर्वदा = हमेशा

इदानीम् = अब

अनुना = अब

तदीनाम् = तत्र  
 यतः = क्योंकि  
 अतः = इत्यत्र  
 ततः = उसके गद्  
 यावन् = जब तक  
 तावन् = तब तक  
 कथम् = किन तरह  
 इत्यन् = इस तरह  
 यथा = जिन तरह  
 तथा = उन तरह  
 सर्वथा = सब तरह  
 अद्य = आज  
 वः = धान वना कल  
 : = बाना हुआ कल  
 = अग्न  
 : = बहुधा  
 = व्यर्थ  
 क् = अच्छी तरह  
 = एकदम  
 = थोड़ा  
 = इतने  
 = इतने  
 = इतने  
 = इतने  
 = इतने

सायम् = सायंकाल  
 अलम् = बल  
 विना = बिना  
 अथ = तब, अथ, पीछे, अनंतर  
 अथवा = अथवा  
 अर्था = भी  
 अहां = आश्चर्यसूचक  
 इव = समान  
 इति = यह, समाप्त  
 इह = यहाँ  
 उपर = ऊपर  
 शूनं = विना  
 किल = निश्चय से  
 खलु = निश्चय से  
 च = और  
 भ्रुवन = निश्चय से  
 धिक् = धिक्कार  
 न = नहीं  
 पृथक् = अलग  
 पुनः = फिर  
 इति = यह  
 वः = नमन  
 न = न  
 य = अथ  
 इति = यह सूचक शब्द

### अध्याय

१. अथवा का अनुष्ठान किया। यदि शक्य हो तो वा  
प्रयोग करो।

२. अनुवाद करो —

जहाँ मोहन का घर है वहाँ मेरा भी है। मूँ रात को कहीं  
वहाँ ही मरे पास तथा नहीं डरता \* जब सुपौंस्य होता है तब  
जाता है। अब हमारा देग निर्धन है।

विभक्तिविना इनामी के अर्थ किया और अथवा ए  
पदवाचो :—

(क) यथा नितं तथा वाचो, यथा वाच्यतया क्रिया ।

नितं वाचि क्रियायां च, 'मातृनामेकस्यवा ॥

(ख) यथा वाचं न विभेति, यथा आरमात्र विभ्यति ।

यथा नेकशक्ति न द्वेति, ननु सध्यती तदा ॥

(ग) यथात्र वाच्यं माता, तावत् तद्गतत्वानिधाः ।

निराध्याय हि निरुक्ति, निरोगत्वमह्यैः ॥

(घ) हृदयत्र चरित्यामि, यः कर्ताभ्यीनि वादिनम् ।

काश्चा ह्यति श्रयानो, नदीरेण इष इमम् ॥

(ङ) यथाहि कृ तांति तां नवति

इना महीमण्डलमवदनात् ।

ह्यनिन्दु वेत्त हि सयोगाश्वा

यथा म त्ति मह विप्र तोष ॥

(च) यथा न म तां नवति मतिशक्ति मतिशक्ति ।

यथा नवतवर्त, विभ्यति विभ्यति ॥

# द्वादश अध्याय उपसर्ग (Prefixes)

उपसर्ग भी अव्यय होते हैं।

उपसर्गों दन्वयो बलादन्यः प्रतीयते ।  
प्रकारऽकार-संसार-विहार-परिहारवन् ॥

अर्थात् उपसर्ग वे शब्दों हैं जो क्रिया के आदि में लगकर उनमें  
अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं और उनके अर्थ को बदल देते हैं।  
या—प्रहार = नारना, आहार = भोजन, संहार = नारा करना, विहार =  
खिलना, परिहार = दूर करना, आदि।  
उपसर्ग वे हैं—प्र, पर, अप, सम्, अनु, अव, निम्, निर,  
दुम्, दुर्, वि, आह्, नि, आदि, अदि, अवि, सु, उर्, अभि,  
वि, पवि, उप।

नीचे उपसर्गों के अर्थ लिखे जाते हैं :—

प्र = प्रकर्ष ( उल्कषणार्थ आदि )—प्रवृत्त, प्रभाव, प्रहार।  
पर = पीछे, विरुद्ध—पराजय, पराभव।  
अप = परे, दूर दुर्ग—अपनयन, अपमान, अपशब्द।

सम् = अच्छा, साथ, पुरा—संस्कार, सुगम, सम्प्राप।  
अनु = पीछे, नमान—अनुज, अनुचर, अनुकूप।  
अव = नीचे, हीन—अवगुण, अवतर, अवगति।

निम्, निर = निम्न, वर = निम्न, निर्दल, निर्गत।  
दुम्, दुर् = प्रकृत वर—दुम्बर, दुम्बर, दुम्बर।  
वि = विना, विना—विना, विना, विना।

अभि = आगे, अभि—अभि, अभि, अभि।  
उर् = ऊपर, उर्—उर्, उर्, उर्।  
सु = सुख, सु—सु, सु, सु।  
अवि = अवि, अवि—अवि, अवि, अवि।

अपवि = अपवि, अपवि—अपवि, अपवि, अपवि।  
अपवि = अपवि, अपवि—अपवि, अपवि, अपवि।  
अपवि = अपवि, अपवि—अपवि, अपवि, अपवि।

अभि = निरुद्ध इत्यम् — अभिधान, अभिदिन ।  
 अति = अविष्ट इत्यम् — अतिशय, अतिविष्ट ।  
 अम् = अस्मात्, अस्माकम् — अम्, अम्, अम् ।  
 उम् = उस्मात्, उस्माकम् — उम्, उम्, उम् ।  
 अम् = अम्, अम् — अम्, अम्, अम् ।  
 अम् = अम्, अम् — अम्, अम्, अम् ।  
 अम् = अम्, अम् — अम्, अम्, अम् ।  
 अम् = अम्, अम् — अम्, अम्, अम् ।

## त्रयोदश अध्याय

समान्य ( Compound )

दो या दो से अधिक पदों के साथ शब्दों के मिलने से जो स्वतंत्र शब्द बनता है वो हम महा को सामान्य कहा जाता है, और प्रकार मिले हुए शब्दों को समस्त अर्थात् सामान्यिक शब्द कहते हैं। समस्त शब्दों के बीच के विभक्ति-संबंध का सामान्यता का बोध जाता है।

समस्त शब्द को पुनः विभक्ति मरित पदों में पृथक् पृथक् रूपों का नाम विष्ट है। सामान्य के छः मुख्य भेद हैं—

- |              |              |
|--------------|--------------|
| १. अज्ययीभाव | ४. द्वन्द्व  |
| २. कर्मधात्व | ५. तन्पुत्र  |
| ३. द्विगु    | ६. बहुव्रीहि |

१ अज्ययीभाव ( A. J. Y. B. ) — अज्ययीभाव वह सामान्य जिसमें पूर्वपद अज्ययी हो। इसमें प्रथम पद ही प्रधानता होती है। समस्तपद भा अज्ययी हो जाता है और पदार्थ ही प्रधानता में होता है। जैसे—

समान प्रकरण

अशिममनिश्वर = यथाशक्ति

अथवा पश्चात् = अनुभव

नानाधाः सर्वाणि = उपमान

अथवा परोक्ष, अपरम्, अष्टमान् आदि भी इसी के उदाहरण हैं।

३. अनुमान (Anupama) अनुमान वह समान

विषयों के बीच के समानता को दर्शाता है। समान-अनुमान का अर्थ है कि दो पदों के बीच समानता है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है। समान-अनुमान का अर्थ है कि दो पदों के बीच समानता है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।

उदाहरण- अन्तर्गत अर्थ है कि अन्तर्गत ही अन्तर्गत है।



त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्

समाहार का अर्थ समूह है, प्रायः इसी अर्थ में द्विगु समास रचना होती है। द्विगु समास नपुंसकलिङ्ग अथवा स्त्रीलिङ्ग में षु होता है।

४. द्वन्द्व (Copulative)—जिस समास में प्रत्येक पद प्रधानता हो और विग्रह में 'च' का प्रयोग किया जाय वह द्वन्द्वमस है। यह तीन प्रकार का है—

१. इतरतर द्वन्द्व—जिसमें पृथक् पृथक् प्रत्येक पद का समान नर हो। जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ। कृष्णश्च अर्जुनश्च कृष्णार्जुनौ। यदि दो शब्दों से अधिक शब्द समस्त हों तो बहुवचन होगा। जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च = रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः। समस्त पद का लिङ्ग वही होता है जो अन्तिम शब्द का है।

२. समाहार द्वन्द्व—जिसमें समूह का महत्त्व हो, पृथक् पृथक् पद का नहीं। इसमें मिलने वाले शब्द चाहे किसी लिंग के क्यों हों समस्त पद नपुंसकलिङ्ग तथा एकवचनान्त हो जाता है। जैसे—पञ्च पादौ च = पाणिपादम्। अहिश्च नकुलश्च = अहिनकुलम्।

३. एकरोप द्वन्द्व—जहाँ दो पदों में से एक शेष रह जाय और दूसरे का अर्थ बोध करावे। जैसे माता च पिता च = पितरौ। स्वश्च स्वस्वश्च = स्वयुरौ। भ्राता च स्वसा च = भ्रातरौ। पुत्रश्च पुत्रिका च = पुत्रौ।

४. तत्पुरुष (Determinative)—जिसमें उत्तरपद की प्रधानता हो और विग्रह में द्वितीया से मन्त्री तक विभक्तियों का प्रयोग हो, तत्पुरुष समास है। इसके छः भेद हैं। विग्रह करते समय जो विभक्ति लगाई जाय उमां के अनुसार इसका भेद किया जाता है।

द्वितीया तत्पुरुष—ग्रामं गत = ग्रामगतः

नरक पतित = नरकपतितः

दुःस्वप्न अगत = दुःस्वप्नगतः

सुतीया तदुत्प—दुर्गिशा प्राणः = दुर्गिप्राणः  
नदी निताः = नदीनिताः

सुतीया तदुत्प—दृषाय दृशः = दृषदृशः  
इपनाय नानमी = इपनानानमी

पद्मनी तदुत्प—धनाय धनः = धनधनः  
वीर्याय वीर्यः = वीर्यवीर्य

सुतीया तदुत्प—गंगायाः जलम् = गंगाजलम्  
राज. सुतः = राजसुतः

सुतीया तदुत्प—प्राणायामः = प्राणायामः  
वि. पदाः = वि. पदाः

सुतीया तदुत्प—सुतः = सुतः  
सुतः निरुत्प. = सुतः निरुत्प.

सुतीया तदुत्प—सुतः = सुतः  
सुतः = सुतः

सुतीया तदुत्प—सुतः = सुतः  
सुतः = सुतः

सुतीया तदुत्प—सुतः = सुतः  
सुतः = सुतः

सुतीया तदुत्प—सुतः = सुतः  
सुतः = सुतः

सुतीया तदुत्प—सुतः = सुतः  
सुतः = सुतः

चतुर्थी अलुक् = परस्मैपदम्  
 पंचमी अलुक् = स्तोत्रान्मुक्तः  
 षष्ठी अलुक् = वाचस्पतिः  
 सप्तमी अलुक् = युधिष्ठिरः

संस्कृत में तत्पुरुष समास का बहुत प्रयोग पाया जाता है।

बहुव्रीहि (Poar-e-vive)—जिस समास में पूर्व अथवा उत्तर पद भी प्रधान न हो बल्कि अन्य पद की प्रधानता हो और जिस 'यन्' शब्द के द्विमी रूप का प्रयोग होता हो वह बहुव्रीहि कहा जाय। यह समास शब्द सदा विशेषण होता है। हिन्दी में अर्थ करने पर 'बाला' का भाव पाया जाता है। यथा—

पीतम् अन्वरं यस्य सः = पीताम्बरः  
 चक्रं पाण्डुं यस्य सः = चक्रपाणिः  
 न विद्यमानः पुत्रः यस्य सः = अपुत्रः  
 विमलम् उदकं यस्मिन् तद् = विमलोदकम्  
 निर्गतं भयं यस्मात् सः = निर्भयः

इस यथा 'मह' के अर्थ प्रकाशित होने पर भी बहुव्रीहि होता है। यथा—चन्द्रस्य प्रभा इय प्रभा यस्याः सा = चन्द्रप्रभा । मह = सपुत्रः ।

बहुव्रीहि समास में पदान्त 'त्' तथा 'ई' के बाद प्रायः ३ के लिये 'क' लगाया जाता है। यथा—सभर्तृका, मर्त्य इत्यादि ।

कई समास पदों में विभक्त करने पर अर्थानुसार दो-दो समास होते हैं। यथा 'महाबाहुः' का महात्वाद् 'बाहु यस्य सः' यह विभक्त जाय ना बहुव्रीहि समास होगा। परन्तु 'महाविद्यामी बाहुः' यदि विभक्त किया जाय ना कर्मवाच्य समास होगा ।



राज्य-अभिप्रेक चाहती थी। उसने अपने पति से पहले दिये हुए दो मणि। एक से राम का वन में रहना, दूसरे से भरत का अभिप्रेक। धीरे-धीरे वर्षों के लिए वन की चले गये। राम की पत्नी सती सीता भी वन गई। राम का अनुज लक्ष्मण भी अपने भाई की सेवा के लिए वन-वास गया।

३. ममत्त शब्दों के निग्रह करने हुए भिन्न शक्तियों के अर्थ जितने :-

(क) अनेकमंशयोच्छेदि, परोक्षार्थस्य दर्शकम् ।

सर्वेषु लोचनं शास्त्रं, यस्य नाम्निन्ध एव मः ॥

(ख) सुम्भार्यो यस्यत्रेद्विधा विद्यार्थो वा त्यजेत् सुखम् ।

सुर्यार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ॥

(ग) योषिद्धिरस्याभरणान्धरादि-

द्रव्येषु मायारचितेषु मूढः ।

प्रलोभिनात्मा ह्युपभोगबुद्धया

पतंगरत् नश्यति नष्टबुद्धिः ॥

(घ) अग्निम् महामोहमये कगाहे

सूर्याग्निना रात्रिद्वियेन्धनेन ।

मामर्तुर्दर्यापरिघट्टनेन

भूतानि कालः पचतीति वार्ता ॥

(ङ) गेगशोऽपस्तिपवन्धनव्यमनानि च ।

अत्मापराधपृच्छाणां कृत्वायेतानि देहिनाम् ॥

(च) अचिन्त्यरूपो मगधात्रिपुञ्जो विश्वम्भरो ज्ञानमयविषदात्

विशोक्तो देव ह्य- अणु नो दृगा गतं तस्य नरस्य कीर्तितम्

नो—उपरि-निम्न शक्तियों में जहाँ जहाँ मन्त्रि है, वहाँ मन्त्रिच्छेद भी

# चतुर्दश अध्याय

## धातु-प्रकरण

( Conjugation of Verbs )

१. धातु तथा लकार—

संस्कृत में क्रिया शब्दों को धातु कहते हैं। धातुओं के रूप दश लकारों ( Tenses and Moods ) में बनते हैं। परन्तु मुख्य लकार निम्नलिखित पाँच ही हैं :—

१. लट्	वर्तमान	Present Tense
२. लृट्	भविष्यन्	Second Future
३. लाट्	आज्ञा	Imperative Mood
४. लङ्	भूतकाल	Past Imperfect
५. विधिलिङ्	विधि	Potential Mood

इन्हीं लकारों में धातुओं के रूप यहाँ लिखे जाएँगे।

२. गण—धातुओं की रचना के अनुसार दस भागों में बाँटा गया है। ये दस गण निम्नलिखित हैं—

भ्वादिगण—जिसमें धातुओं के रूप 'भू' धातु की तरह होते हैं।	'भू'	"	"	"	"
अदादिगण " " " " " "	'अद्'	"	"	"	"
जुहोत्यादिगण " " " " " "	'हु'	"	"	"	"
दिवादिगण—जिसमें धातुओं के रूप दिव् धातु की तरह होते हैं।	'दिव्'	"	"	"	"
त्वादिगण— " " " " " "	'त्व'	"	"	"	"
इदादिगण— " " " " " "	'इद्'	"	"	"	"
धृदिगण— " " " " " "	'धृ'	"	"	"	"
त्वादिगण— " " " " " "	'त्वा'	"	"	"	"
इदादिगण— " " " " " "	'इद्'	"	"	"	"
त्वादिगण— " " " " " "	'त्वा'	"	"	"	"

विभक्तिः

प्र० पु०	भवे	भवेत्	भवेत्
म० "	भवेः	भवेम	भवेम
उ० "	भवेयम्	भवेय	भवेय

भाष्य—सट्—भूयो, लृट्—भविष्यते, लोट्—भूय  
 लृट्—भूम्यन् आदि ।

प्रेरणायं च रूप—भाष्यम् ।

कृष्ण—क—भूः ( पुं० ) लृट्—भूयान् ( पुं० ) । क्त  
 भूया, भुम्—भविष्यन् लृट्—भविष्य, अनोय—मयनीय, इ  
 भव्य, शृत्—भवन् ( पुं० ) ।

भिन्न भिन्न उपसर्गों के योग में धातुओं के भिन्न भिन्न  
 हो जाते हैं । यथा—

- प्र + भू—प्रभवति = उत्पन्न होता है ।
- परा + भू—परभवति = पराजित करना है ।
- अनु + भू—अनुभवति = अनुभव करना है ।
- सम् + भू—सम्भवति = सम्भव होता है ।
- प्रादुर् + भू—प्रादुर्भवति = प्रकट होता है ।

हम् ( ईमना )

लट्

प्र० पु०	हसति	हमतः	हसन्ति
म० "	हसमि	हमयः	हसथ
उ० "	हसामि	हमावः	हसाव

लृट्

प्र० पु०	हमिष्यति	हमिष्यतः	हमिष्यन्ति
म० "	हमिष्यामि	हमिष्यथ	हमिष्यथ
उ० "	हमिष्यामि	हमिष्यावः	हमिष्यावः

धातु प्रकरण

प्र. पु०	हन्तु, हन्तवान्	लोट्	हन्तवाम्	हन्तन्तु
नः "	हन्त. हन्तवान्		हन्तवम्	हन्तव
उ० "	हन्तानि		हन्ताव	हन्तान
प्र० पु०	अहन्त्	लङ्	अहन्तवाम्	अहन्तन्तु
नः "	अहन्तः		अहन्तवम्	अहन्तव
उ० "	अहन्तम्		अहन्ताव	अहन्तान
प्र० पु०	हन्ते	विधिलिङ्	हन्तेवाम्	हन्तेयुः
नः "	हन्तः		हन्तवम्	हन्तव
उ० "	हन्तम्		हन्ताव	हन्तान

भाववाच्य—लट् हन्तवन्तः ।  
 प्रेरणादायक रूप—हन्तयति आदि ।  
 कृदन्त—क—हन्तिवम् (नपुं०) क्तवतु—हन्तिववान् (पुं०). क्त्वा—  
 क्त्वा. तुम्—हन्तितुम्. तन्वन्—हन्तिवन्व, अन् व—हन्तनाय. शतृ—  
 न (पुं०) ।

पठ ( पठना )

पठति	लट्	
पठन्त	पठन्	
पठन्ति	पठन्थ	पठन्ति
	पठन्व	पठन्व
	पठन्	पठन्
	पठन्	पठन्
	पठन्	पठन्
	पठन्	पठन्



•

•

•



त्वा तुम्—वस्तुम् गच्छन्—वच्छन् अनीह—नपनीह इह—  
इह (पुं.) शानम्—पश्यमान ।

### नम् ( कुरुना )

सट्

प्र० पु०	नमन्ति	नमन्तः	नमन्ति
म०	नममि	नममथः	नममथ
उ०	नमामि	नमाथः	नमामः

सृट्

प्र० पु०	नंस्यन्ति	नंस्यन्तः	नंस्यन्ति
म०	नस्यमि	नस्यथः	नस्यथ
उ० ..	नस्यामि	नस्याथः	नस्यामः

लोट

प्र० पु०	नमन्तु नमन्तान्	नमन्ताम्	नमन्तु
म० ..	नम नमन्तान्	नमन्तम्	नमन्त
उ० ..	नमानि	नमाथ	नमाम

लृट्

प्र० पु०	अनमन्तु	अनमन्ताम्	अनमन्तु
म० ..	अनमः	अनमन्तम्	अनमन्त
उ० ..	अनमाम्	अनमाथ	अनमाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नमेन्तु	नमेन्ताम्	नमेयुः
म०	नमं:	नमेन्तम्	नमेन्त
उ०	नयेथम्	नमेथ	नमेन्

भाववाच्य—लोट—नस्यन्त

सृट्—नस्यन्त

लोट—नस्यताम्

ट्—अनस्यन्त ।

शब्द प्रकरण

प्रैर्यायं कल्प-ननयति  
 इदन्त-क-नतः ( पुं० ) सत्यतु-नतवान् ( पुं० ) स्व  
 त्वा. तुम्-नन्तुम् तन्वन्-नन्तव्य. तन्वाय-ननवाय स्व  
 नन् ( पुं० ) ।

गम् ( गच्छ् ) — ( जाना )

प्र. पुं०	गच्छति	लट्	गच्छतिः	गच्छन्ति
म० "	गच्छामि		गच्छथः	गच्छथ
त. "	गच्छामि		गच्छथ्वः	गच्छथ्वः
प्र. पुं०	गमिष्यति	लृट्	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म० "	गमिष्यामि		गमिष्यथः	गमिष्यथ
त. "	गमिष्यामि		गमिष्यथ्वः	गमिष्यथ्वः
प्र. पुं०	गच्छतु	लोट्	गच्छतुः	गच्छतुः
म० "	गच्छतु		गच्छतुः	गच्छतुः
त. "	गच्छतु		गच्छतुः	गच्छतुः
प्र. पुं०	गच्छामि	लृट्	गच्छामिः	गच्छामिः
म० "	गच्छामि		गच्छामिः	गच्छामिः
त. "	गच्छामि		गच्छामिः	गच्छामिः
प्र. पुं०	गच्छामि	लृट्	गच्छामिः	गच्छामिः
म० "	गच्छामि		गच्छामिः	गच्छामिः
त. "	गच्छामि		गच्छामिः	गच्छामिः

प्रेरणार्थक रूप—गमयति ।

कृदन्त—क—गतः ( पुँ ) . तत्त्वतु—गतवान् ( पुँ० ) . क्त्वा-  
गत्वा . तुम्—गन्तुम् . तज्यन्—गन्तव्य . शर्नीय—गमर्नीय , शन्-  
गच्छन् ( पुँ० ) ।

उपसर्गों के योग में—

अधि + गम्—अधिगच्छति = प्राप्त करना है ।

अव + गम्—अवगच्छति = जानना है ।

आ + गम्—आगच्छति = आना है ।

अनु + गम्—अनुगच्छति = पीछे चलना है ।

निर् + गम्—निर्गच्छति = निकलना है ।

दृश् ( पश्य् )—( देखना )

		लट्	
प्र० पु०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म० "	पश्यमि	पश्यथः	पश्यथ
उ० "	पश्यामि	पश्याथः	पश्याम.

		लृट्	
प्र० पु०	द्रुष्यति	द्रुष्यतः	द्रुष्यन्ति
म० "	द्रुष्यमि	द्रुष्यथः	द्रुष्यथ
उ० "	द्रुष्यामि	द्रुष्याथ	द्रुष्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	पश्यन्तु पश्यन्तान्	पश्यन्ताम्	पश्यन्तु
म०	पश्य पश्यतान्	पश्यताम्	पश्यन्त
उ०	पश्यान्ति	पश्याथ	पश्याम

		लङ्	
प्र० पु०	अपश्यन्	अपश्यन्ताम्	अपश्यन्तु

धातु प्रकरण

न० पु०  
३० "

अपरयः  
अपरयन्

अपरयतम्  
अपरयाव

अपरय  
अपरया

प्र० पु०  
न० "  
३० "

परयेन्  
परयेः  
परयेन्म

विधिलिङ्  
परयेताम्  
परयेतम्  
परयेव  
लृट् - द्रव्यन्

परयेयुः  
परयेन्  
परयेन्म

लोट् - द्रव्यन्

कर्मवाच्य - लट् द्रव्यन्  
लट् - अद्रव्यन् ।

प्रेरणार्थक रूप - द्रायति ।

कृदन्त - कृ - दृष्टः (पुं०) ।

तुन - द्रष्टुम्, तव्यन् - द्रष्टव्य, क्ववतु - दृष्टवान् (पुं०) क्त्वा - दृष्ट्वा  
अर्नाय - दर्शनाय शन् - परयन् (पुं०)

मइ ( नीट् ) - ( बैठना, दुःखी होना )

प्र० पु०  
म० "  
३० "

सांदिनि  
सांदिमि  
सांदिमि

लट्  
सांदिनः  
सांदिथः  
सांदिवाव

सांदिनि  
सांदिथ  
सांदिानः

प्र० पु०  
म० "  
३० "

मन्त्यनि  
मन्त्यमि  
मन्त्यमि

लृट्  
मन्त्यन्  
मन्त्यथ  
मन्त्यवाव

मन्त्यनि  
मन्त्यथ  
मन्त्यान्

सांदि

सांदिन्म

सांदिन्म

सांदिन्म

सांदिन्म

सांदिन्म

सांदिन्म

सांदिन्म

सांदिन्म

सांदिन्म

लङ्

प्र० पु०	अमीदन्	अमीदताम्	अमीदन्
म० "	अमीदः	अमीदताम्	अमीदन्
उ० "	अमीदन्	अमीदाय	अमीदाम्

विधिलिङ्

प्र० पु०	मीदेन्	मीदेताम्	मीदेयुः
म० "	मीदेः	मीदेताम्	मीदेन्
उ० "	मीदेयम्	मीदेव	मीदेम

माशवाच्य—( लट् )—मीदते लृट्—मल्लयते लोट्—मीदताम्

लृट्—असीदत ।

प्रेरणार्थक रूप—मादयति ।

कृदन्त—क्त—सन्न ( पु० ) कथतु—मन्त्रयान् ( पु० ), क्त्वा—

सत्त्वा तुम्—मत्तुम् तद्व्यय—मन्त्रय, राग—मीदन् ( उ० )

उपमर्गों के योग से—

नि + मद्—निपीदति = बैठता है

प्र + मद्—प्रसीदति = प्रसन्न होना है

वि + मद्—विपीदति = दुःखी होता है ।

स्था ( तिष्ठ् )—( ठहरना )

लट्

प्र० पु०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
म० "	तिष्ठमि	तिष्ठथ	तिष्ठथ
उ० "	तिष्ठामि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लृट्

प्र० पु०	स्थाम्यति	स्थाम्यत	स्थास्यन्ति
म० "	स्थाम्यमि	स्थाम्यथ	स्थास्यथ
उ० "	स्थाम्यामि	स्थास्याव	स्थास्याम





		लृट्		
प्र० पु०	स्मरिष्यति		स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
म० "	स्मरिष्यसि		स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उ० "	स्मरिष्यामि		स्मरिष्यावः	स्मरिष्यान्ः

लोट्

प्र० पु०	स्मरतु स्मरतान्	स्मरताम	स्मरन्तु
म० "	स्मर, स्मरतान्	स्मरतम	स्मरत
उ० "	स्मराणि	स्मराथ	स्मराम

लङ्

प्र० पु०	अस्मरन्	अस्मरताम	अस्मरन्
म० "	अस्मरः	अस्मरतम	अस्मरत
उ० "	अस्मरम	अस्मराथ	अस्मराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्मरेत्	स्मरेताम	स्मरेयुः
म० "	स्मरेः	स्मरेतम	स्मरेत्
उ० "	स्मरेयम्	स्मरेथ	स्मरेथ

कर्मवाच्य—लृट्—स्मर्यते लृट् स्मरिष्यते, लोट्—स्मर्यताम्  
लङ्—अस्मर्यते ।

प्रेरणार्थक—स्मारयति ।

कृदन्त—क्त—स्मृत. ( पु० ) क्तवतु—स्मृतवान् ( पु० ) क्त्वा—  
स्मृत्वा। तुमुन् - स्मृतुम् क्तवन्—स्मर्तव्य अर्नाथ—स्मरणीय शन—  
स्मरन् ( पु० ) ।

उपसर्ग के योग मे—

वि + स्मर—विस्मरति = भुजता है ।

पा ( पिप् ) ( पीना )

लट्

प्र. पु.

पिबान्

पिबन्

पिबन्ति



म० पु०	जयमि	जयथः	जयय
उ० "	जयामि	जयावः	जयामः

लृट्

प्र० पु०	जेध्यति	जेध्यतः	जेध्यन्ति
म० ..	जेध्यसि	जेध्यथः	जेध्यथ
उ० ..	जेध्यामि	जेध्यावः	जेध्यामः

लोट्

प्र० पु०	जयतु, जयतान्	जयताम्	जयन्तु
म० ..	जय, जयतान्	जयतम्	जयत
उ० ..	जयानि	जयाथ	जयाम

लङ्

प्र० पु०	अजयन्	अजयताम्	अजयन्
म० ,	अजयः	अजयन्तम्	अजयत
उ०	अजयम	अजयाथ	अजयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जयेन्	जयेताम्	जयेयुः
म० ..	जयेः	जयेन्तम्	जयेन्
उ० ..	जयेयम	जयेथ	जयेम
कर्मधारय—लट्—जीयते.	लृट्—जेध्यते.	लोट्—जीयताम्	

लङ्—अजीयत ।

श्रेणार्थक रूप—जाययति ।

कृदन्त—कृ—जितः ( पुं० ) कृधतु—जितवान् ( पुं० ) क्त्वा—जित्वा, तुमुन्—जेतुम्, लृङ्—जेतव्यं सन्—जयन् ( पुं० ) ।

उपसर्गों के योग में

धि + जय—विजयते = जितना है ।

परा + जय—पराजयते = हारना या हराना है ।

ग) आन्तर्गत धानु  
नैव ( नैवा कर्मा )

क्र.सं.	विवरण	प्र.सं.	प्र.सं.	प्र.सं.	प्र.सं.	प्र.सं.
1	संघत	1	1	1	1	1
2	संघत	2	2	2	2	2
3	संघत	3	3	3	3	3
4	संघत	4	4	4	4	4
5	संघत	5	5	5	5	5
6	संघत	6	6	6	6	6
7	संघत	7	7	7	7	7
8	संघत	8	8	8	8	8
9	संघत	9	9	9	9	9
10	संघत	10	10	10	10	10
11	संघत	11	11	11	11	11
12	संघत	12	12	12	12	12
13	संघत	13	13	13	13	13
14	संघत	14	14	14	14	14
15	संघत	15	15	15	15	15
16	संघत	16	16	16	16	16
17	संघत	17	17	17	17	17
18	संघत	18	18	18	18	18
19	संघत	19	19	19	19	19
20	संघत	20	20	20	20	20
21	संघत	21	21	21	21	21
22	संघत	22	22	22	22	22
23	संघत	23	23	23	23	23
24	संघत	24	24	24	24	24
25	संघत	25	25	25	25	25
26	संघत	26	26	26	26	26
27	संघत	27	27	27	27	27
28	संघत	28	28	28	28	28
29	संघत	29	29	29	29	29
30	संघत	30	30	30	30	30
31	संघत	31	31	31	31	31
32	संघत	32	32	32	32	32
33	संघत	33	33	33	33	33
34	संघत	34	34	34	34	34
35	संघत	35	35	35	35	35
36	संघत	36	36	36	36	36
37	संघत	37	37	37	37	37
38	संघत	38	38	38	38	38
39	संघत	39	39	39	39	39
40	संघत	40	40	40	40	40
41	संघत	41	41	41	41	41
42	संघत	42	42	42	42	42
43	संघत	43	43	43	43	43
44	संघत	44	44	44	44	44
45	संघत	45	45	45	45	45
46	संघत	46	46	46	46	46
47	संघत	47	47	47	47	47
48	संघत	48	48	48	48	48
49	संघत	49	49	49	49	49
50	संघत	50	50	50	50	50

प्रेरणार्थक रूप—सेवयति सेवयते

शुद्धन्त—क्त—सेवितः (पुं०); क्तवन्तु—सेविन्वान (पुं०)

कृत्वा—सेवित्वा, तुम्—सेवितुम्, तद्यन्—सेवितव्यः (पुं०), अतीव  
सेवनायः (पुं०), शानच्—सेवमानः (पुं०) ।

### लभ् ( पाना )

लट्

प्र० पु०	लभन्त	लभेते	लभन्ते
म० "	लभमे	लभेथे	लभध्वे
उ० "	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट्

प्र० पु०	लप्स्यन्ते	लप्स्यन्ते	लप्स्यन्ते
म० "	लप्स्यमि	लप्स्यथे	लप्स्यध्वे
उ० "	लप्स्ये	लप्स्यथिहे	लप्स्यामहे

लोट्

प्र० पु०	लभन्ताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० "	लभाम्य	लभेयाम्	लभध्वाम्
उ० "	लभे	लभाथिहे	लभामहे

लङ्

प्र० पु०	अलभन्त	अलभेताम्	अलभन्त
म० "	अलभाम्यः	अलभेयाम्	अलमध्वाम्
उ० "	अलभे	अलभाथिहि	अलभामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	लभन्त	लभयन्ताम्	लभरन्त
म० "	लभथ	लभयाथाम्	लभथ्यम्
उ० "	लभय	लभयथिहि	लभयामहि

कर्मवाच्य—लट्—लभ्यते. लृट्—लप्स्यते. लोट्—लभ्यताम्,  
लृट्—अलभ्यत ।

प्ररणार्थक रूप—लम्भयति, लम्भयते ।

कृदन्त—कृ—लब्धः ( पुं० ); क्तवतु—लब्धवान् ( पुं० ),  
क्त्वा—लब्ध्या, तुम्—लब्धुम्, तव्यन्—लब्धव्यः ( पुं० ), अनीय  
लभनीयः ( पुं० ), शानच्—लभमानः ( पुं० ) ।

### घृत् ( होना )

लट्

प्र० पु०	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
म० ..	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उ० ..	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लृट्

प्र० पु०	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
म० ..	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उ० ..	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे ।

लोट्

प्र० पु०	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
म० ..	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उ० ..	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लृट्

प्र० पु०	अवर्तन	अवर्तनाम्	अवर्तन्त
म० ..	अवर्तथाः	अवर्तथाम्	अवर्तध्वम्
उ० ..	अवर्ते	अवर्तावहे	अवर्तामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	वर्तेत	वर्तेयानाम्	वर्तेतन्
----------	--------	-------------	----------

म० पु०	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेष्वम्
उ०	वर्तेथ	वर्तेवहि	वर्तेमहि
भाववाच्य—लट्—वृत्त्यते, लृट्—वर्तिष्यते, लोट्—वृत्त्यमान			
लड्—अवृत्त्यत ।			

प्रेरणार्थक रूप—वर्तयति, वर्तयते ।

कृदन्त—क्त—वृत्तम् ( नपु० ), क्तवतु—वृत्तवान् ( पुं० ), क्त्वा—वृत्त्वा—अतित्वा, तुम्—वर्तितुम्, तव्यन्—वर्तितव्यम् ( नपु० ), अर्नान्—वर्तेनीयम् ( नपु० ), शानच्—वर्तेमानः ( पु० ) ।

### वृष् ( वदना )

लट्

प्र० पु०	वधते	वधेते	वधन्ते
म०	वधमे	वधेधे	वधेष्वे
उ०	वधे	वधावहे	वधामहे

लृट्

प्र० पु०	वधिष्यते	वधिष्येते	वधिष्यन्ते
म०	वधिष्यसे	वधिष्येधे	वधिष्येष्वे
उ०	वधिष्ये	वधिष्यावहे	वधिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	वधंताम्	वधेताम्	वधन्ताम्
म०	वधंस्व	वधेथाम्	वधेष्वम्
उ०	वधे	वधावहे	वधामहे

लड्

प्र० पु०	अवधंत	अवधेताम्	अवधन्त
म०	अवधंथा	अवधेथाम्	अवधेष्वम्
उ०	अवधे	अवधावहि	अवधामहि





म० पु०	अमोदयाः	अमोदयाम्	अमोदध्वम्
उ० "	अमोदे	अमोदावहि	अमोदानहि
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	मोदेत्	मोदेयाताम्	मोदेरन्
म० "	मोदेयाः	मोदेयायाम्	मोदेध्वम्
उ० "	मोदेय	मोदेयहि	मोदेमहि
	भावधाच्च—लट्—बुधते,	लृट्—मोदिष्यते,	लोट्—मुदयाम्

लृट्—अमुच्यते ।

प्रेरणार्थक रूप—मोदयति, मोदयते ।

कृदन्त—कृत—मोदितः-मुदिनः (पु०), क्वतु—मोदितवान्-मुदित्वा (पु०), क्त्वा—मोदित्वा-मुदित्वा, तुन्—मोदितुम्, तन्वन्—मोदितव्यः (पु०), अनोप—मोदनोयः (पु०), शानच्—मोदमानः (पु०) ।

उपसर्ग के योग में

अनु + मुद्—अनुमोदते = समर्थन करता है ।

सद् ( सहन करना )

		लट्	
प्र० पु०	सहते	सहते	सहन्ते
म० "	सहसे	सहसे	सहध्वे
उ० "	सहे	सहावहे	सहामहे
		लृट्	
प्र० पु०	सदिष्यते	सदिष्येते	सदिष्यन्ते
म० "	सदिष्यसे	सदिष्यसे	सदिष्यध्वे
उ० "	सदिष्ये	सदिष्यावहे	सदिष्यामहे
		लोट्	
प्र० पु०	सहताम्	सहताम्	सहन्ताम्

म० पु०	माह्व	महेषाम्	मह्व्यम्
३० ..	माह्वे	महावर्हे	मह्वानर्हे
		लट्	
५० पु०	अमह्व	अमह्वताम्	अमह्वन्
म० ..	अमह्व्याः	अमह्व्याम्	अमह्व्यम्
३० ..	अमह्वे	अमह्व्यादि	अमह्व्यादि

विधिलिङ्

५० पु०	माह्वे	माह्वेताम्	माह्वेन्
म० ..	माह्व्याः	माह्व्याम्	माह्व्यम्
३० ..	माह्वे	माह्व्यादि	माह्व्यादि

बर्भक्षान्त—लट्—माह्वे, लृट्—माह्विष्यते, लोट्—माह्वन्

लृट्—अमह्वन् ।

प्रत्ययार्थ इत्—माह्व्याति, माह्व्यते ।

हृह्वन्—प्र—माह्वे, माह्वितः (पुं०), माह्वन्—माह्वेताम्, माह्वित्वा  
 (पुं०), माह्वन्—माह्व्याः, माह्वित्वा ह्वन्—माह्व्याम्, माह्वित्वा ह्वन्  
 माह्व्यान् माह्वित्वा ह्वन् (लृट्) अमह्वे—अमह्व्याम् (लृट्)  
 शान्त—माह्व्यान् (पुं०) ।

इत् ( देवता )

५	५	इत्	इत्	इत्
६		इत्	इत्	इत्
७		इत्	इत्	इत्
८		इत्	इत्	इत्
९		इत्	इत्	इत्
१०		इत्	इत्	इत्
११		इत्	इत्	इत्
१२		इत्	इत्	इत्

		लोट्	
प्र० पु०	ईशानाम्	ईशेनाम्	ईशान्नाम्
म० ..	ईशस्य	ईशेथाम्	ईशस्यम्
ब० ..	ईशे	ईशावहे	ईशामहे

		लृट्	
प्र० पु०	गन्तव्य	गन्तेनाम्	गन्तव्यम्
म० .	गन्तव्याः	गन्तेथाम्	गन्तव्यम्
ब० .	गन्तव्ये	गन्तावहि	गन्तामहि

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	इनेन	इनेषानाम्	इनेरेन
म०	इनेषाः	इनेषथाम्	इनेष्यम्
ब०	इनेषु	इनेष्वहि	इनेमहि

कान्तव्याय लट्—इत्येव लृट्—इतिग्याय, लाट्—इत्येवाम्  
 लृक्—इत्येव

इत्येव इत्येव—इत्येव हि इत्येव-इ ।

इत्येव—इत्येव—इत्येव (पुं०) इत्येव—इत्येवपान (पुं०) इत्येव—  
 इत्येव पुन—इत्येवपान इत्येव इत्येवपान (पुं०) इत्येव—  
 इत्येवपान (पुं०) इत्येव—इत्येवपान (पुं०) ।

इत्येव इत्येव—

इत्येव इत्येव—इत्येव इत्येव इत्येव ।

इत्येव इत्येव—इत्येव इत्येव इत्येव ।

इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव ।

इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव इत्येव ।



प्र० पु०	याचसे	याचेये	याचधे
स० ॥	याचे	याचायदे	याचामदे

लृट्

प्र० पु०	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
स० ॥	याचिष्यसे	याचिष्येये	याचिष्यध्वे
स० ॥	याचिष्ये	याचिष्यायदे	याचिष्यामदे

लोट्

प्र० पु०	याचताम्	याचेंताम्	याचन्ताम्
स० ॥	याचस्व	याचेष्याम्	याचध्वम्
स० ॥	याचै	याचावदे	याचामदे

लङ्

प्र० पु०	अयाचत	अयाचेंताम्	अयाचन्त
स० ॥	अयाचथाः	अयाचेंयाम्	अयाचध्वम्
स० ॥	अयाचै	अयाचावदि	अयाचामदि

विधिलिङ्

प्र० पु०	याचंत्	याचेंयताम्	याचेंत्
स० ॥	याचंथाः	याचेंयथाम्	याचेंध्वम्
स० ॥	याचंथ	याचेंमदि	याचेंमदि

हमंयाचत—लृट्—याचयंत लृट्—याचिष्यंत, लोट्—याच्यताम्

अच—अयाचयत ।

याच्यते ङ रूप—याचयति, याचयत ।

चन्त—लृट्—याचिनः (पुं०) चन्तु—याचिनचान (पुं०)

चन्त—याचिन्ता वृत्—याचिन्तुम् चन्तय याचिनच्य (पुं०)

चन्तय याचनीय (पुं०) चन्त—चन्तय (पुं०) चन्तय—याच

चन्तय ।



म० पु०	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ० ॥	नये	नयावहे	नयामहे
प्र० पु०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म० ॥	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ० ॥	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

लृट्

प्र० पु०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म० ॥	नयस्य	नयेथाम्	नयध्वम्
उ० ॥	नये	नयावहे	नयामहे

लोट्

प्र० पु०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म० ॥	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ० ॥	अनये	अनयावहि	अनयामहि

लङ्

प्र० पु०	नयेत्	नयेयानाम्	नयेरन्
म० ॥	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेथ्यम्
उ० ॥	नयेथ	नयेथहि	नयेमहि

विधिलिङ्

कर्मवाच्य लृट्—नयेते लृट्—नेष्यते लोट्—नयेताम्, लङ्

अनयेत् ।

प्रेरणापर्यङ्क रूप—नाययति नाययते ।

उपमाणां के योग मं—

परि + नो—परिणयति = विवाह करना है ।

प्र + नां—प्रणयति = पतना है

अप + ना—अपनयति = दूर करना है

आह + ना—आनयति = लाना है

कृदन्त-क्त-नीतः ( पु० ), क्वन्तु-नीतवान् ( पु० ), क्त्वा-  
 नात्वा. तुमुन्-नेतुम्. तञ्यन्-नेतञ्यः ( पु० ), अनीय-नयनीयः  
 ( पु० ), शन्-नयन् ( पु० ), शानच्-नयमानः ( पु० ) ।

ह ( चोर्गी करना )

प्र० पु०  
 म० ..  
 उ० ..

हरति  
 हरमि  
 हगमि

लोट्

हरतः  
 हरथः  
 हगाथः  
 हरन्ति  
 हरथः  
 हगामः

प्र० पु०  
 म० ..  
 उ० ..

हरिष्यति  
 हरिष्यमि  
 हरिष्यामि

लृट्

हरिष्यतः  
 हरिष्यथः  
 हरिष्याथः  
 हरिष्यन्ति  
 हरिष्यथ  
 हरिष्यामः

प्र० पु०  
 म० ..  
 उ० ..

हरन्तु हरन्ताथ  
 हर, हरन्ताथ  
 हगामि

लोट्

हरन्तान्  
 हरन्तम्  
 हगाथ  
 हरन्तु  
 हरन्  
 हगाम

पु०

आरभ्य  
 आरभ्यः  
 आरभ्यन्

लृट्

आरभ्यन्तान्  
 आरभ्यन्तम्  
 आरभ्याथ  
 आरभ्यन्तु  
 आरभ्यन्  
 आरभ्यन्

दि० शि० २४

ह०  
 हः  
 ह० २२

ह० २२  
 ह० २२  
 ह० २२

ह० २२  
 ह० २२  
 ह० २२



## आत्मनेपद्

लट्

प्र० पु०	हरतं	हर॑ते	हरन्ते
म० ॥	हरमे	हर॑ये	हर॑ष्वे
उ० ॥	हरे	हरा॑वहे	हराम॑हे

लृट्

प्र० पु०	हरिष्यन्ते	हरि॑ष्य॒न्ते	हरि॑ष्यन्ते
म० ॥	हरिष्यसे	हरि॑ष्य॒थे	हरि॑ष्य॒ष्वे
उ० ॥	हरिष्ये	हरि॑ष्या॒वहे	हरि॑ष्याम॒हे

लोट्

प्र० पु०	हरताम्	हर॑ताम्	हरन्ता॑म्
म० ॥	हरस्य	हर॑याम्	हर॑ष्वाम्
उ० ॥	हरे	हरा॑वहे	हराम॑हे

लङ्

प्र० पु०	अहरत	अहर॑ताम्	अहरन्त
म० ॥	अहरथाः	अहर॑याम्	अहर॑ष्वाम्
उ० ॥	अहरे	अहरा॑वहि	अहराम॑हि

विधिलिङ्

प्र० पु०	हरेत	हर॑यानाम्	हर॑रेन्
म० ॥	हरेथाः	हर॑याथाम्	हर॑ष्वाम्
उ० ॥	हरेय	हर॑वहि	हर॑महि

कर्मवाच्य—लट्—द्वियन्ते,

लृट्—हरिष्यते,

लोट्—द्वियताम्,

लङ्—अद्वियत ।

प्रेरणार्थक रूप—हारयति, हारयते ।

उपमगो के योग में—

प्र + ह—प्रहरति = प्रहार करना है ।

आ + ह—आहरति = लाना है मराना है ।

सं + हृ — संहरति = संहार करता है ।

वि + हृ — विहरति = खेलता है ।

परि + हृ — परिहरति = दूर करता है ।

कृदन्त — कृ — कृतम् ( नपुं० ) । कत्रतु — कृतवान् ( पुं० ) । क्त्वा — कृत्वा, तुमुन् — कृतुम्, तव्यन् — कृतव्यम् ( नपुं० ) । अनीय — हरणीयम् ( नपुं० ) । शन् — हरन् ( पुं० ) । शानच् — हरमाणः ( पुं० ) ।

### भ्यादिगण धातुकोश

#### परस्मैपद

पत् — गिरना । पतति, पतिष्यति, पततु, अपतन्, पतेन् ।

वस् — रहना । वसति, वत्स्यति, वसतु अवसन्, वसेन् ।

यच्छ् — देना । यच्छति, दास्यति, यच्छतु, अयच्छन्, यच्छेत् ।

चल् — हिलना, चरना । चलति, चलिष्यति, चलतु, अचलन्, चलेन् ।

अच् — नूजा करना । अचति, अचिष्यति, अचतु अचन्, अचेत् ।

धाव् — दाड़ना । धावति, धाविष्यति, धावतु, अधावन्, धावेन् ।

दह् — जलना । दहति, दह्यति, दहतु, अदहन्, दहेत् ।

खाद् — खाना । खादति, खादिष्यति, खादतु, अखादन्, खादेत् ।

जप् — जपना । जपति, जरिष्यति, जपतु, अजपन्, जपेत् ।

अर्ज् — कमाना । अर्जति, अर्जिष्यति, अर्जतु, अर्जन्, अर्जेत् ।

प्रा (जग्र) — सूचना । जिग्रति, प्रास्यति, जिग्रतु, अजिग्रन्, जिग्रेत् ।

निन्द् — निन्दा करना । निन्दति, निन्दिष्यति, निन्दतु, अनिन्दन्, निन्देत् ।

वाञ्छ् — चाहना । वाञ्छति, वाञ्छिष्यति, वाञ्छतु, अवाञ्छन्, वाञ्छेत् ।

क्रह् — खेलना । काडति, क्रोडिष्यति, क्रोडतु, अक्रोडन्, क्रोडेत् ।

अभ्र् — भ्रमन । अभ्रति, अभ्रिष्यति, अभ्रतु, अभ्रन्, अभ्रेत् ।

तट्—तेरना । तरति, तरिष्यति, तरन्, अतरन्, तरेत् ।

काङ् छ्—काङ्क्षना । काङ्क्षति, काङ्क्षिष्यति, काङ्क्षन्, अकाङ्क्षन्, काङ्क्षेत् ।

### आत्मनेपद

यत्—यत्न करना । यतते, यतिष्यते, यतताम्, अयतन्, यतेत् ।

शङ्—शङ्का करना । शङ्कते, शङ्किष्यते, शङ्कताम्, अशङ्कन्, शङ्केत् ।

जम्—जमा करना । जमते, जमिष्यते, जमताम्, अजमन्, जमेत् ।

भाष्—भाषा करना । भाषते, भाषिष्यते, भाषताम्, अभामन्, भाषेत् ।

कल्प्—कल्प देना । कल्पते, कल्पिष्यते, कल्पताम्, अकल्पन्, कल्पेत् ।

श्रप्—शरणा करना । श्रपते, श्रपिष्यते, श्रपताम्, अश्रपन्, श्रपेत् ।

आरभ्—शुरू करना । आरभते आरभिष्यते, आरभताम्, आरभन्, आरभेत् ।

शोभ्—शोभा देना । शोभते शोभिष्यते, शोभताम्, अशोभन्, शोभेत् ।

अभ्य्—नष्ट देना । अभ्यते, अभ्यिष्यते, अभ्यताम्, अभ्यन्, अभ्येत् ।

स्यम्—सिद्ध देना । स्यते, स्यिष्यते, स्यताम्, अस्यन्, स्येत् ।

घ्रात्—घ्राणा देना । घ्राते, घ्रातिष्यते, घ्राताम्, अघ्रात्, घ्रात् ।

गिष्—गिष्ठा देना । गिष्ते, गिष्तिष्यते, गिष्ताम्, अगिष्न्, गिष्तेत् ।

कृष्—कृष्टा देना । कृष्ते, कृष्तिष्यते, कृष्ताम्, अकृष्न्, कृष्तेत् ।

हृष्—हृष्टा देना । हृष्ते, हृष्तिष्यते, हृष्ताम्, अहृष्न्, हृष्तेत् ।



अदादिगण  
(क) परस्मैपद  
अद् ( खाना )

		लट्	
		द्वि०	पदु०
प्र० पु०	एक० अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म० "	अस्मि	अत्थः	अत्थ
ब० "	असि	अद्भः	अद्भः
		लृट्	
प्र० पु०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म० "	अत्स्यमि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
ब० "	अत्स्यामि	अत्स्यथ्वः	अत्स्यथ्वः
		लोट्	
प्र० पु०	अत् अत्तान्	अत्तान्	अदन्तु
म० "	अद्भिः, अत्तान्	अत्तान्	अत्त
ब० "	अदानि	अदाथ	अदाम
		लङ्	
प्र० पु०	आदन्	आगाम्	आदन्
म० "	अ दः	अत्तान्	आत्त
ब० "	आदन्	आद्	आद्भ
		विधिविभक्	
प्र० पु०	अत्तान्	अत्तानाम्	अत्तुः
म० "	अत्तः	अत्तान्	अत्तान
ब० "	अत्तम	अत्तव	अत्तम

कर्मवाच्य—लट्—अद्यते, लृट्—अत्स्यते, लोट्—अद्यताम्, लङ्—आद्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—आद्यति, आद्यते ।

कृदन्त—क्त—जग्धम् (नपुं०). क्तवतु—जग्धवान् . अन्नवान् (पुं०), क्त्वा—जग्ध्वा, तुमुन्—अत्तुम्, तव्यत्—अत्तव्यम् (नपुं०). अनीय—अदनीयम् (नपुं०). शन्—अदन (पुं०) ।

### अस् ( होना )

		लट्	
प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
म० ॥	असि	स्यः	स्य
उ० ॥	अस्मि	स्वः	स्मः
		लृट्	
प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० ॥	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० ॥	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
		लट्	
प्र० पु०	अस्तु, स्तान्	स्ताम्	सन्तु
म० ॥	एधि, स्तान्	स्तम्	स्त
उ० ॥	असानि	असाव	असाम
		लङ्	
प्र० पु०	आसीन्	आस्ताम्	आसन्
म० ॥	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ० ॥	आसम्	आस्व	आत्म
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः

म० पु०	स्याः	स्यात्	स्यात्
उ० "	स्याम्	स्याथ	स्याम

अस् धातु के कर्मवाच्य में, प्रेरणार्थक और कृदन्त रूप वे होंगे जो भू धातु के होने हैं, क्योंकि इन स्थानों में 'अस्' को 'भू' जाता है। कृदन्त—राम्—सन (पु०)

### स्तु ( स्तुति करना )

		लट्	
प्र० पु०	स्तौति	स्तुवः	स्तुवन्ति
म० "	स्तौषि	स्तुथः	स्तुथ
उ० "	स्तौमि	स्तुथः	स्तुथः
		लृट्	
प्र० पु०	स्तोष्यति	स्तोष्यतः	स्तोष्यन्ति
म० "	स्तोष्यसि	स्तोष्यथः	स्तोष्यथ
उ० "	स्तोष्यामि	स्तोष्याथः	स्तोष्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	स्तुति, स्तुतान्	स्तुताम्	स्तुवन्तु
म० "	स्तुहि, स्तुतान्	स्तुताम्	स्तुत
उ० "	स्तुवामि	स्तुवाथ	स्तुवाम
		लृट्	
प्र० पु०	अस्तौन्	अस्तुताम्	अस्तुवन्

•स्तु और व् उभयपदी धातु है, पर मीट्रिकुलशन परीक्षा के लिए इन परस्मैपद के रूप जानना ही आवश्यक है अतः आत्मनेपद के रूप न दिये गये।

'स्तु' धातु के 'स्तवीति' आदि दूसरे रूप भी होने हैं, पर वि. भाष्य के लिए कठिन होने के कारण नहीं दिये गये।

प्र० पु०  
उ० ..

अस्ता  
अस्तवम्

अस्तुवम्  
अस्तुव

अस्तुव  
अस्तुन

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

स्तुयात्  
स्तुयाः  
स्तुयान्

विधिलिङ्  
स्तुयानाम्  
स्तुयाम्  
स्तुयाव  
एद्-स्तोप्यते.

स्तुयुः  
स्तुयात्  
स्तुयान्  
तोद्-स्तूप्याम्.

कर्मवाच्य-लट्-स्तूपते  
लट्-अस्तूपत ।

प्रेरणार्थक रूप-स्तावयति, स्तावयते  
कृदन्त-क-स्तुनः. ( पुं० ). क-वटु-स्तुवाम् ( पुं० ). क्त्वा-

स्तुत्वा, तुमुन्-स्तोतुन्. तव्यन्-स्तोतव्यः ( पुं० ) अर्नाय-स्तवर्नायः  
( पुं० ), राय-स्तुवन् ( पुं० ) ।

### ब्रू ( वाँतना )

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

ब्रूवांति, आह  
ब्रूवांति आह  
ब्रूवांति

लट्  
ब्रूतः, आहतुः  
ब्रूथः, आहयुः  
ब्रूवः  
ब्रूवन्ति, आहु  
ब्रूथ  
ब्रूभः

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

वच्यति  
वच्यन्ति  
वच्यन्ति

लृट्  
वच्यन्तः  
वच्यथः  
वच्यथ  
वच्यन्ति  
वच्यथ  
वच्यथः

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

ब्रूवांन् ब्रूनान्  
ब्रूवि ब्रूवन्  
ब्रूवांति

लोट्  
ब्रूवन्  
ब्रूवन्  
ब्रूवन्

ब्रूवन्तु  
ब्रूवन्  
ब्रूवन्



		लट्	
प्र० पु०	अत्रधीन्	अत्र॑ताम्	अत्र॑वन्
म० "	अत्रधीः	अत्र॑तम्	अत्र॑न्
उ० "	अत्र॑धम्	अत्र॑व	अत्र॑म
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	प्र॑यात्	प्र॑यानाम्	प्र॑युः
म० "	प्र॑याः	प्र॑यानाम्	प्र॑यान
उ० "	प्र॑याम्	प्र॑याथ	प्र॑याम

कर्मशास्त्र—लट्—उच्यते, लृट्—वदयते, लोट्—उच्यते

लङ्—आच्यते ।

प्रेरणार्थक रूप—याचयति, याचयते ।

कृदन्त—क—उक्तः ( पु० ), क्तप्रत्यय—उक्तवान् ( पु० ), क्त  
 उक्तवान्, तुमुन्—वक्तुम्, तस्य [—वक्तव्य, अनीय—वचनीय, श  
 मधन् गानिच्—मवाणः ( पु० ) वदन्—वाच्यः, याचयम् ।

रु ( रोना )

		लट्	
प्र० पु०	रोदि॑ति	रोदि॑तः	रोदि॑न्ति
म० "	रोदि॑ति	रोदि॑यः	रोदि॑थ
उ० "	रोदि॑मि	रोदि॑थः	रोदि॑मः

		लृट्	
प्र० पु०	रोदि॑ष्यति	रोदि॑ष्यतः	रोदि॑ष्यन्ति
म० "	रोदि॑ष्यति	रोदि॑ष्यथ	रोदि॑ष्यथ
उ० "	रोदि॑ष्यामि	रोदि॑ष्याम	रोदि॑ष्याम

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

रुदा धातु प्रकरण

म० पु० रु० ..	रुदिदि. रुदिताव रुदोदिनि	रुदितम् रुदोदिव	रुदित रुदोदिम
प्र० पु० म० .. रु० ;	अरुदोदन्. अरुदोदीन् अरुदोदः. अरुदोदीः अरुदोदिन्	लट् अरुदोदिताम् अरुदोदिताम् अरुदोदिव	अरुदोदन् अरुदोदित अरुदोदिन्
प्र० पु० म० .. रु० ;	रुद्यान् रुद्याः रुद्याम्	विधिलिट् रुद्याताम् रुद्यातम् रुद्याव	रुद्युः रुद्यत रुद्याम्
भाष्यधान्य—लट्—रुद्यते, लृट्—अरुद्यत ।	रुद्यन्ते, रुद्यन्ते ।	लृट्—रुदोदित्यन्ते, रुदोदित्यन्ते ।	लोट्—रुद्यताम्
प्रेरणार्थं रूप—रुदोदति, रुदोदते ।			
रुदन्त—रु—रुदितः (पुं०), रुदन्तु—रुदितवान् (पुं०), रुत्वा—			
रुदित्वा, रुदुन्त—रुदितुम्, रुदन्त—रुदितव्यः (पुं०) अनर्थे—रुदोदोद्यः			
(पुं०), रुदन्—रुदन् (पुं०) ।			

रुह ( रुहना )

म० पु०	रुहन्ति	रुहन्ति	रुहन्ति
म० ..	रुहन्ति	रुहन्ति	रुहन्ति
रु० ;	रुहन्ति	रुहन्ति	रुहन्ति

लोट्

प्र० पु०	दोषु, दुग्धात्	दुग्धाम्	दुग्धु
म० ..	दुग्धि दुग्धान्	दुग्धम्	दुग्ध
उ० ..	दोहानि	दोहाव	दोहाम

लट्

प्र० पु०	अधोक्त्या	अदुग्धाम्	अदुग्धु
म० ..	अधोक्त्या	अदुग्धम्	अदुग्ध
उ० ..	अदोहम्	अदुह	अदुहा

विधिविद्

प्र० पु०	दुश्यात्	दुश्याताम्	दुश्याः
म० ..	दुश्याः	दुश्यातम्	दुश्यान्
उ० ..	दुश्याम्	दुश्याव	दुश्याम

कर्मवाच्य—लट् दुश्यात्, लृट्—धीर्यने. लोट्—दुश्याताम्, लट्—अदुश्यात् ।

प्रत्ययार्थक रूप—दोहयानि दोहयन्ते ।

दुग्धन्—लृट्—दुग्धः (पुं०), लवण्—दुग्ध्यात् (पुं०), क्त्या—दुग्ध्यात् दुग्धुन् दोह्यात् लवण्—दोह्यात् (पुं०), अनीय—दोहनीय (पुं०), लवण् दोहः (पुं०), शानच्—दुग्धान् (पुं०)

आण् ( तावना )

लट्

प्र० पु०	आण्ति	आण्ताः	आण्ति
म० ..	आण्ति	आण्ता	आण्ति
उ० ..	आण्ति	आण्ता	आण्ता

११

गु प्रकरण

न० पु०	जागरिष्यसि	जागरिष्यथः	जागरिष्यथ
उ० ..	जागरिष्यामि	जागरिष्यावः	जागरिष्यामः
प्र० पु०	जागर्तुं, जागृतान्	लोट्	जागृतु
न० ..	जागृदि, जागृतान्	जागृतान्	जागृत
उ० ..	जागराणि	जागृतम्	जागराम
		जागराव	
प्र० पु०	अजागः	लङ्	अजागरः
न० ..	अजागः	अजागृतान्	अजागृत
उ० ..	अजागरम्	अजागृतम्	अजागृत
		अजागृव	अजागृत
प्र० पु०	जागृष्यत	विधिलिङ्	जागृषुः
न० ..	जागृषाः	जागृषातान्	जागृषाव
उ० ..	जागृषाम्	जागृषातन्	जागृषाम
		जागृषाव	

भाष्यपाठ्य—लट्—जागपते, लृट्—जागरिष्यते, लोट्—जागपंतानि  
 लृट्—अजागपते ।  
 प्रेरणार्थक रूप—जागरयति, जागरयते ।  
 कृदन्त—अ—जागरितः ( पुं० ), अणु—जागरितवान् ( पुं० ),  
 षत्वा—अ गरिष्या, कुमुत्—जागरिषुन्, क्त्वाच्—जागरिष्वन्ः ( पुं० )  
 षन्तोच्—जागरिषोच्, ( पुं० ) शच्—जागृन् ( पुं०, ऋ० ) ।  
 अच् । नाना ।

१	१००००	१००००	१००००
२	१००००	१००००	१००००
३	१००००	१००००	१००००
४	१००००	१००००	१००००

		लृट्	
प्र० पु०	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
म० ॥	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
उ० ॥	स्वप्स्यामि	स्वप्स्याथः	स्वप्स्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	स्वपितु, स्वपितान्	स्वपिनाम्	स्वपन्तु
म० ॥	स्वपिहि, स्वपितान्	स्वपिनम्	स्वपित
उ० ॥	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

		लृङ्	
प्र० पु०	अस्वपन्, अस्वपीन्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
म० ॥	अस्वपः, अस्वपीः	अस्वपिनम्	अस्वपि
उ० ॥	अस्वपम्	अस्वपिथ	अस्वपि

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
म० ॥	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उ० ॥	स्वप्याम्	स्वप्याथ	स्वप्याम

भाववाच्य—लृट्—मुप्यते, लृट्—स्वप्स्यते, लोट्—मुप्यताम

लृङ्—अमुप्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—स्वापयति, स्वापयते ।

कृदन्त—क्त—मुनः (पुं०). क्तवतु—मुत्रयान् (पुं०). क्त्वा—मुप्य

मुमुन—स्वप्नुम तद्वयन्—स्वप्स्यथः (पुं०). अनीय—स्वपनीयः (पुं०)

शान्—स्वपन (पुं०)

हन् ( भाग्ना )

लट्

प्र० पु०

हन्ति

हन्

हन्त

पुस्तक संख्या

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ	पृष्ठ
१.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
२.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
३.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
४.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
५.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
६.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
७.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
८.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
९.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
१०.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
११.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
१२.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
१३.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
१४.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
१५.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
१६.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
१७.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
१८.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
१९.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०
२०.	श्रीमद्भगवद्गीता	१-१०	१-१०

## विद् ( जानना )

प्र० पु०	वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
म० "	वेत्तिम	वित्त्यः	वित्त्य
उ० "	वेत्ति	वित्तः	वित्तः
अथवा			
प्र० पु०	वेद	विदतुः	विदुः
म० "	वेत्थ	विदथुः	विद्
उ० "	वेद	विद्	विद्म
लृट्			
प्र० पु०	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
म० "	वेदिष्यमि	वेदिष्यथः	वेदिष्यथ
उ० "	वेदिष्यामि	वेदिष्यावः	वेदिष्यामः
लोट्			
प्र० पु०	वेत्तु, वित्तान्	वित्ताम्	विदन्तु
म० "	वेत्ति, वित्तान्	वित्तम्	वित्त
उ० "	वेदानि	वेदाव	वेदाम
या			
प्र० पु०	विदाद्गुणान्	विदाद्गुणानाम्	विदाद्गुणान्
म० "	विदाद्गुणं	विदाद्गुणतम	विदाद्गुणत
उ० "	विदाद्गुणाणि	विदाद्गुणाव	।
लङ्			
२ पु	अवन्द्	अविनाम	अविदुः
म	अवन्द् अव	अविन्म	अवित्त
३	अवन्म	अविद्	अविद्म
विगलङ्			
२ पु	विज्ञान	विज्ञानाम्	विद्य

म० पु०	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
उ० ..	विद्याम्	विद्याव	विद्यान
कर्मवाच्य—	लट्—विद्यते.	लृट्—वेदिष्यते,	लोट्—विद्यताम्
ङि—	अविद्यत।		

प्रेरणार्थक रूप—वेदयति. वेदयते।

कृदन्त—उ—विदितः (पुं०), क्तवतु—विदितवान् (पुं०),  
 स्त्रा—विदित्वा. तुमुन्—वेदितुम्. तन्वन्—वेदितव्यः (पुं०). अनोय—  
 विदितोयः (पुं०). शन्—विदन् (पुं०)।

शास् ( शासन करना )

		लट्		
प्र० पु०	शास्ति		शास्यः	शासति
म० ..	शास्ति		शास्यः	शास्य
उ० ..	शास्ति		शास्यः	शास्यः
		लृट्		
प्र० पु०	शासिष्यति		शासिष्यतः	शासिष्यन्ति
म० ..	शासिष्यमि		शासिष्ययः	शासिष्यय
उ० ..	शासिष्यामि		शासिष्यावः	शासिष्यामः
		लोट्		
प्र० पु०	शास्तु शिष्टान्		शिष्टाम्	शास्तु
म०	शाधि शिष्टान्		शिष्टम्	शिष्ट
उ०	शान्मानि		शान्माव	शान्मान
		लृट्		
प्र० पु०	अशान्न्		अशान्नाम्	अशान्
म०	अशान्न्	अशा	अशान्नाम्	अशान्
उ०	अशान्म		अशान्नाव	अशान्



## विधिलिङ्

प्र० पु०	शिष्यान्	शिष्याताम्	शिष्युः
म० "	शिष्याः	शिष्यानम्	शिष्यान
व० "	शिष्याम्	शिष्याथ	शिष्यम

कर्मवाच्य—लट् - शिष्यते, लृट्—शानिष्यते, लोट्—शिष्यते

लङ्—अशिष्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—शामयति ।

कृदन्त—क—शिष्टः (पुं०), क्तवतु—शिष्टवान् (पुं०), क्व—  
शासित्वा, तुमुन्—शासितुम्, क्वन्—शामिनव्यः (पुं०)  
अनीय—शासनीयः (पुं०), शन्—शासन् (पुं०), क्यन्—  
शिष्यः ।

## इ ( जाना )

## लट्

प्र० पु०	एति	इतः	यन्ति
म० "	एषि	इथः	इथ
व० "	एमि	एथः	इमः

## लृट्

प्र० पु०	एष्यन्ति	एष्यतः	एष्यन्ति
म० "	एष्यसि	एष्यथ.	एष्यथ
व० "	एष्यामि	एष्याथः	एष्यामः

## लोट्

प्र० पु०	एतु, इतान्	इताम्	यन्तु
म० "	इदि इतान	इतम्	इत
व० "	अयानि	अयाथ	अयाम

## लङ्

प्र० पु०	तेन्	तेनाम्	अयान्
----------	------	--------	-------

धातु प्रकरण

म० पु०  
उ० ..

ऐः  
आयम्

ऐतम्  
ऐव

ऐत  
ऐम

विधिलिङ्

इयाताम्

इयुः

इयातम्

इयात

इयान्

इयाव

इयाम्

इयाः

लट्—एष्यते,

लोट्—इयताम्

उ० ..  
कर्मवाच्य—लट्—इयते

लिट्—ऐयत ।

प्रेरणार्थक रूप—गमयति, गमयते ।

कृदन्त—क्त—इतः (पु०) क्वतु—इतवान् (पुं०), क्त्वा—इत्वा,

तुमुन्—एतुम्, तव्यन्—एतव्यः (पुं०) अनीय—अयनीयः (पुं०),  
शान्—यन् (पुं०) ।

(ख) आत्मनेपदी  
अस् ( बैठना )

इत्

इय

इम

प्र० पु०

म० ..

उ० ..

आस्ते

आस्से

आसे

लट्

आसाते

आसाथे

आस्वहे

आसते

आष्वे

आस्महे

एष्यन्ति

एष्यथ

एष्यामः

प्र० पु०

म० ..

उ० ..

आमिष्यन्ते

आसिष्यसे

आमिष्ये

लट्

आसिष्यन्ते

आसिष्यथे

आसिष्यावहे

आसिष्यन्ते

आसिष्यथ्वे

आसिष्यामहे

इन्

इत्

इत्

प्र० पु०

म०

उ०

आन्ताम्

आस्व (आस्व)

आन्ते

आमाताम्

आमाथाम्

आमावहे

आमताम्

आथ्वम्

आनामहे

		लट्	
प्र० पु०	आम	आमानाम्	आमन्
म० "	आम्याः	आमायाम्	आम्यम्
उ० "	आमि	आम्यद्दि	आम्यद्दि
		त्रिभित्तिष्	
प्र० पु०	आमीन्	आमीयानाम्	आमीयन्
म० "	आमीणाः	आमीयायाम्	आमीय्यम्
उ० "	आमीय	आमीयद्दि	आमीयद्दि

भाष्य—लट्—आम्यने लृट् आमिष्यने, लोट्—आम्य लृट्—आम्यन्

प्रत्ययार्थक रूप—आगयन्ति, आगयन्ते ।

दृश्यन्—लृट्—आगिन्तः ( पु० ), लृट्—आगितयान् ( पुं )

कृष्ण—आगित्या लृट्—आगितुषः, लृट्—आगितयः ( पुं )

अनीय—आगनीयः ( पुं ) आनीय—आगीतः ( पुं० ) ।

वयमां व याग मे—

वय + आग—आगयन्ते = वयमाणा वयमा दे ।

शी ( गीता )

		लृट्	
प्र० पु०	शीन्	शीयान्	शीयन्ते
म० "	शीय	शीयन्ते	शीयन्ते
उ० "	शीय	शीयद्दि	शीयद्दि
		लृट्	
प्र० पु०	शीयन्त	शीयन्त	शीयन्त
म०	शीयन्त	शीयन्त	शीयन्त
उ०	शीयन्त	शीयन्त	शीयन्त



म० पु०	अध्येष्यसे	अध्येष्यथे	अ-द्वेष्ये
उ० ॥	अध्येष्य	अध्येष्यावहे	अध्येष्यावहे
		लोट	
म० पु०	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
म० ॥	अधीष्व	अधीयायाम्	अधीष्वम्
उ० ॥	अध्यये	अध्ययावहे	अध्ययावहे
		लङ्	
म० पु०	अध्येत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
म० ॥	अध्यैयाः	अध्यैयायाम्	अध्यैष्वम्
उ० ॥	अध्यैयि	अध्यैयहि	अध्यैमहि
		विधिलिङ्	
म० पु०	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरत
म० ॥	अधीयीथाः	अधीयीयायाम्	अधीयीष्वम्
उ० ॥	अधीयीथ	अधीयीथहि	अधीयीमहि

कर्मधारय—लट्—अ गीयन्, लृट्—अध्येष्यते, लोट्—अधीयन्  
लङ्—अधीयत ।

प्रेरणार्थक ऋन्—अध्यापयति ।

कृदन्त—लृट्—अधीतः (पूर्वः), लृङ्—अधीतवान् (पूर्वः)  
लृप्—अध्येतुम्, लङ्—अध्येतव्यः (पूर्वः), अनीय—अध्ययती  
(पूर्वः), शान्त्य—अधीयान् (पूर्वः) ।

### अभ्यास

अनुवाद करो—

१. मनुष्य वैशा श्रम जाता है, वैशा ही उनका मन होता है ।

२. मनुष्य ही मारने हैं और उनका मन मार है, उनका मन निर्दय तथा क्रूर  
जाता है । मनुष्य कभी किसी जीव को न मार । बज्रान् निर्दय का रक्षा क

२. एक रावा था। उसके तीन मन्त्री थे। वे उदा उत्क्री स्तुति करते थे। रावा को कहता था मन्त्री भी वही बोलते थे। वे कदापि अभिय सत्य का भाषण न करते थे। उक्त रावा का राज्य शान्त नष्ट हो गया।

३. जब बालक रोता है, माता उसे दूध देती है। वन में एक अन्ता एक श्राद्ध में बैठी थी और रो रही थी। एक नरत्मा आये। उन्होंने पूछा—देवी, तुम क्यों रोती है। जब संसार मोटा है, संसारी पुरुष तब जागता है। वह जानता है कि जो मोटा है वह छोटा है। वह अन्नी इन्द्रियों पर धारण करता है। शान्ति को पहचानता है और जानता है कि वही मोक्ष का मार्ग है।

### जुहोत्यादिगण

(क) परस्मैपदा

हु ( हवन करना )

लट्

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र० पु०	जुहोति	जुहुवः	जुहति
म० ..	जुहोषि	जुहुयः	जुहुय
ब० ..	जुहोमि	जुहुवः	जुहुम

लृट्

प्र० पु०	होष्यति	होष्यतः	होष्य
म० ..	होष्यन्ति	होष्यन्तः	होष्य
ब० ..	होष्यामि	होष्यावः	होष्य

लोट्

प्र० पु०	जुहान्, जुहुवान्	जुहुवान्	जु
म० ..	जुहूषि, जुहुवान्	जुहुयन्	जु
ब०	जुहवामि	जुहवाव	जु

		लट्	
प्र० पु०	अजुहोन्	अजुहुताम्	अजुहुतुः
म० "	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उ० "	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

## विधिलिट्

प्र० पु०	जुहुयान्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म० "	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उ० "	जुहुयाम्	जुहुयाथ	जुहुयाम
कर्मवाच्य—	लट्—हूयते,	लृट्—होष्यते,	लोट्—हूयतः

लृट्—अहूयत ।

कृदन्त—कन—हुतः ( पु० ), कतवन्तु—हुतवान् ( पु० )  
 कत्या—हुत्या, तमुन्—होतुम्, तव्यत्—होतव्यः ( पु० ), कनीय-  
 ह्यनीयः ( पु० ), शत—शुत ( पु० ) ।

## मी ( डरना )

		लट्	
प्र० पु०	विभेति	विभितः, विभितः	विभ्यति
म० "	विभेपि	विभियः, विभीयः	विभिय, विभी
उ० "	विभेमि	विभिषः, विभीषः	विभिम, विभी

## लृट्

प्र० पु०	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म० "	भेष्यमि	भेष्यथः	भेष्यथ
उ० "	भेष्यामि	भेष्याथ	भेष्यामः

## लोट्

प्र० पु०	विभेत्, विभितान् विभितात्	विभितय विभितानाम्	विभ्यन्
----------	------------------------------	----------------------	---------





(ख) उभयपदी

दा ( देना )

परस्मैपद्

लट्

५० पु०	ददाति	दत्तः	ददति
म० "	ददासि	दत्थः	दत्थ
ष० "	ददामि	दद्वः	दद्वः

लृट्

प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० "	दास्यमि	दास्यथः	दास्यथ
ष० "	दास्यामि	दास्याथः	दास्यामः

लोट्

प्र० पु०	ददातु, ददातु	ददातुम्	ददतु
म० "	देहि, ददातु	ददातुम्	ददातु
ष० "	ददानि	ददाथ	ददाम

लङ्

प्र० पु०	अददात्	अददात्	अददुः
म० "	अददाः	अददाथ	अददाथ
ष० "	अददाम्	अदद्व	अदद्व

विधिलिङ्

प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म० "	दद्याः	दद्याताम्	दद्याथ
ष० "	दद्याम	दद्याथ	दद्याम

आन्भनेपद्

अट्

प्र० पु०	ददात्	ददातुं	ददतुं
----------	-------	--------	-------



## भृ ( भरण कर्त्ता )

परस्मैपद्

लट्

प्र० पु०	विभर्ति	विभृत.	विभ्रात
म० ..	विभर्षिः	विभृत्यः	विभृत्य
८० ..	विभर्मि	विभृतवः	विभृतमः

लृट्

प्र० पु०	भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति
म० ;	भरिष्यमि	भरिष्यथः	भरिष्यथ
८० ..	भरिष्यामि	भरिष्यावः	भरिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	विभर्तु, विभृतान	विभृताम्	विभ्रतु
म० ..	विभृद्भि, विभृतान	विभृतम्	विभृत
८० ..	विभराणि	विभराय	विभराम

लङ्

प्र० पु०	अविभः	अविभृताम्	अविभरुः
म० ..	अविभः	अविभृतम्	अविभृत
१० ..	अविभरम	अविभृतव	अविभृतम

विधिलिङ्

प्र० पु०	विभृत्यान्	विभृत्यानाम्	विभृत्यु.
म०	विभृत्या.	विभृत्यानाम्	विभृत्यान्
०	विभृत्याम	विभृत्यान्	विभृत्याम्

आत्मनेपद्

लृट्

प्र० पु०	विभ्रत	विभ्रान्	विभ्रन्ते
----------	--------	----------	-----------







कर्मवान्—लट्—दीप्यते, लृट्—देविष्यते, लोट्—दीप्यता  
लट्—अदीप्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—देवयति ।

कृदन्त—क्त—यूनः (पुं०), वृत्तम् (नपुं०), क्वत्तु—देवि  
(पुं०), क्त्वा—देविता, तुम्—देविताम्, तव्यन्—देवितावः (पुं०)  
अनीय—देवनीयः (पुं०) यन्—देव्यः (पुं०), शन्—दीप्यन् (पुं०) ।

### वृत् ( नाचना )

		लट्	
प्र० पु०	नृत्यन्ति	नृत्यन्तः	नृत्यन्ति
म० .	नृत्यामि	नृत्यथः	नृत्यथ
उ० ,,	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः
		लृट्	
प्र० पु०	नर्तिष्यन्ति	नर्तिष्यन्तः	नर्तिष्यन्ति
म० ,,	नर्तिष्यमि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उ० ,,	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः
		या	
प्र० पु०	नत्स्यन्ति	नत्स्यन्तः	नत्स्यन्ति
म० ,,	नत्स्यामि	नत्स्यथः	नत्स्यथ
उ० ,,	नत्स्यामि	नत्स्यावः	नत्स्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	नृत्यन्तु, नृत्यन्तान्	नृत्यन्ताम्	नृत्यन्तु
म०	नृत्यन् नृत्यन्तान्	नृत्यन्तम्	नृत्यन्त
उ०	नृत्यान्ति	नृत्याथ	नृत्याम्
		लट्	
प्र० पु०	अनृत्यन्	अनृत्यन्ताम्	अनृत्यन्त

धातु प्रकरण

म० पु०

३० ..

अनृत्यः

अनृत्यम्

अनृत्यतम्

अनृत्याय

अनृत्यत

अनृत्याम

प्र० पु०

म० ..

३० ..

नृत्येन

नृत्येः

नृत्येयम्

विधिलिङ्

नृत्येताम्

नृत्येतम्

नृत्येय

नृत्येयुः

नृत्येत

नृत्येम

कर्मवाच्य—लट्—नृत्यत,

लृट्—नर्तिष्यते.

लोट्—नृत्यताम्,

लृट्—अनृत्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—नर्तयति. नर्तयते ।

कृदन्त—क्त—नृत्तः (पुं०).

नृत्यतु—नृत्तवान् (पुं०) क्त्वा—

अर्नाय—नर्तनीय.

नर्तित्वा. तुम्—नर्तितुम्. तद्यन्—नर्तितव्यः (पुं०). अर्नाय—नर्तनीय. (पुं०). क्यप्—नृत्यम् (नपुं०) शतृ—नृत्यन् (पुं०) ।

व्यथ ( भारना )

प्र० पु०

म० ..

३० ..

विध्यति

विध्यति

विध्यति

लट्

विध्यतः

विध्ययः

विध्यायः

विध्यन्ति

विध्यथ

विध्यानः

प्र पु

म०

३०

व्यक्तयति

व्यक्तयति

व्यक्तयति

लृट्

व्यक्तयतः

व्यक्तयथः

व्यक्तयायः

व्यक्तयन्ति

व्यक्तयथ

व्यक्तयानः

१५ १० १५ १०

१५ १० १५ १०

१५ १० १५ १०

१५ १०

१५ १०

१५ १०



प्र० पु०	अविध्यन्	लृङ्	अविध्यनाम्	अविध्यन्
म० "	अविध्यः		अविध्यनम्	अविध्यत
उ० "	अविध्यम्		अविध्याव	अविध्यात्

प्र० पु०	विध्यन्	विधिलिङ्	विध्येनाम्	विध्यन्तुः
म० "	विध्येः		विध्येतम्	विध्येत
उ० "	विध्येयम्		विध्येव	विध्येम

कर्मवाच्य—लट्—विध्यते. लृट्—व्यन्स्यते, लोट्—विध्यताम्

लृङ्—अविध्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—व्याधयति ।

कृदन्त—कृ—विद्धः (पुं०), क्यतु—विद्धपान् (पुं०), क्त्वा—

विद्म्या, तुम्—व्यद्धुम्, नव्यत—व्यद्धव्यः (पुं०), अनोय—व्यघनीयः (पुं०), शान्—विध्यन् (पुं०) ।

### नश् ( नष्ट होना )

प्र० पु०	नश्यति	लट्	नश्यतः	नश्यन्ति
म० "	नश्यमि		नश्यथः	नश्यथ
उ० "	नश्यामि		नश्यावः	नश्यामः

प्र० पु०	नशिष्यति	लृट्	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
म० "	नशिष्यमि		नशिष्यथः	नशिष्यथ
उ० "	नशिष्यामि		नशिष्यावः	नशिष्यामः

प्र० पु०	नह्यति	या	नह्यत	नह्यन्ति
----------	--------	----	-------	----------

न० पु०	नह् द्यति	नह् द्यथः	नह् द्यथ
द० ॥	नह् द्यामि	नह् द्यावः	नह् द्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	नरयतु, नरयतान्	नरयताम्	नरयन्तु
न० ॥	नरय, नरयतान्	नरयतम्	नरयत
द० ॥	नरयानि	नरयाव	नरयान

		लृट्	
प्र० पु०	अनरयन्	अनरयताम्	अनरयन्
न० ॥	अनरयः	अनरयतम्	अनरयत
द० ॥	अनरयन्	अनरयाव	अनरयान

		विधिलिट्	
प्र० पु०	नरयेत्	नरयेताम्	नरयेयुः
न० ॥	नरयेः	नरयेतम्	नरयेत
द० ॥	नरयेयम्	नरयेव	नरयेम

भाववाच्य—लट्—नरयते, लृट्—नरयते, लोट्—नरयताम्,

लृट्—अनरयत ।

प्रेरणार्थक रूप—नाशयति ।

कृदन्त—क—नष्टः (पुं०), क्वतु—नष्टवान् (पुं०), क्त्वा—नष्ट्वा, नशित्वा, तुम्—नष्टुम्, नशितुम्, त्वयन्—नशितव्यः, नष्टव्यः (न्तुं), अनीय—नशनीयः (पुं०), शन्—नश्यन् (पुं०) ।

शम् ( शान्त होना )

		लृट्	
प्र० पु०	शान्यति	शान्यतः	शान्यन्ति
न० ॥	शान्यति	शान्यथः	शान्यथ
द० ॥	शान्यामि	शान्यावः	शान्यामः

		लुट्	
प्र० पु०	शमिष्यन्ति	शमिष्यन्तः	शमिष्यन्ति
म० ॥	शमिष्यन्मि	शमिष्यन्थः	शमिष्यन्थ
उ० ॥	शमिष्यामि	शमिष्यावः	शमिष्यावः

		लोट्	
प्र० पु०	शाम्यन्तु, शाम्यन्तान्	शाम्यन्ताम्	शाम्यन्तु
म० ॥	शाम्य, शाम्यन्तान्	शाम्यन्तम्	शाम्यन्त
उ० ॥	शाम्यानि	शाम्याव	शाम्याम

		कृट्	
प्र० पु०	अशाम्यन्	अशाम्यन्ताम्	अशाम्यन्त
म० ॥	अशाम्यः	अशाम्यन्तम्	अशाम्यन्त
उ० ॥	अशाम्यम्	अशाम्याव	अशाम्याम

## विधिलिङ्

प्र० पु०	शाम्येत्	शाम्येताम्	शाम्येयुः
म० ॥	शाम्येः	शाम्येन्तम्	शाम्येन्त
उ० ॥	शाम्येयन्	शाम्येन्	शाम्येन्म

भक्ष्ययाच्य—तट्—गाम्यन्ते, लुट्—शमिष्यन्ते, लोट्—शाम्यन्ताम्  
कृट्—अशाम्यन्त ।

प्रे रणार्थं ह स्त—शमयन्ति, शमयन्ते ।

कृञ्जन्—क—शमिन्ते, शाम्यन्ते (पुं०), भक्ष्यन्तु—शमितवान् (पुं०) ।

कत्या—गमिष्या, शाम्य्या, गुन्—शमितुम्, नञ्जन्—शमितव्यः (पुं०) ।

अनीच—गमनीचः (पुं०), शन्—शाम्यन् (पुं०) ।

## अम् ( घृमना )

लट्

प्र० पु०	घम्यन्ति	घम्यन्तः	घम्यन्ति
----------	----------	----------	----------



( ख ) आत्मनेपदी  
विद् ( होना )

लट्

प्र० पु०	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
म० "	विद्यसे	विद्येथे	विद्यथ्वे
उ० "	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लृट्

प्र० पु०	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
म० "	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यथ्वे
उ० "	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

लोट्

प्र० पु०	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
म० "	विद्यथ	विद्येथाम्	विद्यथ्वाम्
उ० "	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लृक्

प्र० पु०	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
म० "	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यथ्वाम्
उ० "	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	विद्येत्	विद्येयाताम्	विद्येत्स्व
म० "	विद्येथाः	विद्येयाथाम्	विद्येथ्वाम्
उ० "	विद्येथ	विद्येवहि	विद्येमहि

भाववाच्य—लट्—विद्यते.

लृट्—वेत्स्यते.

लोट्—विद्यताम्

लृक्—अविद्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—वेत्स्यति वेत्स्यते ।

कृदन्त—लृट्—विद्य ( पृ. ) क्तवन्तु—वित्तवान् क्तवा-

त्वा. पुन्—वेत्तुन्, तज्यन्—वेत्तव्य (पुं०). अनोप—वेदोपः  
इं०). शानच्—विद्यमानः (पुं०) ।

पुष् (पुद् कर्ता)

		लट्	
प्र० पु०	पुष्यते	पुष्यते	पुष्यन्ते
म० ..	पुष्यसे	पुष्यथे	पुष्यध्वे
उ० ..	पुष्ये	पुष्यावहे	पुष्यामहे
		लृट्	
प्र० पु०	पौत्स्यते	पौत्स्यते	पौत्स्यन्ते
म० ..	पौत्स्यसे	पौत्स्यथे	पौत्स्यध्वे
उ० ..	पौत्स्ये	पौत्स्यावहे	पौत्स्यामहे
		लोट्	
प्र० पु०	पुष्यताम्	पुष्येताम्	पुष्यन्ताम्
म० ..	पुष्यत्व	पुष्येयाम्	पुष्यध्वम्
उ० ..	पुष्यं	पुष्यावहि	पुष्यामहि
		लङ्	
प्र० पु०	अपुष्यन्	अपुष्यताम्	अपुष्यन्त
म० ..	अपुष्यथाः	अपुष्यथाम्	अपुष्यध्वम्
उ० ..	अपुष्यं	अपुष्यावहि	अपुष्यामहि
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	पुष्येत्	पुष्येद्वानाम्	पुष्येन्न
म० ..	पुष्येत्वा	पुष्येद्वानाम्	पुष्येध्वम्
उ० ..	पुष्येत्	पुष्येत्वा	पुष्येन्महि
	अपुष्यन्त—अपु—अपु	अपु—अपु	अपु—अपु

प्रोत्पत्तयः क ऋ—योधयति ।

कृत्स्न—क—पुस्तम् ( गुण० ), कथयु—युद्धवान् ( पुं० ), कथयुष्वा, तुम्—योऽसुम् , तदयत्—योऽस्यः ( पुं० ), अनीय—वीजम् ( पुं० ), शान्तव—युष्मन्तः ( पुं० ) ।

जन् ( उत्पन्न होना )

		लट्		
प्र. पु.	जायते	जायते	जायन्ते	
म. .	जायसे	जायसे	जायसे	
व. .	जाये	जायायते	जायायते	
		लृट्		
प्र. पु.	जनिष्यति	जनिष्यति	जनिष्यन्ते	
म. .	जनिष्यसि	जनिष्यसि	जनिष्यसि	
व. .	जनिष्ये	जनिष्यायते	जनिष्यायते	
		श्लोः		
प्र. पु.	जायन्ताम्	जायन्ताम्	जायन्ताम्	
म. .	जायन्त	जायन्त	जायन्त	
व. .	जाये	जायायते	जायायते	
		लृट्		
प्र. पु.	जन्ताम्	जन्ताम्	जन्ताम्	
म. .	जन्त	जन्त	जन्त	
व. .	जन्ते	जन्तायते	जन्तायते	
		निर्दिष्ट		
प्र. पु.	जन्त	जन्तायन्त	जन्तायन्त	
म. .	जन्त	जन्तायन्त	जन्तायन्त	
व. .	जन्त	जन्तायन्त	जन्तायन्त	

विवाच्य—लट्—जन्यते, जायते, लृट्—जनिष्यते, लोट्—

म्, लङ्—अजायत ।

रथायक रूप—जनयति, जनयते ।

दन्त—घ्—जातः ( पुँ० ), ज्ञावतु—जानवान् ( पुँ० ), क्त्वा—

त्, तुम्—जनितुम्, तव्यन् जनितव्यः ( पुँ० ), अनीय—जननीयः

, शानच्—जायमानः ( पुँ० ) ।

### दिवादिगण धातु-शोष

#### परस्मैपदी

ज्व—जीना—जीवति, सेविवति, जीव्यत्, अजीव्यत्, जीव्येत् ।

हृष—प्रेषना—हृषति, सेवति, हृष्यत्, अहृष्यत्, हृष्येत् ।

प—पालना—पुषति, पोषति, पुष्यत्, अपुष्यत्, पुष्येत् ।

नधे—मिद्ध करना—मिषति, सेवति, मिष्यत्, अमिष्यत्, मिष्येत् ।

धृ—मोष करना—धृषति, मोषति, धृष्यत्, अधृष्यत्, धृष्येत् ।

धृ—कृम करना—कृषति, लोष्यति, कृष्यत्, अकृष्यत्, कृष्येत् ।

हृ—शोष करना—शृषति, शोषति, शृष्यत्, अशृष्यत्, शृष्येत् ।

धृ—सोप करना—धृषति, सेविवति, धृष्यत्, अधृष्यत्, धृष्येत् ।

#### आत्मनेपदी

धृ—जानना—जानते, जानते जानते जानते जानते जानते ।

ज्—जानना समानता—जानते जानते जानते जानते जानते ।

#### कर्मण्ये

ज्—जानना—

ज्—जानना—जानते, जानते जानते जानते जानते जानते ।

ज्—जानना—जानते, जानते जानते जानते जानते जानते ।

ज्—जानना—जानते, जानते जानते जानते जानते जानते ।



अज्ञान ने भीक्षु से कहा कि मैं युद्ध नहीं करूँगा। भीक्षु ने उसका दिया कि यदि तुम युद्ध न करोगे तो कौरव समझेंगे कि तुम हर युद्ध नहीं करते हो।

(७) शत्रुघ्नला सुई से कपड़ों को सीती है। माता तिथु को पालने में रानी और उसे देखकर खुश होती है। यदि वह नहीं सोता तो गुम्मे होती है। बालक माता के प्रेम से पुरु होना है। यदि तुम सीधे माता पर चकोते तो तुम्हारे सब काम सिद्ध होंगे। जो ईश्वर के छोड़ करता है, नष्ट हो जाता है। यदि तुम्हें गुम्मा करेगा तो कमजोर हो जायगा। मोक्ष खाने से मोक्ष वित्त प्राप्त हो गया। क्या तुम समझने हो और क्या तुम मानते हो कि ईश्वर संसार का बनाने वाला है। जो ईश्वर को देना समझेगा और मानेगा, वह पाप नहीं करेगा।

### ध्यादिगण

(क) उभयपरी

मु ( रग निरालना )

परमैपद

सट

	०६०	६०	५०
प्र० पु०	मुनानि	मुनुनः	मुन्यनि
म० "	मुनोनि	मुनुयः	मुनुय
उ० "	मुनामि	मुनुयः, मुन्यः	मुनुमः, मुन्मः

सूट

प्र० पु०	मोऽन्यनि	मोऽन्यनः	मोऽन्यनि
म०	मोऽन्यमि	मोऽन्ययः	मोऽन्यय
उ०	मोऽन्यामि	मोऽन्यायः	मोऽन्यामः

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

	लोट्		
सुनोतु सुनुतात्		सुनुताम्	
सुनु. सुनुतात्		सुनुतम्	सुन्वन्तु
सुनवानि		सुनवाव	सुनुत
			सुनवान

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

	लङ्		
असुनोत	असुनुताम्		असुन्वन्
असुनोः	असुनुतम्		असुनुत
असुनवम्	असुनुव. असुन्व		असुनुम, असुन्म
	विधिलिङ्		

पु०  
० ..  
० ..

सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम
	आत्मनेपद	

पु०  
..  
..

	लट्		
सुनुते	सुन्वाते		सुन्वते
सुनुपे	सुन्वाये		सुनुध्वे
सुन्वे	सुनुवहे. सुन्वहे		सुनुनहे, सुन्नहे
	लृट्		

पु०

साप्यते	साप्यन्ते	साप्यन्ते
साप्यसे	साप्यथे	साप्यध्वे
साप्ये	साप्यावहे	साप्यानहे
	लृट्	

सुनुताम्	सुन्वानाम्	सुन्वताम्
सुनुष्व	सुनुवाम्	सुनुध्वम्
सुनुव	सुनुवावहे	सुनुवानहे

प्र० पु०	शदयति	लृट्	
म० "	शदयमि	शदयनः	शदयन्ति
उ० "	शदयामि	शदयथः	शदयथ
		शदयाथः	शदयानः

प्र० पु०	शक्नोतु, शक्नुतान्	लृट्	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म० "	शक्नुहि, "		शक्नुनम्	शक्नुत
उ० "	शक्नवानि		शक्नवाथ	शक्नवान

प्र० पु०	अशक्नोन्	लृट्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म० "	अशक्नोः		अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ० "	अशक्नवम्		अशक्नुव	अशक्नुम

प्र० पु०	शक्नुयान्	विधिलिङ्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म० "	शक्नुयाः		शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० "	शक्नुयाम्		शक्नुयाथ	शक्नुयाम

भाववाच्य—लृट्—शक्यते, लृट्—शक्यते, लृट्—शक्यतान्, लृट्—अशक्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—शाक्यति, शाक्यते ।

कृदन्त—क्त—शक्तः (पुं०), क्तवतु—शक्तवान् (पुं०), क्त्वा—

शक्त्या, तुम्—शक्तुम्, तव्यन्—शक्तव्यः (पुं०), अनोय—शक्नोयः (पुं०) शन्—शक्नुवन् (पुं०) यन्—शक्य (पुं०) ।

म्वादिगण घातु-कोश

उभयपदां

चि—चुनना—चिनानि, चेष्यति, चिनानु, अचिनान्, चिनयान्, चिनते,

मिने, विनुताम्, अचिनुत, चिन्वीत ।

८ वृ—स्योकार करना—वृषोति, वरिष्पति, वृषोतु, अचृषोत, वृत्तुनातः  
वृत्तुते, वरिष्पते, वृत्तुताम्, अचृत्तुत, वृत्तीत ।

९ अभ्यास

अनुवाद करो—

१० वन तु नामास्य पद सक्ता है । वे सब घर पर जा सकते हैं । तुम दोनों  
तुम्हीं घर सकते हो । मैं अमेठी पद सक्ता हूँ । मेरा छोटा भाई भी अमेठी  
पद सक्ता है । जो पनांचण्ड बनेगा वह सुख पा सकेगा । भवपुत्र  
माता पिता की सेवा करता था और अनिमग्न पाता था । जो पाव करता  
है वह दुःख ही पाता है । मनुष्य सदा शुभ कार्य भी करे तथा अंगार में  
हो सकेगा सुख ही पाये ।

तुदादिगण

(घ) परस्मैपदो

तुद ( दुःख देना )

हट्

	एङ०	ङि०	णट्०
प्र० पु०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
म० ..	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उ० ..	तुदसि	तुदथः	तुदानः

हट्

	सोऽपदान्	सोऽपदान्	सोऽपदान्
प्र० पु०	तुदन्ति	तुदन्ति	तुदन्ति

११ वृ—स्योकार करना—वृषोति, वरिष्पति, वृषोतु, अचृषोत, वृत्तुनातः  
वृत्तुते, वरिष्पते, वृत्तुताम्, अचृत्तुत, वृत्तीत ।

म० पु०  
उ० ॥

तोत्स्यसि  
तोत्स्यामि

तोत्स्यथः  
तोत्स्याथः

तोत्स्य  
तोत्स्या

प्र० पु०  
म० ॥  
उ० ॥

तुदन्तु, तुदन्तान्  
तुद, तुदन्तान्  
तुदानि

तोद्

तुदन्ताम्  
तुदन्तम्  
तुदाथ

तुद  
तुद  
तुद

प्र० पु०  
म० ॥  
उ० ॥

अतुदन्  
अतुदः  
अतुदम्

तक्

अतुदन्ताम्  
अतुदन्तम्  
अतुदाथ

अतुद  
अतुद  
अतुद

प्र० पु०  
म० ॥  
उ० ॥

तुदेत्  
तुदेः  
तुदेयम्

विधिलिङ्

तुदेन्ताम्  
तुदेतम्  
तुदेव

तुदेयुः  
तुदेत  
तुदेम

कर्मवाच्य—लट्—तुद्यते,  
लङ्—अतुद्यत ।

लृट्—तोत्स्यते,

लोट्—तुप

प्रेरणार्थक रूप—तोदयति, तोदयते ।

कृदन्त—क—तुभः (पु०), क्वन्तु—तुभवान् (पु०), क्त्वा—तु-  
तुम्—तोत्तुम्, तद्वयन्—तोत्तवः (पु०), अनीय—तोदनीयः (उ-  
शत्—तुदन् (पु०) ।

इप् ( इच्छा करना )

लट्

प्र० पु०  
म० ॥  
उ० ॥

इच्छति  
इच्छामि  
इच्छामि

इच्छतः  
इच्छथः  
इच्छाथ

इच्छन्ति  
इच्छथ  
इच्छामः

प्र० पु०  
म० "  
उ० "

एपिप्यति  
एपिप्यन्ति  
॥पिप्यामि

लृट्  
एपिप्यतः  
एपिप्यथः  
एपिप्यावः

एपिप्यन्ति  
एपिप्यथ  
एपिप्यामः

प्र० पु०  
म० "  
उ० "

इच्छतु, इच्छतान्  
इच्छ, इच्छतान्  
इच्छानि

लोट्

इच्छताम्  
इच्छतम्  
इच्छाव

इच्छन्तु  
इच्छत  
इच्छाम

प्र० पु०  
म० "  
उ० "

ऐच्छन्  
ऐच्छः  
ऐच्छन्

लृट्

ऐच्छताम्  
ऐच्छतम्  
ऐच्छाव

ऐच्छन्  
ऐच्छत  
ऐच्छाम

प्र० पु०  
म० "  
उ० "

इच्छेत्  
इच्छेः  
इच्छेयम्

विधिलिङ्

इच्छेताम्  
इच्छेतम्  
इच्छेय

इच्छेयुः  
इच्छेत  
इच्छेय

बन्धाव्य-लृट्-इच्छते,  
लृट्-इच्छत ।

लृट्-एपिप्यते,

लोट्-इच्छतान्,

इच्छेयस्य लृट्-इच्छते, एच्छते ।

इच्छेय-लृट्-इच्छते, (पुं०), इच्छते ।

इच्छेय-लृट्-इच्छते, (पुं०) इच्छते ।

इच्छेय । इच्छते

इच्छेय । इच्छते

प्र० पु०	सृशसि	सृशथः	सृशथ
उ० ॥	सृशामि	सृशाथः	सृशामः

लृट्

प्र० पु०	स्पद्यति	स्पद्यतः	स्पद्यन्ति
प्र० ॥	स्पद्यसि	स्पद्यथः	स्पद्यथ
उ० ॥	स्पद्यामि	स्पद्याथः	स्पद्यामः

लोट्

प्र० पु०	सृशतु, सृशतात्	सृशताम्	सृशन्तु
म० ॥	सृशा, सृशातात्	सृशानम्	सृशान
उ० ॥	सृशानि	सृशाथ	सृशाम

लङ्

प्र० पु०	असृशत्	असृशताम्	असृशन्
म० ॥	असृशाः	असृशातम्	असृशान
उ० ॥	असृशाम्	असृशाथ	असृशाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	सृशेत्	सृशेताम्	सृशेयुः
म० पु०	सृशेः	सृशेताम्	सृशेः
उ० ॥	सृशेयम्	सृशेथ	सृशेम

कर्मवाच्य—लट्—सृशयन्ते

लृट्—स्पद्यन्ते

लोट्—सृशयन्ते

लङ्—असृशयन्त ।

प्रेरणावक रूप—म्यशयन्ति ।

कृदन्त—कत—सृष्ट (पुं०) क्वन्तु—सृष्टवान् (पुं०) क्त्वा—सृष्टु

तुम्—स्यद्म म् स्यद्म नञ्यन्त स्यद्मञ्च्य (पुं०) अर्नाथ—स्यर्नाथी (पुं०) शत—स्यशत । पुं०) कथय—सृशय (पुं०) ।





पृष्ठा, तुम्—प्रष्टुम्, तव्यन्—प्रष्टव्यः ( पुं० ), अनीय—प्रच्छनी ( पुं० ), शत्—पृच्छन् ( पुं० ) ।

( ख ) आत्मनेपदी

मृ ( मरना )

प्र० पु०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
म० "	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उ० "	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

लृट्

( 'मृ' धातु लृट् मे परस्मैपदी होती है )

प्र० पु०	मरिष्यति	मरिष्यन्तः	मरिष्यन्ति
म० "	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
उ० "	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
म० "	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
उ० "	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

लृट्

प्र० पु०	अम्रियन्	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
म० "	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
उ० "	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	म्रियेत्	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
म० "	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेष्वन्
उ० "	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

भाववाच्य—लृट्-म्रियते लृट्-मरिष्यते लोट्-म्रियताम् लृट्-अम्रियन्त



प्र० पु०	विन्देत्	विन्देताम्	विन्देत्तुः
म० "	विन्देः	विन्देताम्	विन्देत्
उ० "	विन्देयम्	विन्देय	विन्देम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	विन्दते	विन्देते	विन्दन्ते
म० "	विन्दसो	विन्देथे	विन्दथे
उ० "	विन्दे	विन्दाथदे	विन्दाम

लृट्

प्र० पु०	वेदिष्यते	वेदिष्यते } वेत्स्यते }	वेदिष्यन्ते } वेत्स्यन्ते }
म० "	वेदिष्यथे		
उ० "	वेदिष्याथदे	वेदिष्याथदे } वेत्स्याथदे }	

लोट्

प्र० पु०	विन्दताम्	विन्देताम्	विन्दन्ताम्
म० "	विन्ताथ	विन्देथाम	विन्दथाम
उ० "	विन्दे	विन्दाथदे	विन्दाथदे

लङ्

प्र० पु०	अविन्दत	अविन्दताम्	अविन्दन्त
म० "	अविन्दथा	अविन्दथाम	अविन्दथाम्
उ० "	अविन्दे	अविन्दाथदे	अविन्दाथदे

प्र० पु०	विन्देत	विधिलिङ्	
म० ..	विन्देथाः	विन्देयाताम्	विन्देरन्
उ० ..	विन्देय	विन्देयायाम्	विन्देष्वम्
कर्मवाच्य—लट्—विद्यते,		विन्देवद्दि	विन्देमद्दि
विद्यताम् . लङ्—अविद्यत ।		लृट्—वेदिष्यते—चेत्स्यते,	लोट्—
प्रेरणार्थक रूप—वेदयति, वेदयते ।			
कृदन्त—क्त—वित्तः ( पु० ), क्तवतु—वित्तवान् ( पु० ), क्त्वा—			
वित्त्वा, तुम्—वेत्तुम् . वेदितुम् तव्यत्—वेत्तव्यः ( पु० ), अनीय—			
वेदनीयः ( पु० ), शन्—विन्दन् ( पु० ) ।			
मुच् ( मुञ्च् ) ( छोड़ना )			

परस्मैपद

प्र० पु०	मुञ्चति	लट्	
म० ..	मुञ्चसि	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
उ० ..	मुञ्चामि	मुञ्चयः	मुञ्चथ
		मुञ्चावः	मुञ्चावः
प्र० पु०	मोक्षयति	लृट्	
म० ..	मोक्षयसि	मोक्षयतः	मोक्षयन्ति
उ० ..	मोक्षयामि	मोक्षयथः	मोक्षयथ
		मोक्षयावः	मोक्षयावः
प्र० पु०	मुञ्चन्तु . मुञ्चन्तान्	लोट्	
म० ..	मुञ्च मुञ्चन्तान्	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
उ० ..	मुञ्चानि	मुञ्चन्तम्	मुञ्चन्त
		मुञ्चाव	मुञ्चाम
प्र० पु०	अमुञ्चन्	लङ्	
		अमुञ्चन्ताम्	अमुञ्चन्

म० पु०	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
उ० ॥	अमुञ्चम्	अमुञ्चाय विधिलिङ्	अमुञ्चाम
प्र० पु०	मुञ्चते	मुञ्चते	मुञ्चयुः
म० ॥	मुञ्चते	मुञ्चते	मुञ्चते
उ० ॥	मुञ्चयेम्	मुञ्चये आत्मनेपद	मुञ्चये
		लट्	
प्र० पु०	मुञ्चते	मुञ्चते	मुञ्चन्ते
म० ॥	मुञ्चसे	मुञ्चथे	मुञ्चथ्वे
उ०	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे
		लृट्	
प्र० पु०	मोदयते	मोदयते	मोदयन्ते
म० ॥	मोदयसे	मोदयथे	मोदयथ्वे
उ० ॥	मोदये	मोदयावहे	मोदयामहे
		लोट्	
प्र० पु०	मुञ्चताम्	मुञ्चताम्	मुञ्चन्ताम्
म० ॥	मुञ्चस्व	मुञ्चथाम्	मुञ्चथ्वन्
उ० ॥	मुञ्चै	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे
		लङ्	
प्र० पु०	अमुञ्चत	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्त
म०	अमुञ्चथा	अमुञ्चथाम्	अमुञ्चथ्वन्
उ०	अमुञ्चै	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि
		विधिवान्	
प्र० पु०	मुञ्चत	मुञ्चत नाम	मुञ्चन्त
म०	मुञ्चथा	मुञ्चत नाम्	मुञ्चथ्वन्
उ०	मुञ्चै	मुञ्चतम्	मुञ्चमहि

धातु प्रकरण

कर्मधातु—लट्—मुच्यते, लृट्—मोच्यते, लोट्—मुच्यताम्।  
 प्रेरणार्थक रूप—मोचयति, मोचयते।  
 कृदन्त—सु—मुक्तः (पु०), क्तवतु—मुक्तवान् (पु०), क्त्या—  
 मुक्त्या, तुम्—मोक्तुम्, तव्यन्—मोक्तव्यः (पु०), अनीय—मोचनीयः  
 (पु०), शन्—मुञ्चन् (पु०) शानच्—मुञ्चमानः (पु०)।

तुदादिगण धातु-संज्ञ

परस्मैपदा

लिङ्—लिखना—लिखति, लिखति, लिखतु, अलिखत्, लिखेत्।  
 मृज्—मृज्जना—मृजति, मृजति, मृजतु, अमृजत्, मृजेत्।  
 प्र-विश-प्रवेश करना—प्रविशति, प्रवेशति, प्रविशतु, प्राविशत्,  
 प्राविशेत्।

आत्मनेपदा

लज्ज्—लज्जना परना—लज्जति, लज्जति, लज्जतु, अलज्जत्, लज्जेत्।

२. ब्राह्मण हरिजनों को नहीं छूते। यदि वे छू जायें तो काढ़ी स्नान करते हैं। संसार में सब मनुष्य ईश्वर के पुत्र हैं। सब ब्राह्मण शिष्याहृद् होते हैं, अतः माननीय तथा आदरयोग्य हैं। पाम्पु समाज के अंग हैं। शरीर के सब अंग उपयोगी होते हैं। किसी अंग को पुषा करना उचित नहीं। यदि हरिजन स्वच्छ हो, मांस न खाए, अपने धर्म का पालन करना हो, उतसे यदि कोई छू जाय तो कोई पात्र को छूना उचित नहीं।

३. मुँह से प्रश्न पूछो। यदि शिष्य प्रश्न न पूछे तो बुद्धिमान नहीं कहलाता। जो सी होच को न छोड़ेगा वह शिष्या को न पावेगा। संसार बहुत से मनुष्य पैदा होते हैं और मर जाते हैं; जिसका यश है वह नहीं मरता।

### रुधादिगण

उभयपदी

रुध् ( रोकना )

परस्मैपद

सट्

प्र० पु०	रुध्ति	रुध्वः	रुधन्ति
म० ..	रुधन्मि	रुध्वः	रुध्व
व० ..	रुध्वि	रुध्वः	रुध्वः

शृट्

प्र० पु०	रुध्वन्ति	रुध्वन्त-	रुध्वन्ति
म०	रुध्वन्मि	रुध्वन्थ	रुध्वन्थ
व०	रुध्वन्मि	रुध्वन्व	रुध्वन्वामः

अट्

प्र० पु०	रुध्वन्ति	रुध्वन्त-	रुध्वन्ति
----------	-----------	-----------	-----------

शतप्रकरण

म० पु०  
८० "

रन्धि, रन्धान्  
रन्धिधानि

रन्धम्  
रन्धिधाव

रन्ध  
रन्धिधाम

प्र० पु०  
म० ..  
८० "

अरन्धन्द्  
अरन्धः अरन्धन्द्  
अरन्धिधम्

लट्

अरन्धाम्  
अरन्धम्  
अरन्ध्व

अरन्धन्  
अरन्ध  
अरन्धम्

प्र० पु०  
म० ..  
८० "

रन्ध्यान्  
रन्ध्याः  
रन्ध्याम्

विधिलिट्

रन्ध्याताम्  
रन्ध्यातम्  
रन्ध्याव

रन्ध्युः  
रन्ध्यात  
रन्ध्याम

आत्मनेपद

प्र० पु०  
म० ..  
८० ..

रन्धे  
रन्धते  
रन्धे

लट्

रन्धाते  
रन्धाथे  
रन्ध्वहे

रन्धते  
रन्ध्वे  
रन्ध्वहे

प्र० पु०  
म० ..  
८० ..

रन्धन्ते  
रन्धन्ते  
रन्धन्ते

लृट्

रन्धन्ते  
रन्धन्थे  
रन्धन्वहे

रन्धन्ते  
रन्धन्थे  
रन्धन्वहे

प्र० पु०  
म० ..  
८० ..

रन्धन्  
रन्धन्  
रन्धन्

लोट्

रन्धन्ताम्  
रन्धन्थाम्  
रन्धन्वहे

रन्धन्ताम्  
रन्धन्थाम्  
रन्धन्वहे

प्र० पु०

अरन्धन्

लट्

अरन्धन्ताम्

अरन्धन्त



प्र० पु०	अरुन्धाः	अरुन्धायाम्	
उ० "	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म० "	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीष्वन्
उ० "	रुन्धीय	रुन्धीषहि	रुन्धीमहि
कर्मवाच्य—लट्—रुध्यते,		लृट् रोत्स्यते,	लोट्—रुध्यताम्

लृट्—अरुध्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—रोधयति ।

व्यसर्ग के योग में—

वि + रुध् — विरुणद्धि—विरोध करता है ।

अनु + रुध् — अनुरुणद्धि—अनुरोध करता है ।

कृदन्त—क—रुद्धः ( पु० ), क्तवतु—रुद्धवान् ( पुं० ), क्तवा-  
रुद्ध्वा, तुम्—रोद्धुम् . तच्वत्—रोद्धव्य ( पु० ), अनीय—रोधनी  
( पुं० ), शान—रुन्धन ( पु० ), शानच्—रुन्धानः ( पु० ) ।

भु ( पालना, स्वाना या भोगना )

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	भुनक्ति	भुङ् क्त्वा	भुञ्जन्ति
म० .	भुनक्ति	भुङ् क्यः	भुङ् क्य
उ०	भुनक्ति	भुङ् क्त्व	भुङ् क्त्वा

१२

प्र पु०	भोजयति	भोजयतः	भोजयन्ति
म०	भोजयति	भोजयथ	भोजयथ
उ० .	भोजयति	भोजयाव	भोजयामः

प्र० पु०	ताट्		
प्र० ..	मुनक्तु. मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० ..	मुह् कान्. मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० ..	मुनजानि	मुनजाव	मुनजान
प्र० पु०	लट्		
प्र० ..	अमुनक्तु	अमुनक्तान्	अमुनक्तान्
प्र० ..	अमुनक्तु	अमुनक्तान्	अमुनक्तान्
प्र० ..	अमुनक्तान्	अमुनक्तान्	अमुनक्तान्
प्र० पु०	विधिलिट्		
प्र० ..	मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० ..	मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० ..	मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० पु०	कालजिह्व		
प्र० ..	लट्		
प्र० ..	मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० ..	मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० ..	मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० पु०	लट्		
प्र० ..	मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० ..	मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्
प्र० ..	मुह् कान्	मुह् कान्	मुह् कान्

## लट्

प्र० पु०	अमु इक्त	अमुञ्जाताम्	अमुञ्जत
म० "	अमुइक्याः	अमुञ्जायाम्	अमुञ्जन्
व० "	अमुञ्जि	अमुञ्ज्वहि	अमुञ्जन्ति

## विधिलिङ्

प्र० पु०	मुञ्जीव	मुञ्जीयाताम्	मुञ्जीरन्
म० "	मुञ्जीषाः	मुञ्जीयायाम्	मुञ्जीषन्
व० "	मुञ्जीय	मुञ्जीवहि	मुञ्जीमहि

नोट—ध्यान रहे कि मुञ् घातु का परस्मैपद में प्रयोग 'करना' अर्थ में ही होता है। खाने आदि अर्थ में आत्मनेपदी प्रयोग होना है।

कर्मवाच्य—लट्—मुञ्जते, लृट्—भोजयते, लोट्—मुञ्जत  
लृट्—अमुञ्जत ।

भेदार्थक रूप—भोजयते ।

ह्रस्व—कः—मुक्तः (पुं०) जयतु—मुक्तवान् (पुं०), क्त  
मुक्त्वा, तुम्—भोजितुम्, लृट्—भोजयन् (पुं०), अनीय—भोज  
(पुं०), शन्—मुञ्जन् (पुं०), शानच्—मुञ्जानः (पुं०) ।

## युञ् ( मिलाना, जोड़ना )

## परस्मैपद

## लट्

प्र० पु०	युनक्ति	युङ्कत.	युञ्जन्ति
म०	युनक्ति	युङ्कथ	युङ्कथ
व०	युनक्ति	युङ्कथ	युङ्कथ

## लृट्

प्र० पु०	या-यति	या-यत	योरयन्ति
----------	--------	-------	----------



प्र० पु०	अयुङ्क्ते	अयुञ्जानाम्	अयुञ्जन्
म० "	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जथाम्	अयुञ्जन्
उ० "	अयुञ्जि	अयुञ्जहि	अयुञ्जन्

## विधित्तिङ्

प्र० पु०	युञ्जोत	युञ्जोथानाम्	युञ्जोथन्
म० "	युञ्जोथाः	युञ्जोथाथाम्	युञ्जोथन्
उ० "	युञ्जोथि	युञ्जोथहि	युञ्जोथन्

उपसर्ग के योग में :—

प्र + युज्—प्रयुङ्क्ते = प्रयोग करता है ।

उद् + युज्—उद्युङ्क्ते = उद्योग करता है ।

वि + युज्—वियुङ्क्ते = अलग होता है ।

अनु + युज्—अनुयुङ्क्ते = पूछता है ।

उप + युज्—उपयुङ्क्ते = उपयोग करता है ।

कर्मधाच्य—लट्—युज्यते; लृट्—योध्यते, लोट्—युज्यन्

लङ्—अयुज्यन् ।

प्रेरणार्थक रूप—योजयति, योजयने ।

कृदन्त—क्त—युक्तः ( पु० ), क्तवन्—युक्तवान् ( पु० ), क्त्वा—युक्त्वा, तुम्—योक्तुम्, सञ्यन्—योक्तव्यः ( पु० ), अनीय—योजनीयः ( पु० ), शन्—युञ्जन् ( पु० ), शानच्—युञ्जानः ( पु० ) ।

## अभ्यास

अनुवाद करो—

१. जो अपनी इन्द्रियो को रोकता है, वह शारङ्ग मूल को पाता है । जो इन्द्रियो को नहीं रोकेगा वह विषयो में लिप्त होकर जिनके एते शक्तिहीन है जापगा । अतः पुरुष अपने मन को विषयो में रोके । प्राचीन समय में कुन लोग अपने चित्त को रोकते थे और लगे आयु प्राप्त करने थे । आज हम

द्विदो के वश में हैं उन्हें नहीं रोकते, घतः जल्दी मृत्यु के मुख में पर जाते हैं ।

२. शीर शिकार को स्वयं मारता है शीर तब उसे खाता है । क्षत्रिय भी वृष्णी को स्वयं जीनता है तब उसका भोग करता है । धीर जातियाँ । एत यमुन्वरा का भोग करती हैं ।

तनादिगण

उभयपदी

तन् ( विन्तार करना )

परस्मैपद

लट्

१० पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
१० ..	तनोषि	तनुथः	तनुथ
१० ..	तनोमि	तनुयः, तन्यः	तनुमः, तन्मः

लृट्

१० पु०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
१० ..	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
१० ..	तनिष्यामि	तनिष्याथः	तनिष्यामः

लोट्

१० पु०	तनीत् तनन्तान्	तनुताम्	तन्वन्तु
१० ..	तनीत् तनन्तान्	तनुन्तु	तनुन्तु
१० ..	तनीत् तनन्तान्	तनन्तान्	तनन्तान्

लृट्

१० पु०	तनीष्यत्	तनीष्यन्तु	तनीष्यन्तु
१० ..	तनीष्यत्	तनीष्यन्तु	तनीष्यन्तु
१० ..	तनीष्यत्	तनीष्यन्तु	तनीष्यन्तु

		विधिलिङ्	
प्र० उ०	तनुयान्	तनुयाताम्	तनुयुः
म० ॥	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयाव
उ० ॥	तनुयाम्	तनुयाथ	तनुयाम

## आत्मनेपद्

		लट्	
प्र० पु०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म० ॥	तनुपे	तन्वाये	तनुष्वे
उ० ॥	तन्वे	तनुवद्दे तन्वद्दे	तनुमद्दे तन्वां

		लृट्	
प्र० पु०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
म० ॥	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यथे
उ० ॥	तनिष्ये	तनिष्याथद्दे	तनिष्यामद्दे

## लोट्

प्र० पु०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म० ॥	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुष्वम्
उ० ॥	तनथे	तनवावद्दे	तनवामद्दे

## लङ्

प्र० पु०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
म० ॥	अतनुयाः	अतन्वाथाम्	अतनुष्वम्
उ० ॥	अतन्वि	अतनुवद्दि, अतन्वद्दि	अतनुमद्दि, अतन्वां

## विधिलिङ्

प्र० पु०	तन्वीत	तन्वीयानाम्	तन्वीरन्
म० ॥	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीष्वम्
उ० ॥	तन्वीथ	तन्वीवद्दि	तन्वीमद्दि





म० पु०	कुर्याः	कुर्यान्म	कुर्यान्
उ० ॥	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम
प्र० पु०	कुरुते	कुर्यान्	कुरुते
म० ॥	कुरुषे	कुर्याथे	कुरुष्वे
उ० ॥	कुर्ये	कुर्याद्	कुरुद्

आत्मनेपद्

लट्

लृट्

प्र० पु०	करिष्यते	करिष्यते	करिष्यन्ते
म० ॥	करिष्यसे	करिष्यथे	करिष्यथ्वे
उ० ॥	करिष्ये	करिष्यावद्	करिष्यामद्

लोट्

प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्याताम्	कुर्याताम्
म० ॥	कुरुष्व	कुर्याथाम्	कुरुष्वाम्
उ० ॥	करव्ये	कर्यावद्	कर्यामद्

लृट्

प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्याताम्	अकुर्यान्त
म० ॥	अकुरुथाः	अकुर्याथाम्	अकुरुष्वाम्
उ० ॥	अकुर्वि	अकुर्याद्	अकुरुमद्

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुर्यान्	कुर्यायाताम्	कुर्यान्
म० ॥	कुर्याथाः	कुर्यायाथाम्	कुर्याथ्वाम्
उ० ॥	कुर्याय	कुर्यायद्	कुर्यामद्

कर्मशास्त्र—लट्—क्रियते

लृट्—करिष्यते.

लोट्—क्रियताम्.

लट्—अक्रियत ।

प्रेरणार्थक रूप—कारयति, कारयन्त ।



## क्रयादिगण

(क) उभयपदी

क्री ( खरीदना )

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	क्रीरानि	क्रीर्योतः	क्रीरन्ते
म० "	क्रीरसि	क्रीर्योषः	क्रीरन्थ
उ० "	क्रीरामि	क्रीर्यीवः	क्रीरन्वः

लृट्

प्र० पु०	क्रीष्यति	क्रीष्यतः	क्रीष्यन्ति
म० "	क्रीष्यसि	क्रीष्यथः	क्रीष्यथ
उ० "	क्रीष्यामि	क्रीष्यावः	क्रीष्यान्

लोट्

प्र० पु०	क्रीर्यातु, क्रीर्यीतान्	क्रीर्यीताम्	क्रीर्यन्तु
म० "	क्रीर्यीहि, क्रीर्यीतान्	क्रीर्यीनम्	क्रीर्यन्त
उ० "	क्रीर्यानि	क्रीर्याथ	क्रीर्यान्

लङ्

प्र० पु०	अक्रीर्यान्	अक्रीर्यीताम्	अक्रीर्यन्
म० "	अक्रीर्याः	अक्रीर्यीतम्	अक्रीर्यन्थ
उ० "	अक्रीर्याम्	अक्रीर्यीव	अक्रीर्यन्व

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्रीर्यायान्	क्रीर्यायाताम्	क्रीर्यायुः
म० "	क्रीर्यायाः	क्रीर्यायातम्	क्रीर्यायथ
उ० "	क्रीर्यायाम्	क्रीर्यायाथ	क्रीर्यायन्व

आत्मनेपद

लट्

क्रीणति  
क्रीणीषि  
क्रीणी

क्रीणाते  
क्रीणीष्ये  
क्रीणीवहे

क्रीणते  
क्रीणीष्वे  
क्रीणीमहे

लृट्

क्रेष्यते  
क्रेष्यसे  
क्रेष्ये

क्रेष्येते  
क्रेष्येथे  
क्रेष्यावहे

क्रेष्यन्ते  
क्रेष्यथे  
क्रेष्यामहे

लोट्

क्रीणाताम्  
क्रीणीष्वाम्  
क्रीणी

क्रीणाताम्  
क्रीणीष्वाम्  
क्रीणीवहे

क्रीणाताम्  
क्रीणीष्वाम्  
क्रीणीमहे

लङ्

अक्रीणात्  
अक्रीणीषाः  
अक्रीणी

अक्रीणाताम्  
अक्रीणीष्वाम्  
अक्रीणीवहि

अक्रीणात्  
अक्रीणीष्वम्  
अक्रीणीमहि

विधिलिङ्

क्रीणीत  
क्रीणीष्यः  
क्रीणीष्य

क्रीणीष्यताम्  
क्रीणीष्यायाम्  
क्रीणीष्यहि

क्रीणीष्यन्  
क्रीणीष्वन्  
क्रीणीमहि

लृट् - क्रेष्यते.

लोट् - क्रीणाताम्

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

प्र० प्र०  
म० ..  
उ० ..

प्र० पु०  
म० ..  
उ० ..

क्रीणाताम् - लट् - क्रीणाताम्  
क्रीणीष्वाम् - लृट् - क्रेष्यते.

क्रीणीष्यः - लृट् - क्रेष्यते.

क्रीणीष्य - लृट् - क्रेष्यते.

क्रीणीष्यताम् - लृट् - क्रेष्यते.

प्रेरणाार्थक रूप—कापयति, कापयते ।

कृदन्त—क—क्रीतः (पुं०), क्वबतु—क्रीतवान्, (पुं०) क्त्वा  
क्रीत्वा, तुम्—क्रेतुम्, तद्व्यत्—क्रेतव्यः(पुं०), अनोय—क्रेयर्थायः(पुं०)  
यत्—क्रेयः (पुं०), शन्—क्रीणन् (पुं०). शानच्—क्रीणानः (पुं०) ।

ग्रह् ( लेना )

परस्मैपदौ

लट्

प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० ..	गृह्णामि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० ..	गृह्णामि	गृह्णीथः	गृह्णीमः

लृट्

प्र० पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म० ..	ग्रहीष्यमि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उ० ..	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्याथः	ग्रहीष्यामः

लोट्

प्र० पु०	गृह्णातु, गृह्णीतान्	गृह्णीनाम्	गृह्णन्तु
म० ..	गृह्णाण, गृह्णीतान्	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० ..	गृह्णानि	गृह्णाथ	गृह्णाम

लङ्

प्र० पु०	अगृह्णात	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० ..	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० ..	अगृह्णाम	अगृह्णीथ	अगृह्णीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयानाम्	गृह्णीयुः
म०	गृह्णीयाः	गृह्णीयानम्	गृह्णीयात्
उ०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाथ	गृह्णीयाम्



वि + मद् - विगृह्णानि - मगडा करता है ।

सं + मद् - संगृह्णानि - इकट्ठा करना है ।

कृदन्त - कः - गृहीतः (पुं०), चयतु - गृहीतवान् (पुं०), क  
 गृहीत्वा, तुम् - महीतुम्, तव्यन् - महीतव्यः (पुं०),  
 (पुं०), शन् - गृह्णन् (पुं०), शानच् - गृह्णानः (पुं०) ।

ज्ञा ( जानना )

परस्मैपद

		लट्	
प्र० पु०	जानाति	जानीतः	जानीते
म० "	जानासि	जानीथः	जानीथे
उ० "	जानामि	जानीवः	जानीमहे

		लृट्	
प्र० पु०	शास्यति	शास्यतः	शास्यन्ते
म० "	शास्यसि	शास्यथः	शास्यथे
उ० "	शास्यामि	शास्यावः	शास्यामहे

		लोट्	
प्र० पु०	जानातु, जानीतान्	जानीताम्	जानन्तु
म० "	जानीहि, जानीतान्	जानीतम्	जानीथे
उ० "	जानानि	जानाव	जानामहे

		लङ्	
प्र० पु०	अजानात	अजानीनाम्	अजानन्तु
म० "	अजानाः	अजानीतम्	अजानीथे
उ० "	अजानाम्	अजानीव	अजानीमहे

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	जानीयात्	जानीयानाम्	जानीषुः

म० पु० उ० "	जानीयाः जानीयाम्	जानीयातम् जानीयाव	जानीयात जानीयाम
प्र० पु० म० " उ० "	जानीते जानीपे जाने	आत्मनेपद लट् जानाते जानाथे जानीवहे	जानते जानीध्वे जानीमहे
प्र० पु० म० " उ० "	ज्ञास्यते ज्ञास्यसे ज्ञास्ये	लृट् ज्ञास्येते ज्ञास्येथे ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यन्ते ज्ञास्यध्वे ज्ञास्यामहे
० पु० ० " ० "	जानीताम् जानीष्व जाने	लोट् जानाताम् जानाथाम् जानावहे	जानताम् जानीध्वम् जानामहे
पु० " "	अजानीत अजानीथाः अजानि	लङ् अजानाताम् अजानाथाम् अजानीवहि	अजानत अजानीध्वम् अजानीमहि
पु० " "	जानीत जानीथाः जानीय	विधिलिङ् जानीयाताम् जानीथाथाम् जानीवहि	जानीरन् जानीध्वम् जानीमहि
पु० " "	जानीत जानीथाः जानीय	लृट्—ज्ञास्यते	लोट्—ज्ञायताम्

लृट्—ज्ञायते ।  
लृट्—ज्ञास्यते ।  
लोट्—ज्ञायताम् ।  
लोट्—ज्ञापयति, ज्ञापयन्



वपमर्गों के योग में—

अव + शा—अवजानाति—निरादर करना है ।

अनु + शा—अनुजानाति—आज्ञा देता है ।

प्रति + ज्ञा—प्रतिजानाति—प्रतिज्ञा करता है ।

कृदन्त—क—ज्ञातः ( पुं० ), कश्चिद्—ज्ञानवान् ( पुं० ), क्त्वा, तुम्—ज्ञातुम्, तज्यन्—ज्ञातव्यः ( पुं० ), अनीय—ज्ञान्य ( पुं० ), शान्—जानन । ( पुं० ), शानच्—जानानः ( पुं० ), शोयः ( पुं० ) ।

(ख) परस्मैपदां

मुप् ( चुराना )

लृट्

प्र० पु०

मुष्णाति

मुष्णीनः

मुष्णन्ति

म० "

मुष्णासि

मुष्णीथः

मुष्णीथ

उ० "

मुष्णामि

मुष्णीथः

मुष्णीमः

लृट्

प्र० पु०

मोषिष्यति

मोषिष्यतः

मोषिष्यति

म० "

मोषिष्यसि

मोषिष्यथः

मोषिष्यथ

उ० "

मोषिष्यामि

मोषिष्यावः

मोषिष्याम

लोट्

प्र० पु०

मुष्णातु, मुष्णीतान्

मुष्णीताम्

मुष्णन्तु

म० "

मुष्णाथ, मुष्णीतान्

मुष्णीतम्

मुष्णीत

उ० "

मुष्णानि

मुष्णाव

मुष्णाम

लङ्

प्र० पु०

अमुष्णान्

अमुष्णीताम्

अमुष्णन्

म०

अमुष्णा

अमुष्णीतम्

अमुष्णीत

उ० "

अमुष्णाम

अमुष्णीव

अमुष्णीम

मः पुः	मुन्नीयान	विधिलिह	
मः "	मुन्नीयाः	मुन्नीयानाम	मुन्नीयुः
मः "	मुन्नीयाम	मुन्नीयानम्	मुन्नीयान
	मन्नीयान्—मन्—मुन्नीयते	मुन्नीयाय	मुन्नीयाम्
	मन्—मुन्नीयते ।	मन्—मन्नीयते	मन्—मुन्नीयते

मन्नीयान्—मन्—मुन्नीयते ।  
 मन्नीयाः—मन्—मन्नीयते ।  
 मन्नीयाम्—मन्—मन्नीयते ।  
 मन्नीयाय—मन्—मन्नीयते ।  
 मन्नीयते—मन्—मन्नीयते ।

मुन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

मन्नीयानाम्

म० पु०  
उ० ॥

चोरय, चोरयतान्  
चोरयाणि

चोरयन्म्  
चोरयाथ

चोरयन्  
चोरयाम्

प्र० पु०  
म० ॥  
उ० ॥

अचोरयन्  
अचोरयः  
अचोरयम्

लट्  
अचोरयन्ताम्  
अचोरयन्तम्  
अचोरयाथ

अचोरयन्  
अचोरयन्  
अचोरयाम्

प्र० पु०  
म० ॥  
उ० ॥

चोरयेन्  
चोरयेः  
चोरयेषम्

विधितिह  
चोरयेन्ताम्  
चोरयेन्तम्  
चोरयेथ

चोरयेयुः  
चोरयेन्  
चोरयेम

आत्मनेपद्

प्र० पु०  
म० ॥  
उ० ॥

चोरयते  
चोरयसे  
चोरये

लट्  
चोरयते  
चोरयथे  
चोरयावहे

चोरयन्ते  
चोरयध्वे  
चोरयामहे

प्र० पु०  
म० ॥  
उ० ॥

चोरयिष्यते  
चोरयिष्यसे  
चोरयिष्ये

लृट्  
चोरयिष्येने  
चोरयिष्येथे  
चोरयिष्यावहे

चोरयिष्यन्ते  
चोरयिष्यध्वे  
चोरयिष्यामहे

प्र० पु०  
म० ॥  
उ० ॥

चोरयाताम्  
चोरयस्व  
चोरये

लोट्  
चोरयन्ताम्  
चोरयन्थाम्  
चोरयावहे

चोरयन्ताम्  
चोरयध्वम्  
चोरयामहे

० पु०

अचोरयन्

लट्  
अचोरयन्ताम्

अचोरयन्

धातु प्रकरण

म० पु०	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उ० ..	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि
प्र० पु०	चोरयंत	विधिलिङ्	चोरयेरन्
म० ..	चोरयेथाः	चोरयेयाताम्	चोरयेध्वम्
उ० ..	चोरयेथ	चोरयेयाथाम्	चोरयेमहि

कर्मवाच्य—लट्—चोरयते, लृट्—चोरयिष्यते, लोट्—चोरयताम्।  
 लङ्—अचोरयत ।  
 प्रेरणार्थक रूप—चोरयति, चोरयते

नोट—चुरादिगण के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप में कोई अन्तर नहीं आता ।

कृदन्त—क्त—चोरितः (पुं०), क्तवतु—चोरितवान् (पुं०), क्त्वा—चोरयित्वा, तुम्—चोरयितुम्, त्व्यन्—चोरयित्व्यः (पुं०), अनीय—चोरणीयः (पुं०), शन्—चोरयन् (पुं०), शानच्—चोरयमाणः (पुं०) ।  
 चिन्त् ( सोचना, विचार करना )

परस्मैपद

प्र० पु०	चिन्तयति	लट्	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
म० ..	चिन्तयसि		चिन्तयथः	चिन्तयथ
उ० ..	चिन्तयामि		चिन्तयावः	चिन्तयामः
प्र० पु०	चिन्तयिष्यति	लृट्	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
म० ..	चिन्तयिष्यसि		चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ
उ० ..	चिन्तयिष्यामि		चिन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः

नोट  
 चिन्तयन् चिन्तयन्त चिन्तयन्तम्

म० पु० उ० ॥	ताडय, ताडयतान् ताडयानि	ताडयतम् ताडयाव	ताडयन् ताडयाम्
प्र० पु० म० ॥ उ० ॥	अताडयन् अताडयः अताडयम्	अताडयताम् अताडयतम् अताडयाव	अताडयन् अताडयन् अताडयन्
प्र० पु० म० ॥ उ० ॥	ताडयेन् ताडयेः ताडयेयम्	ताडयेताम् ताडयेतम् ताडयेव	ताडयेन् ताडयेन् ताडयेन्
प्र० पु० म० ॥ उ० ॥	ताडयते ताडयसे ताडये	ताडयेते ताडयेथे ताडयावहे	ताडयन्ते ताडयथे ताडयामहे
प्र० पु० म० ॥ उ० ॥	ताडयिष्यते ताडयिष्यसे ताडयिष्ये	ताडयिष्येते ताडयिष्येथे ताडयिष्यावहे	ताडयिष्यन्ते ताडयिष्यथे ताडयिष्यन्ते
प्र० पु० म० ॥ उ० ॥	नाडयताम् नाडयस्व नाडये	नाडयताम् नाडयथाम् नाडयावहे	नाडयन्ताम् नाडयथाम् नाडयामहे
प्र० पु०	अनाडयन्	अनाडयताम्	अनाडयन्

अथ मन्त्रः

म० पु०	अताडयथाः	अताडयंथाम्	अताडयध्वम्
६० ..	अताटयं	अताटयावहि	अताटयानहि
म० पु०	ताटयेत	विधिलिङ्	
म० ..	ताटयंथाः	ताटयेचावाम्	ताटयेरन्
६० ..	ताटयेत्र	ताटयेचाथाम्	ताटयेध्वम्
		ताटयेवहि	ताटयेनहि

कनवाच्य—लट्—ताटयेते. लृट्—ताटयिष्यते. लोट्—ताटयताम्.  
 हि—अताटयत ।  
 प्रेरणार्थक रूप—ताडयति, ताटयते ।  
 कृदन्त—लृ—ताटितः ( पुं० ). लृङ्—ताटितवान् ( पुं० ).  
 लृत्—ताटित्वा, लृप्—ताटयितुम्, लृङ्—ताटयितव्यः ( पुं० ).  
 कर्त्तव्य—ताटनीयः ( पुं० ), शान्—ताटयन् ( पुं० ), शान्च—  
 ताटयमानः ( पुं० ) ।

कथ् ( कथना )

परस्मैपद

म० पु०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
मः	कथयन्ति	कथयथः	कथयथ
३	कथयन्ति	कथयथाः	कथयन्तः
		कथयथाः	
१० पु		कथयन्तः	
मः		कथयन्तः	
३		कथयन्तः	
		कथयन्तः	

२०८

म० पु०

२० "

अमञ्जय.  
अमञ्जयम्

अमञ्जयन्तम्  
अमञ्जयाव

अमञ्जयन्  
अमञ्जयाम

प्र० पु०

म० "

४० "

मञ्जयेन्  
मञ्जयेः  
मञ्जयेयम्

विधिलिङ्  
मञ्जयेताम्  
मञ्जयेन्तम्  
मञ्जयेव

मञ्जयेयुः  
मञ्जयेन्  
मञ्जयेम

आत्मनेपद

प्र० पु०

म० "

३० "

मञ्जयते  
मञ्जयसे  
मञ्जयं

लट्  
मञ्जयेते  
मञ्जयेथे  
मञ्जयाभहे

मञ्जयन्ते  
मञ्जयथ्वे  
मञ्जयामहे

प्र० पु०

म० "

३० "

मञ्जयिष्यते  
मञ्जयिष्यसे  
मञ्जयिष्ये

लृट्  
मञ्जयिष्येते  
मञ्जयिष्येथे  
मञ्जयिष्यावहे

मञ्जयिष्यन्ते  
मञ्जयिष्यथ्वे  
मञ्जयिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०

म० "

३० "

मञ्जयन्ताम्  
मञ्जयन्त्व  
मञ्जये

मञ्जयेताम्  
मञ्जयेथाम्  
मञ्जयामहे

मञ्जयन्ताम्  
मञ्जयन्त्व  
मञ्जयामहे

लङ्

प्र० पु०

म० "

३० "

अमञ्जयत  
अमञ्जयथा.  
अमञ्जये

अमञ्जयेताम्  
अमञ्जयेथाम्  
अमञ्जयावहि

अमञ्जयन्त  
अमञ्जयन्था  
अमञ्जयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०

मञ्जयन्

मञ्जयेयानाम्

मञ्जयेरन्





## अभ्यास

अनुवाद करो—

१. बाजार में जाओ और पुस्तक खरीदो । सदा नई-पुस्तक खरीदो । मैं कभी पुरानी पुस्तक नहीं खरीदता । पिछले साल मैंने एक पुस्तक खरीदी थी, वह मेरे पास है । मैं पुस्तक कभी बेचता नहीं हूँ । जो पुरानी पुस्तक खरीदता है, वह उसका पूरा लाभ नहीं उठाता । यदि दुन्दारे पास पन है तो हम नवीन पुस्तक खरीदो और पढ़ो ।

२. तू शपथ ले कि मैं कभी झूठ न बोलूँगा, चोरीन करूँगा, निप ईश्वर को स्मरण करूँगा तथा धर्माचरण करूँगा । जो यह जानता है वह पाना कर सकता । अब तू यह जानेगा कि ईश्वर तेरे हृदय में भी बसता है तो अन्धकार दूर हो जायगा । दुःख को तू मुक्त जान, क्योंकि दुःख में मनुष्य ईश्वर को याद तो करता है । भक्त प्रभु ने माता के अग्रमान को मुक्त जाना, उसे से वह ईश्वर का प्यारा बन सका । भगवान् भक्त के हृदय को चुरा लेते हैं । जो दूसरों का धन चुराता है, कभी मुक्त नहीं पाता । यदि तू फिर चोरी करेगा तो दरिद्र पायगा । सदा दूसरों के अन्धे गुणों की चोरी करो । राव ने सीता को चुराया और उसके कुल का सर्वनाश हो गया । कोई भी पुत्र पराये धन की कदापि चोरी न करे ।

३. अशोकवाटिका में सीता राम का चिन्तन करती रही । सती किर्ति पति के बिना किसी अन्य पुरुष का चिन्तन नहीं करती । जो पुरुष प्रातः प्रभु का चिन्तन करेगा वह संसार के दुःखों को शान्ति से पार करेगा । देवों मन ! तू भी शान्ति प्राप्त कर । भक्त प्रह्लाद ने प्रभु का चिन्तन किया, भगवान् ने उसे दर्शन दिये । इसलिए मनुष्य उसी एक आशय का चिन्तन करे तथा दुःख सहन के लिए बल प्राप्त करे ।

मोटे अक्षर में छपे धातु-रूपों का पद-परिचय ( Parsing ) करते हुए निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ करो:—



(ग) मुञ्च मुञ्च गतिम् ददातिरे,

नाभिं नास्ति कपयो विजम्बेः ।

अथ चागच्छ कुले गृणे पुनः

वादि वारिपर ! किं करिष्यसि ॥

## पञ्चदश अध्याय

### प्रेरणाधिक क्रिपार्थ—लिजन्त ( Causals )

प्रेरणाधिक रूप—जब किसी की प्रेरणा से कोई क्रिया होती है तो उसे प्रेरणाधिक क्रिया कहते हैं ।

संस्कृत व्याकरण में प्रेरणाधिक क्रियाओं को लिजन्त कहा जाता है क्योंकि इन में धातु के आगे 'लिच्' प्रत्यय लगता है । लिच् के र और ष का श्लोष हो जाता है तथा 'इ' को अय हो जाता है । प्रेरणाधिक क्रिया बनाने के कुछ साधारण नियम नीचे दिये जाते हैं ।

१. चुरादिगण की तरह धातुओं के पीछे लिच् विकरण का प्रयोग होता है, जिसको अय हो जाता है ।

२. जिन धातुओं के अंत में स्वर हो उनके अन्तिम स्वर को हटाने पर वृद्ध हो जाती है । जैसे—अ + अय + ति = धी + अय + ति = ध्रावयति ( मुनाना है ) । उमा + कार + ति = उमा + अय + ति = उमाकारयति ( उरवाना है ) ।

३. आकारान्ति धातुआ क व द अय से पय प्रायः प' लग जाता है । स्नापयति । नह्वलाना है । स्नापयति । स्त्ववाना है । पा' हट इमका अपवाद है । पा ( पाना ) का प्रयोगाधिक बनना प्रावयति है । पा ( पालना ) का प्रयोगाधिक बनना पालयति ।

४. हलन्त ( उय ज्ञान्त ) धातुआ के अन्त्य हल ( ड्यजन्त ) के पहले यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या छ हा हो तो उन्हें क्रम से ए, ओ की



हन = हनयति ( मरवाता है )  
 शिषे = शिषयति ( पढ़ाता है )  
 दण्ड = दण्डयति ( दण्ड दिलाता है )  
 भण् = भणयति ( गिनाता है )  
 प्रच्छ = प्रच्छयति ( पुत्रवाता है )

अन = जनयति ( पैदा करता है )  
 शम् = शमयति ( शांत करता है )  
 गम् = गमयति ( ले जाता है )  
 इ = गमयति ( ले जाता है )  
 अधि + इ = अध्यापयति ( पढ़ाता है )

भाषारण्य मन्त्रमक क्रियाओं का ( प्रयोग्य ) कर्ता रिजन्त में हलं यान्त हो जाता है और प्रेरक कर्ता प्रथमा विभक्ति में आता है तब कर्म पहले की तरह द्वितीया विभक्ति में ही रहता है । यथा—

देवदत्तः आदनं पचति, पचन्तं देवदत्तं गन्तः प्रेरयति—इति एवं देवदत्तेन आदनं पाचयति ।

गति ( जाना ), वांछन ( ज्ञान करना ) और माना अर्थ वाली तब अकर्मक एवं त्रिनका कर्म ' शब्द ' हो, उन धातुओं का प्रयोग कर्म कर्म धन जाता है ।

रामो गच्छति तं कृष्णः प्रेरयति—इति कृष्णः रामं गमयति । रामः पठति, अध्यापकस्तं प्रेरयति—इति अध्यापकः रामं पाठयति ।

### अभ्यास

अनुवाद करो—

१. गुह्य शिष्य को पढ़ाता माता पुत्र को विशालय में भेजती है । भगवान् कृष्ण अर्जुन को विराट् स्वरूप का दर्शन कराते हैं । माँ बच्चे को दूध पिलाती है । मैं पुस्तक को भूमि पर रखता हूँ । केकेपी ने दण्ड को अपने दो वर बाद कराये । सीता ने मारीच का भीरम द्वारा मरवाया । अध्यापक पाठशाला में बालको को पढ़ाता है । राजा भोज वाचको को धन दिववाता था ।



# षोडश अध्याय

## कृदन्त ( Verbal Derivatives )

कृन् प्रत्यय—धातुओं के बाद जिन प्रत्ययों के लगाने से कर्म अथवा अव्यय बनते हैं वे कृन् प्रत्यय कहलाते हैं। जिन शब्दों के अन्त में कृन् प्रत्यय हों वे कृदन्त कहलाते हैं।

मुख्य कृन् प्रत्यय निम्नलिखित हैं। उनके वास्तविक स्वरूप एवं तथा उदाहरण भी नीचे लिखे जाते हैं—

प्रत्यय	स्वरूप	अर्थ	उदाहरण
१. शतृ	अन्, अन्	दृष्टा	पठन्
२. शानच्	आन, मान	,	सेवमान, कुर्वाण
३. क्त	त्	या	पठित
४. क्तवन्	तवान्	..	पठितवान्
५. क्तव्यन्	तव्य	बाह्य	पठितव्य
६. अनीयर्	अनीय	..	पठनीय
७. यन्	य	..	नेय
८. तुमुन्	तुम्	के लिये	पठितुम्
९. क्त्वा	त्वा	करके	पठित्वा

### (?) शतृ, शानच् ( वर्तमान कृदन्त )

इन दोनों प्रत्ययों का अर्थ 'दृष्टा' है। ये वर्तमान काल में प्रयुक्त होते हैं। परस्मैपदा धातुओं के साथ 'शतृ' का तथा आत्मनेपदी धातुओं के साथ 'शानच्' का प्रयोग होता है।





गप्—गच्छन् = जाता हुआ  
 हरा—परयन् = देखना हुआ  
 सद्—सोदन् = दुःखी होना हुआ  
 स्या—निष्ठन् = उदरता हुआ  
 मृ—स्मरन् = याद करता हुआ  
 पा—पिवन् = पीता हुआ  
 जि—जयन् = जीतता हुआ  
 याच—याचन् = माँगता हुआ  
 नी—नयन् = ले जाता हुआ  
 ह—हरन् = हरता हुआ  
 अद्—अवन् = खाना हुआ  
 स्तु—स्तुयन् = प्रशंसा करता हुआ  
 म्—भुवन् = बोलता हुआ  
 रुद्—रुदन् = रोना हुआ  
 स्वप्—स्वपन् = सोना हुआ  
 हन्—हन्न् = मारता हुआ  
 जाण्—जायन् = जागता हुआ  
 दा—ददन् = देता हुआ  
 मी—विभ्यन् = डरता हुआ

मु = मृत्वन् = मूतना हुआ  
 आप्—आप्नुवन् = पीना हुआ  
 तुद्—तुदन् = पीड़ा पहुँचाना हुआ  
 इप्—इच्छन् = चाहता हुआ  
 श्श—श्शान् = सूता हुआ  
 प्रच्छ्—पृच्छन् = पूछता हुआ  
 मुच्—मुञ्चन् = छोड़ता हुआ  
 रुध्—रुन्धन् = रोकता हुआ  
 मुञ्—मुञ्जन् = खाना हुआ  
 तन्—तन्वन् = फैलता हुआ  
 कृ—कुर्यन् = करता हुआ  
 क्री—क्रीणन् = खरीदना हुआ  
 शा—जानन् = जानता हुआ  
 मुष्—मुष्णन् = चुराना हुआ  
 मह्—गृह्णन् = लेता हुआ  
 चुर्—चोरयन् = चुराना हुआ  
 चिन्त्—चिन्तयन् = सोचना हुआ  
 तड्—ताडयन् = मारता हुआ  
 कथ्—कथयन् = कहता हुआ  
 भश्—भक्षयन् = खाना हुआ

### शानच्

भेष्—भेषमान = भेषा करता हुआ  
 लभ्—लभमान = पाता हुआ  
 भृन्—भृन्मान = शाना हुआ

वृध्—वृधमान = बढ़ता हुआ  
 मुद्—मोदमान = मुरा होना हुआ  
 मह्—महमान = महन करता हुआ



कुछ मुख्य मुख्य धातुओं के रूप नीचे दिये जाते हैं । इनके प्रयोग की वर्णा वाच्य-प्रकरण में की जायगी—

धातु	क	क वतु
भू—	भूत	भूतवान्
पठ—	पठित	पठितवान्
वद—	वदित	वदितवान्
पञ्च—	पञ्च	पञ्चवान्
नम्—	नत	ननवान्
गम्—	गत	गनवान्
दृश—	दृष्ट	दृष्टवान्
स्था—	स्थित	स्थितवान्
स्मृ—	स्मृत	स्मृतवान्
पा—	पीत	पीतवान्
सेव—	सेवित	सेवितवान्
उक्त्—	उक्त	उक्तवान्
हन्—	हत	हतवान्
दा—	दत्त	दत्तवान्
आप—	आप्त	आप्तवान्
इष्ट—	इष्ट	इष्टवान्
प्रच्छ—	पृष्ट	पृष्टवान्
कृ—	कृत	कृतवान्
गृह्—	गृहीत	गृहीतवान्
चुर—	चोरित	चोरितवान्
लभ्—	लब्ध	लब्धवान्
मृ—	मृत	मृतवान्
मुञ्च—	मुक्त	मुक्तवान्



## ( ३ ) तन्व्यन्, अनीय, यत् ( विधि कृदन्त )

इन प्रत्ययों का प्रयोग विधि अर्थ में होता है। ये कर्मवाच्य में प्रयुक्त होते हैं। उसे पढ़ना चाहिए - तेन पठितन्व्यम् अथवा पठनीयम्। तन्व्य तथा अनीय प्रत्यय तो सब धातुओं के साथ प्रयुक्त हो सकते हैं—यथा—कर्तव्य, करणीय, द्रष्टव्य, दर्शनीय, पान्य, पानीय इत्यादि। परन्तु 'यत्' प्रत्यय 'चाहिए' अर्थ में केवल स्वरान्त धातुओं के साथ प्रयुक्त होता है। यथा—पेयम्, रोयम्, देयम्, ध्येयम्, स्वेयम्, नेन, इत्यादि। ष्टकारान्त धातुओं को वृद्धि भी हो जाती है। यथा—कृ—कार्यम्, धृ—धार्यम्, स्मृ—स्मार्यम्, इत्यादि। कुछ व्यञ्जनात् धातुओं के साथ भी 'य' प्रत्यय का प्रयोग होता है। यथा—

शप्—शप्य, लभ्—लभ्य, रम्—रम्य, शक्—शक्य, मह्—मद, जन्—जन्य, वद्—वाह्य, हन्—ध्व्य, शान्—शाप्य, दुर्—द्वेष, पच्—पाच्य, यज्—याज्य, रुच्—रोच्य, त्यज्—त्याज्य, मुञ्—भोग्य, तथा भोग्य इत्यादि।

मुख्य-मुख्य धातुओं के तन्व्य तथा अनीय प्रत्ययान्त रूप नीचे दिये जाते हैं:—

ऋण् प्रत्यय स्वरान्त, षष्ठीान्त, इत्य अकारोन्ध (अर्थात् जिन के इत्य व्यञ्जन से पूर्व इत्य अकार हो) और शक् तथा मह् धातुओं के साथ लगता है। व्यञ्जनात् और अकारान्त धातुओं के साथ 'यत्' प्रत्यय लगता है। तथा यान्, जुप् आदि धातुओं के साथ 'यत्' प्रत्यय लगता है। उन सबका व ही रूप बचना है। विधायिणों के लिए प्रत्येक को अलग अलग बनाना बेजोड़ सा होता है इसलिए वहाँ केवल 'य' ही लिखा गया है।



आप—पाना	आप्तव्य	आपनीय
स्पृष्ट—धुना	स्पृष्टव्य	स्पृष्टनीय
पृच्छ—पूछना	प्रष्टव्य	पृच्छनीय
मृ—मरना	मर्तव्य	मरणाय
मुष्—छोड़ना	भोक्तव्य	भोचनीय
भुज्—खाना	भोक्तव्य	भोजनीय
कृ—करना	कर्तव्य	करणाय
क्री—खरीदना	क्रेतव्य	क्रयणीय
भृ—गुनना	भोतव्य	भ्रशाय
ग्रह्—लेना	ग्रहीतव्य	ग्रहणीय
पुर- चुराना	पोरयितव्य	पोरणीय
विन्त्—मोचना	विन्तायितव्य	विन्तनीय

### ( ४ ) तुमुन्, क्त्वा ( अन्वय कृदन्त )

तुमुन् तथा क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द अङ्गय होने हैं। उनके रूपों कभी कोई परिवर्तन नहीं होता। ये दोनों वाक्यों में प्रयुक्त हो सकते हैं। तुमुन् का वास्तविक रूप 'तुम्' है तथा 'क्त्वा' का 'त्वा' है। तु का अर्थ 'के लिए' अथवा 'को' है और 'त्वा' का 'कर' है। पठितु = पढ़ने के लिए या पढ़ने को, पठित्वा = पढ़ कर। गन्तुम् = जाने के लिए या जाने को, गन्त्वा = जा कर। दत्तुम् = देने के लिए या देने को दत्त्वा = देना कर। क्त्वा प्रत्यय वाक्य में प्रयुक्त होनेक क्रियाओं में से पहले होने वाली क्रिया में होता है। इसी क्त्वा प्रत्ययान्त क्रिया को पूर्वकारिक क्रिया कहा जाता है।

कृ० मुख्य वाक्यों क 'तुम्' तथा 'क्त्वा' प्रत्ययान्त रूप में लिखे जाते हैं -

धातु  
 इ = होना  
 पठ = पढ़ना  
 वृ = बोलना  
 पृ = पकाना  
 नृ = भुजना  
 ज्ञ = जाना  
 ह्य = हेरना  
 ह्य = उहरना  
 सृ = याद करना  
 पा = पाना  
 जि = जीतना  
 सेव = सेवा करना  
 लभ = पाना  
 शृथ = बड़ना  
 सह = सहन करना  
 याच = माँगना  
 नी = ले जाना  
 ह = हरना, धीनना  
 खड् = खाना  
 वृ = बोलना  
 इ = रोना  
 हृ = दोहना  
 प = पाना  
 मार = मारना  
 ज्ञ = जानना  
 थ - ड = पढ़ना

तुमुन  
 भषितुम्  
 पठितुम्  
 वदितुम्  
 पक्वितुम्  
 नन्तुम्  
 गन्तुम्  
 द्रष्टुम्  
 स्थातुम्  
 स्मन्तुम्  
 पातुम्  
 जेतुम्  
 सेषितुम्  
 लब्धुम्  
 वर्धितुम्  
 सोढुम्, सादितुम्  
 याचितुम्  
 नेतुम्  
 हतुम्  
 अक्षुम्  
 वक्तुम्  
 रोदितुम्  
 दाग्धुम्  
 त्वप्नुम्  
 हन्तुम्  
 वेत्तम्  
 अधेत्तुम्

पन्था  
 गृन्था  
 पठित्या  
 उदित्या  
 पथत्या  
 गत्या  
 गत्या  
 हृष्टा  
 स्थित्या  
 स्मृत्या  
 पात्या  
 जित्वा  
 सेवित्वा  
 लब्ध्या  
 वर्धित्वा  
 सहित्वा  
 याचित्वा  
 नीत्वा  
 हत्वा  
 जग्ध्या  
 उक्त्वा  
 रुदित्वा  
 दुग्ध्या  
 सुप्त्वा  
 हत्वा  
 विदित्वा  
 अधेत्वा



भी = डरना	भेगुम्	भीत्या
दा = देना	दातुम्	दत्त्वा
धम् = घूमना	धमितुम्	धान्या, धर्मि
आप् = पाना	आप्नुम्	आप्या
प्रच्छ् = पूछना	प्रच्छुम्	पृष्ट्वा
मुष् = क्षोड़ना	मोस्तुम्	मुस्त्या
मृ = मरना	मृतुम्	मृत्वा
मुञ् = खाना	मोक्तुम्	मुक्त्वा
कृ = करना	कृतुम्	कृत्वा
श्रु = सुनना	श्रोतुम्	श्रुत्वा
मह् = लेना	महीतुम्	गृहीत्वा
क्रो = सरीदना	क्रेतुम्	क्रोत्वा
चुर = चुराना	चोरयितुम्	चोरित्वा
चिन्त् = सोचना	चिन्तयितुम्	चिन्तयित्वा
कथ = कहना	कथयितुम्	कथयित्वा
तड् = मारना	ताडयितुम्	ताडयित्वा
भञ् = खाना	भक्षयितुम्	भक्षयित्वा

## संक्षेप

कृदन्त प्रत्ययों का व्यवहार संस्कृत अनुवाद में अत्यन्त आवश्यक है। यह स्मरण रखना चाहिए कि शन्, शानच् और क्तवतु का प्रयोग कर्मवाच्य में होता है। 'तेन पुस्तकं पठितं' या 'पठितव्यम्' के स्थान पर 'स पुस्तकं पठितं' या 'पठितव्यम्' अशुद्ध होगा। कर्मवाच्य में कर्ता हतोया में त्व कर्म प्रथमा में होता है।

अनुवाद में प्रायः प्रयुक्त होने वाली धातुओं के कृदन्त रूप संक्षेप में फिर एकत्र किये जाते हैं :—



## अभ्यास

अनुवाद करो—

१ शत, शानच्—

शतृ—राम पढ़ता हुआ घर जाता है। शिष्य नमस्कार करता हुआ गुरु के समीप जाता है। मोहन घर जाता हुआ गिर पड़ा था। बाग को देखना हुआ विद्यालय को जाऊँगा। हम देहली ठहरते हुए अरब को जाएँगे। बच्चा माता को स्मरण करता हुआ रोता है। पानी पीता हुआ पथिक मार्ग पर जाता था।

राजा मजाश्री को घन देता हुआ शोभा पाता है। नाचता हुआ जो किमके हृदय को नहीं हरता। मुद्र करते हुए श्री लोग स्वर्ग को प्राप्त हैं। मार्ग पूछना हुआ मैं यहाँ आया हूँ। अष्टारव को सूता हुआ ब्रह्म पतित नहीं हो जाता। अपना अपना काम धर्मपूर्वक करता हुआ गुरु आदर पाता है। वेद को गुनता हुआ शूद्र पतित नहीं हो जाता। शीता चिन्तन करता हुआ राम लंका को गया।

शानच्—माता पिता की सेवा करता हुआ भयङ्गकुमार स्वर्ग को जाता हुआ। मनुष्यो, तुम घर में सुख होने हुए रहो। मित्रा मंगिना हुआ राम हरिश्चन्द्र के पास आया। रोता हुआ बालक माता को वार करता है। दुःखों को महन करता हुआ पुत्रव योगी होता है।

(२) तुमुन्, वत्या—

तुमुन्—मैं पढ़ने के लिए विद्यालय जाता हूँ। ये दोनों बोलने के लिए उद्यत हैं। मोहवा मोहन बहाने के लिए घर गया। मैं आचार्य के नमस्कार करने के लिए आलोकित जाता हूँ। तुम दोनों जाने के लिए उद्यत हो जाओ। मैं उद्यत को बहाने के लिए हठ्या गया था।



# सप्तदश अध्याय

## वाच्य ( Voices )

संस्कृत में तीन वाच्य हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भासवाच्य

कर्तृवाच्य—इसमें कर्ता प्रथमा विभक्ति में, कर्म द्वितीया तथा क्रिया प्रायः लकारों में होती है। क्रिया के पुरुष, वचन आदि के अनुसार होते हैं।

उदाहरणार्थ—

रामः अरवं परयति = राम घोड़े को देखता है।

रामः बालकान् परयति = राम लड़कों को देखता है।

बालकी गृहं गच्छतः = दो लड़के घर को जाते हैं।

यहाँ दूसरे और तीसरे वाच्य से स्पष्ट है कि क्रिया कर्ता के अनुसार है। दूसरे वाच्य में कर्म ( बालकान् ) बहुवचन है तब भी क्रिया ( रामः ) के अनुसार एकवचन ही है। तीसरे वाच्य में कर्ता ( बालकी ) द्विवचन और कर्म ( गृहम् ) एकवचन है, क्रिया कर्ता के अनुसार से द्विवचन में ही है।

कर्मवाच्य—इसमें कर्ता तृतीया विभक्ति में, कर्म प्रथमा में क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

कर्मवाच्य में क्रिया के आत्मनेपदों रूप बन जाते हैं और वीच 'य' विकरण का प्रयोग होता है।



अरवीं द्रष्टव्यी, दर्शनीया या इत्यादि । कर्म के अनुसार यहाँ भी कि के पुरुष लिंग, वचन आदि में परिवर्तन होता है ।

भाववाच्य—इस में अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है । इसमें कोई कर्म नहीं होता । शेष सब नियम कर्मवाच्य के अनुबन्धी होते हैं । यहाँ भी कर्ता तृतीया में होता है । क्रिया आत्मनेपदी विकरण के साथ प्रयुक्त होती है । यथा—

घालकेन तुघने, रामेण सुष्यते, इत्यादि ।

भाववाच्य में क्रिया सर्वत्र प्रथम पुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है । यथा—

अहं तिष्ठामि = मया स्वीयते । तौ तिष्ठतः = ताभ्यां स्वीयते । तिष्ठथ = युष्माभिः स्वीयते । इत्यादि ।

### वाच्य-परिवर्तन

वाच्य	कर्ता	कर्म	क्रिया
कर्तृवाच्य	प्रथमा में	द्वितीया में	सहस्रों में
कर्मवाच्य	तृतीया में	प्रथमा में	आत्मनेपदी त, तस्य, अतो
भाववाच्य	तृतीया में	x	आत्मनेपदी त, तस्य, अतो
कर्तृवाच्य	सप्तम	सप्तम	अपरपर
कर्मवाच्य	सप्तम	सप्तम	सप्त । अहस्ता





मः कर्म भयसुनि  
 मः पत्नानि भयसुनि  
 मः पाठम् अस्मरन्  
 मः कार्यम् अस्मरन्  
 अहं शब्दम् अस्मरन्  
 ती पुस्तकम् अस्मरन्  
 पौरः धनम् अस्मरन्  
 रामः मारीचम् अस्मरन्  
 त्वं गच्छ  
 त्वं पठ  
 यूयं गृहं परयन्  
 यूयं जलं पिबन्

तेन कर्म भयसुनि  
 तेन पत्नानि भयसुनि  
 तेन पाठः स्मृतः ( अस्मरन् )  
 तेन कार्यं कृतम् ( अस्मरन् )  
 मया शब्दः स्मृतः ( अस्मरन् )  
 ताभ्यां पुस्तके गृहीते ( अस्मरन् )  
 पौरैः धनं पौरितम् ( अस्मरन् )  
 रामेण मारीचः हतः ( अस्मरन् )  
 त्वया गन्तव्यम् ( गम्यताम् )  
 त्वया पठितव्यम् ( पठताम् )  
 यूष्माभिः गृहः द्रष्टव्यः ( दृशताम् )  
 यूष्माभिः जलं पानव्यम् ( पीयताम् )

### अभ्यास

१ कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में बदलो—

(क) मः गृहं गच्छति । ती पुस्तकं पठतः । ते गृहं परयन्ति । अहं जलं पिबामि । आसी शब्दं शृणुवः । त्व पाठं स्मरन्ति । अहं जलं पिबामि । वनं अत्र निष्ठासः । कर्णः कवचं ददाति । मनुष्यः धनम् आप्नोति ।

(ख) अहं कार्यं करिष्यामि । अहं पाठं स्मरिष्यामि । त्वं किं पठिष्यसि । आसी पत्नानि प्रदीष्यावः । नृगः चौरान् दण्डयिष्यति ।

(ग) अहं पुस्तकम् अस्मराम् । अहं गृहं परयाम् । ती उपवनम् अपश्यन्तम् । ते जलम् अपिबन् । वनं धनम् आप्नवाम । अहं जलम् अपिबाम् । अहं गृहं अपश्यम् । म वनम् आप्नोत् । रामः लक्ष्मणम् अपश्यत् । अहं कार्यम् अस्मराम् ।



नृपः दास्यति ।  
 मृगः धाविष्यति ।  
 ती धाविष्यतिः ।  
 अहं धाविष्यामि ।  
 जनः धदिष्यति ।  
 अहं हसिष्यामि ।  
 रगः नत्स्यति ।  
 वयं चलिष्यामः ।  
 मेघः वर्षिष्यति ।  
 दुःखं भविष्यति ।  
 मूर्यः वदेष्यति ।  
 पिकः कृत्रिष्यति ।

मैं दूँगा ।  
 घोड़े दौड़ेंगे ।  
 हम दो भागेंगे ।  
 देवदत्त भागेगा ।  
 बालक बोलेंगे ।  
 मूर्ख हँसेंगे ।  
 मोर नाचेंगे ।  
 धायु चलेगा ।  
 अमृत थरसेगा ।  
 रात्रि होगी ।  
 चन्द्र निकलेगा ।  
 पत्नी चाहचहाएँगे ।

११

### अभ्यास ३

( लोट् ) आज्ञा ( Imperat ve mood )

हिन्दी में अनुवाद करो:

ते पठतु ।  
 युवां पठतम् ।  
 त्वं गच्छ ।  
 वृष गच्छत ।  
 न्व पठत  
 वयं पठत  
 न नत्सत  
 न्व पठत

संस्कृत अनुवाद करो :—

तू पढ़ ।  
 तुम सब पढ़ो ।  
 तुम दोनों जाओ ।  
 व सब जायें ।  
 व दोनों देखें ।  
 व सब देखें ।  
 हम जाना नमस्कार करें ।  
 हम जाना वाद करें ।



वयम् अगच्छाम ।  
 अहम् अपरयम् ।  
 ते अपरयन् ।  
 वयम् अनमाम ।  
 ते अस्मरन् ।  
 मृगः अधावत् ।  
 अहं जलम् अपियम् ।  
 वयम् अपताम ।  
 ते अदहन् ।  
 ते अद्यादन् ।  
 युवाम् अक्रोडतम् ।  
 वयम् अयच्छाम ।  
 मः अधावन् ।  
 अरवाः अधावन् ।  
 अहम् अवदम् ।  
 ते अहमन् ।  
 मयूरः अनृत्यत् ।  
 ती अपलताम् ।  
 मेघः अवपत् ।  
 रात्रिः अमथत् ।  
 ते अदृश्यन् ।  
 बालकः अन्वपन् ।  
 शिष्याः अपृच्छन् ।  
 माता अचिन्तयन् ।

तुम दोनों जाते थे ।  
 हम सब देखते थे ।  
 तू देखना था ।  
 मैं नमस्कार करता था ।  
 हम सब याद करते थे ।  
 घोड़ा भागता था ।  
 बालक दूध पीने थे ।  
 मैं गिरना था ।  
 अग्नि जलाती थी ।  
 हम सब खाते थे ।  
 वे दोनों खेलते थे ।  
 मैं देता था ।  
 अन्धकार भागता था ।  
 हरिण भागने थे ।  
 वे दोनों धोलते थे ।  
 हम सब हँसते थे ।  
 मोर नाचते थे ।  
 वायु चलती थी ।  
 बादल वर्षा करते थे ।  
 प्रातःकाल होता था ।  
 मनुष्य प्रमत्त होते थे ।  
 ये सब सोने थे ।  
 हम सब पूछते थे ।  
 हम दोनों चिन्ता करते थे ।

## ( विधिलिङ् ) विधि ( Potential Mood )

संस्कृत में अनुवाद करो:—

१. पठेत् ।  
 २. पठेत् ।  
 ३. गच्छेत् ।  
 ४. गच्छेत्वात् ।  
 ५. परदेयुः ।  
 ६. परदेयुः ।  
 ७. नन्देत् ।  
 ८. नन्देत् ।  
 ९. धामेत् ।  
 १०. धामेत् ।  
 ११. पिबेत् ?  
 १२. पिबेत् ?  
 १३. शूरेत् ।  
 १४. शूरेत् ।  
 १५. शूरेत्वात् ।  
 १६. शूरेत् ।  
 १७. शूरेत् ।  
 १८. शूरेत् ।  
 १९. शूरेत् ।  
 २०. शूरेत् ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

वह पढ़े ।  
 वे सब पढ़ें ।  
 वे दोनों जाएँ ।  
 वे सब जाएँ ।  
 वह देखे ।  
 हम सब देखें ।  
 वे दोनों नमस्कार करें ।  
 वे सब याद करें ।  
 ये दोनों भागें ।  
 क्या मैं पीऊँ ?  
 क्या वह गिरे ?  
 अग्नि जलाए ।  
 क्या हम सब खाएँ ?  
 क्या हम दोनों खेलें ?  
 क्या मैं हूँ ?  
 क्या पीछा दूँ ?  
 क्या हम दोनों बोलें ?  
 हम दोनों हँसें ।  
 सब नन्दें ।  
 सब धामें ।  
 सब पिबें ।  
 सब शूरे ।  
 सब शूरे ।

सुतायै मालाकारः भूमिं खनति ।

सुभ्यम् अहं फलं दास्यामि ।

कन्याणाय यत्नं कुरु ।

स्वनाशाय यत्नं न कुः ।

जलानयनाय गृहं गच्छ ।

पित्रे जलमानय ।

मात्रे फलमानय ।

पत्न्ये दुःखं महने ।

विदुषे धनं यच्छत ।

→  
→  
→  
→

राम ने सीता के लिए रावण से मारा ।

तू मुझे पुरस्क दे ।

राजा कल्याण के लिए रावण को क्रोध नारा के लिए होना है ।

स्त्रियों पानी लाने जाती हैं ।

श्वशुर पिता के लिए पानी लाया ।

घट माता के लिए भोजन काया ।

पत्नी पति के लिए दुःख सहने ।

राजा विद्वान् को धन देता है ।

अभ्यास =

कारक

अपादान और मन्वन्ध ( Ablative and Genitive)

हिन्दी में अनुवाद करो—

परवाना जल पतति ।

अहं गृहान् गच्छामि ।

आकाशान् वर्षा भवति ।

उपवनान् राम आगच्छति ।

म ज्ञाने म विभति ।

मृषह श्वशुर निम्नमान् ।

इति नर नरु आगच्छति ।

न न वरमन ।

व न समानाय अपाच्छति ।

मरुत में अनुवाद करो—

वृक्ष से पत्ता गिरता है ।

राम घर से जाता है ।

कूत आकाश में गिरते हैं ।

बालक बाग में आता है ।

गृह विप्ला म डरत है ।

नींदिया पहाड़ में निचली है ।

गंगा हिमालय से आती है ।

तुम वृष कामा से डरते ।

वै वनमम से अपाच्छा गया ।





युष्माकं कुत्र गृहम् ?

युष्मभ्यं किं रोषते ?

अस्माकं विद्यालये सः बालकः  
पठति

मुन्हात बाबा बनारस में रह  
है।

हमारे लिए आप गङ्गा-जल लाने  
हमारा गङ्गा हृदय विरवाभ है।

## अभ्यास ११

### विशेषण ( Adjective )

सुन्दरः देवाः एषः ।

सुन्दरी बालिका एषा ।

सुन्दरं पुष्पं एतत् ।

मनोहरे फले एते हृदयं हरतः ।

कृष्णं अरथं सः आरोहति ।

श्वेताः शशकाः यनेषु धमन्ति ।

मलिनानि यस्त्राणि न धारयत ।

सुपिनाय जलं यच्छत ।

सुसुहिनाय अन्नं यच्छत ।

अन्ताय आश्रयं यच्छत ।

शीतलेन जलेन तृषां शमयत ।

युष्मासु कः योग्यतमः अस्ति ?

नव कनीयान भ्राता कः अस्ति ?

यह छोड़ा सुन्दर है।

यह बेल सुन्दर है।

यह वस्त्र सुन्दर है।

ये सुन्दर फूल हृदय को हरते हैं।

राम काले घोड़े पर चढ़ता है।

मेरे घर में दो श्वेत खरगोश हैं।

मलिन वस्त्रों से मनुष्य जहाँ तक

बैठ जाता है।

प्यासा आदमी कुरे पर गया।

भूखा क्या पाप नहीं करता ?

अन्त पथिक वृत्त की छाया में

बैठ गये।

शीतल जल से हृदय शान्त

होता है।

यह बालक श्रेणी में सब से

अधिक योग्य है।

यह मेरा छोटा भाई है।

पर्वतः उच्चतमः ?  
 : ज्ञानान् भ्राता आसीत् ।  
 कन्या चतुरतमा अस्ति ।  
 ज्ञानं दूरतरम् अस्ति ।  
 तं पवित्रमं तीर्थम् अस्ति ।  
 त्वरः मधुरतमः अस्ति ।

हिमालय उच्चतम पर्वत है ।  
 तुम दोनों में कौन बड़ा है ?  
 मेरा घर विद्यालय से सब से  
 अधिक दूर है ।  
 इन दोनों कन्याओं में कौन अधिक  
 चतुर है ?  
 सब नदियों में गङ्गा नदी सब से  
 अधिक पवित्र है ।  
 उसका जल सबसे अधिक मधुर है ।

### अभ्यास १२

#### संख्यावाचो ( Numerals )

दृष्टेः श्रोत्रे पुण्याणि च ध्यानय ।

वस्त्रः कन्याः एतस्यां श्रेण्यां  
 पठन्ति ।

विवारि पुष्पकानि कुत्र नयति ?

अश्वानु दालकेषु सः कुशलतमः  
 अस्ति ।

दशरथस्य त्रिषुः भार्याः आनन  
 बहुदशवर्षानन्तरं प्रायः उपाधिम्  
 अधिनन्ति ।

पञ्चमशतानन्तरं  
 मरणं भवति

मेरी दो बहनें तथा तीन  
 भाई हैं ।

वेद चार हैं. दर्शन शास्त्र छः हैं ।

बाग में चार सुन्दर फूल खिल  
 रहे हैं ।

पाँच पाँच भाई थे ।

सप्ताह में नाव दिन होते हैं ।

हमारे विद्यालय में इन  
 विद्यार्थी हैं

वर्ष में बारह नाम होते हैं ।

भासस्य त्रिंशत् दिनानि भवन्ति  
 युधिष्ठिरः पञ्चविंशति-वर्षपर्यन्तं  
 राज्यमकरोत् ।  
 पञ्चाशत्-वर्षानन्तरं पुरुषः  
 वानप्रस्थाश्रमं प्रविशेत् ।  
 अस्मिन् विद्यालये छात्राणां  
 पञ्चोत्तरपञ्चाशत् पठति ।  
 सप्तदशशत-अधिक-सप्तदशशततमे  
 वर्षे प्लासो-सुद्धमभवत् ।  
 सहदेवः पञ्चमः पाण्डव  
 आसीत् ।  
 दशमश्रेण्यां चतुरशीतिः छात्राः  
 पठन्ति ।  
 एष मे पठः पुत्रः ।  
 अष्टमे वर्षे ब्राह्मणस्य उपनयनं  
 भवति ।

श्रीराम चौदह वर्षों के लिए  
 को गये ।  
 पुरुष २५ वर्ष पर्यन्त ब्रह्म  
 में रहे ।  
 पञ्चम वर्ष तक मनुष्य गृहस्था  
 में रहे ।  
 हिन्दू-विद्यालय में प्रत्येक भेरी  
 ८५ विद्यार्थी हैं ।  
 सप्तम श्रेणी में केवल ७५ बच्चे  
 पढ़ते हैं ।  
 दशम-महाविद्यालय में २१  
 विद्यार्थी पढ़ते हैं ।  
 १९३६ में महासभा का अधिवेशन  
 त्रिपुरी में हुआ ।  
 भरत दशरथ का दूसरा लड़का  
 था ।  
 मैं दसवें दिन आप के  
 आऊँगा ।

### अभ्यास १३

#### उपपद विभक्तियाँ

नगर परितः परिखा अस्ति ।

शहर के चारों ओर  
 बन्द है ।

इन्द्रधारमभितः गङ्गा नदी  
 प्रवहति ।

हमारे नगर के दोनों तरफ  
 बाग है ।



## अभ्यास १४

अव्यय (Indeclinable)

हिन्दी में अनुवाद करो—  
यत्र धर्मस्तत्र जयः ।

अत्र भारतयोः कालिदामः  
कविरभवत् ।

कदा मे भाग्योदयो भविष्यति ।  
धीमनः सर्वत्र समादरो भवति ।

यदा रामो वनमगच्छन् तदा  
दशरथोऽस्मिन् ।

कदास्माकं देशः गौर्यं प्राप्स्यति ?

पुनरेवं वृथात्वार्य मा कुरु ।

कदापि पारिजः मुग्धं न आयते ।

तूष्णीं भृत्या सर्वे मन्दिरं प्रावि-  
रान् ।

यतोऽस्मिन् सर्वे वर्षा नाभवन् अतो  
दुर्मिथमभवत् ।

यत्र इन्द्रियाणि सक्रानि नावन्  
इवमवतन कुरु

मंस्कृत में अनुवाद करो—  
जहाँ राम जायगा, वही जय

पत्नी सीता जायगी ।  
यहाँ हमारे देश में शक्ति  
रहते थे ।

तुम दोनों क्या जाओगे ?  
विद्वान् सब जगह पूजा  
हैं ।

जय यमं शत्रु आतो है  
सुन्दर फूल खिलते हैं ।  
आप हमारे लिए पुनर्दे  
लायेंगे ?

यदि नू लेमा फिर कोण  
अच्छा न होगा ।

मनुष्य कर्मो भी असत्य न  
योगी न करे ।

तुम सब यही गुणधर देते  
अमो आता है ।

कयेंक वर मुहारा वदा भार  
अत मुग्धे वमहा मम  
काना वाशित ।

एव नक मे नगर मे नही  
एव नह आप वही छूरे



पाण्डोः पञ्च पुत्राः अजायन्त, तस्य  
 विचाम् अनितरामहृष्यन् ।  
 भवान् किमिदं मया कुप्यति ।  
 यो यं तुदति स तं तुदति ।  
 यो यत् मुखमिच्छति, स तत्  
 विन्दति ।  
 यत् प्रदयमि तत् कथयिष्यामि ।

मम माता त्रयोविंशति-अधिक-एको-  
 नविंशतिशततमे वर्षे अश्रियत् ।  
 पुरुषाः परेषां पदार्थान् न चोर-  
 येयुः ।  
 यो यद् विचारयति तद् अथरयं  
 भवति ।  
 मम पिता सर्वेषां कल्याणं  
 चिन्तयति । मदैव च सर्वेषां  
 शुभं कथयति

जय दशरथ के चार पुत्र उत्पन्न  
 उसका चित्त अतिप्रमत्त हुआ  
 पिता पुत्र पर क्रोध करना था ।  
 किसी जीव को दुःख न दो ।  
 मनुष्य जो चाहता है, वह  
 जाता है ।  
 जय तु परत पूछेगा, तब मैं क  
 दूंगा ।

शरण के मृत्यु-ममाचार से ज  
 पिता भी मर गया था ।  
 मेरी पुस्तक किमने सुगर्ह है !

मौना दुःख में परमेस्वर का वि  
 करती थी ।  
 वह भगवान् को प्रतिदिन इ  
 में पूजती थी ।

### अध्याय १६

गणप्रयोगाः ( अशदि, जुहोत्यादि, स्वादि )

हिन्दी में अनुवाद करो—  
 अह न कर्ण्य मामसधि ।

अह न कर्ण्य मामसधि ।  
 अ म न

गण्डुत में अनुवाद करो—  
 जो तैमा अप्र थाता है  
 कमहा विना हो जाता है ।  
 इस वेग में बहुत धन काय  
 बंद-बंद महापुरुष थे ।

सोऽज्वात्—मित्र. कथं त्वं  
कथयानि हेतुयन्ति ?

ःगाः दुहन्ति ।

शः रुदन्ति ।

गणिनः हन्ति स पापमा-  
नि ।

ने स समयं विनाशयति ।

क्व लुहोति दक्षिणां च  
ने ।

वन्तः पापान्न विभ्यति ?

विद्वद्भ्यः सन्मानं  
ने. ब्राह्मणेभ्यस्व प्रतिष्ठां  
श्नन्ति ।

ग्धेन गुरुः विद्यापात्रं  
यम् आप्नोति ।

हन् पुरुषः संतारे सुखम्  
प्स्यति ।

वं पठितुं शक्नोषि ?

अहं तु नित्यं जनं द्रष्टुं न  
शक्नोमि ।

राम बोला—आज हमारे देश में  
विपत्ति का समय है ।

गवाला कब दूध दुहेगा ?

घालक रोता है और दूध माँगता  
है ।

शोरान ने हरिण को मारा और  
आश्रम में आये ।

जो दिन में सोएगा वह आलसी  
हो जायगा ।

श्रुतिज्ञ लोग यज्ञ करते हैं और  
स्वर्ग की इच्छा करते हैं ।

जो पाप से डरता है, वह संसार  
में सुखी होता है ।

जो निर्धनों को धन, भूखों को  
भोजन और प्यासों को  
पानी देता है, वह परमपद  
को प्राप्त करता है ।

गोविन्द ने भाग्य से धन के कोश  
को वन में पाया ।

जो परोपकार करेगा, वह यश  
तथा कीर्ति को पायेगा ।

क्या आप इस पत्र को पढ़ सकते  
हैं ?

जो इन पत्र को पढ़ सकेगा उसे  
मैं दन्त दूँगा ।



गणप्रयोगाः ( रुधादि, तनादि, क्पादि )

'हिन्दी में अनुवाद करो:—

मुनयः चित्तशुद्धीः रुन्धन्ति, योगं  
च अनुनिष्ठन्ति ।

वीरा एव वसुन्धरां मुञ्जते ।

यः स्वचित्तमोश्वरे युनक्ति, स  
सुखी भवति, दुःखानि च  
तरति ।

करिष्यामि करिष्यामि, करि-  
ष्यामीति चिन्तया,  
मरिष्यामि मरिष्यामि,  
मरिष्यामीति विस्मृतम् ।

भौरामः पितुराज्ञायाःपालनमकरोन्  
यनं चागच्छन् ।

परिश्रमं कुरु, स्वाध्याये च चित्त  
कुरु ।

संसारं दुःखानां सहनं कुरु, अवरयं  
सफलं भविष्यति ।

संस्कृत में अनुवाद करो:—  
जो अपने मन को रोक्ता है,  
इंद्रियाँ उसके वश में  
जानी हैं ।

जिस राजा में बल होता है,  
पृथिवी का भोग करता है,  
यदि मनुष्य ईश्वर में अपने पि  
को जोड़े तो संसार के दुः  
से पार हो जायगा ।

सच्चनों के गुण अपनी मदि  
को फैलाते हैं ।

ईश्वर अपनी मदिमा को संस  
में फैलाता है ।

जो शुभ कर्म करेगा, शुभ फ  
पायगा—अशुभ कर्म करे  
अशुभ फल पायगा ।

यदि तू परिश्रम करता तो अवा  
उत्तीर्ण हो जाता ।

जो संसार के दुःखों को धैर्य  
सहन करेगा—वह जीवन  
परीक्षा में सफल होगा ।



मुनिः प्रथममुनिप्यति ।  
 तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृ-  
 निश्रयः ।  
 प्रोतः प्रतरथे मुनिराश्रमाय ।

कविः काव्यं प्रणयति ।  
 अपनेप्यामि ते दर्शम् ।  
 पुस्तकमानय ।  
 रामः मीमांसां पर्यणयन् ।

गुरुः शिष्यमुपनयते ।  
 गीता राममनुनयति ।  
 कलहस्य मूलं निर्णयति ।

देवेश्य बलिमुपहरति ।

द्विज पुत्राणि आहरति ।

रावणः मातामपाहरन् ।  
 वेगवः अश्विनमुपदिशति ।  
 हि मन्दिर्गानि म्यामी ?  
 हि मन्दिर्गानि प्रभु ?  
 यद् यदाचरति श्रेष्ठ, तदादेव-

दस जन

अन्तरात्मानं नान

भगवान् बुद्ध तप करते हैं ।  
 जय में प्रातः उठता हूँ, मेरा  
 अति प्रसन्न होता है ।  
 समुद्रगुप्त दिग्विजय के  
 रथाना हुआ ।

मैं काव्य बनाता हूँ ।  
 पर्या धूलि को दूर कर देता हूँ  
 मेरे पास अपने भाई को ला ।  
 नल ने दमयन्ती से वि-  
 क्रिया ।

मैं तुम्हें जनेऊ पहनाऊँगा ।  
 अपने मित्र को मनाओ ।  
 मैं फैमला करता हूँ हि आप ।  
 नहीं है ।

पार्वती पनि को फूल भेंट क  
 दे ।

मुद्रामा भोक्तव्य के लिए तं  
 लाया ।

अज्ञान विवेक को गुगला है ।  
 पिता पुत्र को बदरेरा देता है ।  
 आप क्या बदरेरा देते हैं ?  
 आप क्या आज्ञा देते हैं ?  
 मालह वरु का अचरणा में पु  
 मित्र का तरह आपसु क  
 पनि क राष्ट्र पना करे ।



भ्रातरः न विगृह्णन्तु ।  
 इन्द्रियाणि निगृह्णन्तु ।  
 पितः ' वनगमनाय अनुजानीहि ।

दशरथः भरताय राज्यं  
 प्रतिजानीते ।

पांडव कौरवों से युद्ध करने  
 अपनी जयान को रोको ।  
 राम ने माता को वन उ  
 लिए आशा दे दी ।  
 प्रतिज्ञा करो कि तुम म  
 राज्य और राम को  
 दोगे ।

अभ्यास १६

( शिजन्त ) प्रेरणार्थक क्रिया

हिन्दी में अनुवाद करो—  
 वैशिणुः पितरः स्वपुत्रान् न  
 पाठयन्ति ।  
 जननी शिशु क्षीरं पाययति ।

राजा स्वपुत्रान् विघ्नशमणः  
 समापं गमयति ।  
 निम्बशयनः प्राणिनः न घान-  
 यत ।  
 कि म नाजन पाचयति ।

संस्कृत में अनुवाद करो—  
 आचार्य शिष्यों का धेद पढ़ा  
 है ।  
 माता पुत्र को अपने हाथ में पाने  
 पिलाती है ।  
 पिता ने पुत्र को पढ़ने के लिए  
 विद्यालय भेजा ।  
 माता ने भौराम से हरिण को  
 मरवाया ।  
 तुम मेरे लिए कुछ भोजन प  
 याओगे ।  
 राजा ने मरवाया को बध्द दितारे ।  
 पण्डित जी आज रात का रज  
 यण को क्या मुतायन ।

राजा ने मरवाया को बध्द दितारे ।  
 पण्डित जी आज रात का रज  
 यण को क्या मुतायन ।

स्वविराट्त्वल्पम-  
कृतम् ।

नैव स्वयमेव कुरु न  
इत्यान्वयेन कारय ।

नैव वशात्प्रमपनत्कारयत् ।

नैवो महाभारतयुद्धे सन्स्व-  
कारयवर्षमनाशयत् ।

नैव उल पायय, ह्युघितान्  
अन्नं भोजय ।

नैव नावरः शिशून् दौलायां  
स्वारयन्ति ।

नैव वचनैः हृदयं न दाहय ।

नैव मूर्खान् अभ्यापयामि ।

मैंने पुत्र को मुन्दर वित्र  
दिल्लायें ।

मैंने अपना कार्य अपने भाई से  
कराया ।

जब मैं कल यहाँ आऊँ, मुझे इत  
विषय का स्मरण कराना ।

अपने धन का नाश मत करो ।

जो भूखों को भोजन कराता है,  
उस पर ईश्वर प्रसन्न होता है ।

माता दूध को पालने में प्रेम से  
मुलती है ।

कड़ु वचन हृदय को जलाता है,  
शान्त नहीं करता ।

आप इन बालकों को पढ़ाएँ ।

अभ्यास २०

हृदय ( शब्द शान्ति )

हृदय में अनुवाद करो—

पुत्र स्वयमेव कुरु न

नैवो महाभारतयुद्धे

नैवो

मन्दर मे अनुवाद करो—

मैंने अपना कार्य अपने भाई से  
कराया ।

जब मैं कल यहाँ आऊँ, मुझे इत

विषय का स्मरण कराना ।

गच्छन् पुरुषः पत्नितानि  
कलानि अपरयत् ।

दुग्धं विषन् घालको बुद्धिमान्  
धलवान् ध भवति ।

अहं स्वदेशावस्थां परयन्  
प्राचीनगीर्वां च स्मरन्  
धिलपामि ।

अभियमाणः पुरुषः स्वकर्माणि  
स्मरति ।

धनिको दानं ददत् शोभते ।

नरयन्तं स्वदेशं परयन् को न  
विषीदति ।

धनमाप्नुवन्तं जनानां प्रकृतिः  
परिवर्तते ।

त्वं मम गृहं पृच्छन्नागच्छ ।

सेवमानाय शिष्याय गुरुः विद्यां  
यच्छति ।

यशो लभमानाः मनुष्याः धनं  
नेच्छन्ति ।

वर्धमान पुत्रं पश्यन् पिता  
पहस्यति ।

शयानं शिशुं न बोधय ।

जाते हुए पथिक ने तालाब के  
किनारे पर एक वृद्ध को  
देखा ।

यह तालाब से पानी पीना हुआ  
आगे चला ।

हम दोनों बाघ को देखते हुए  
और पाठ याद करते हुए  
घर को गये ।

मरता क्या न करता ।

राजा खुद दान देता हुआ धर्म  
प्रमत्त होता था ।

नष्ट होता हुआ धर्म वंश को  
नाश कर देता है ।

धन पाता हुआ कौन अभिमान  
नहीं हो जाता ।

पथिक मार्ग पृच्छता हुआ मुनि ने  
आश्रम में पहुँच गया ।

सेवा करता हुआ शिष्य गुरु से  
विद्या ग्रहण करता है ।

कृपा पाता हुआ शिष्य हो विद्या  
को सफल करता है ।

बढता हुआ चन्द्रमा आँसुओं को  
आनन्दित करता है ।

मिठ मोता हुआ भी भयानक  
होता है ।





पुत्राः पितॄन् मुग्रं शतुं प्रयतन्ते ।

किं प्रष्टुं रामः कौरव्यामातर-  
मुपागच्छन् ?

शिगुरपि मनुं न इच्छति ।

तस्य सुमधुरं वचनं श्रोतुं मम  
हृदयमुमुक्षुं विद्यते ।

सीता प्रत्यहं सन्ध्यां कर्तुं नदी-  
तीरमगच्छन् ।

कन्यां पश्यान् पितुं जामातु-  
र्गृहमगच्छन् ।

बालः पुत्रकं चोरपितुं प्रयतते ।

दान देने के लिए हरिश्चन्द्र  
विरवामित्र को बुलाया ।

राजा जनक प्रश्न पूछने के लिए  
शुषि याज्ञवल्क्य के पास गये ।

कौन मरना चाहता है ? मरना  
जीना चाहता है ।

वेद-मन्त्रों को सुनने के लिए  
पाठशाला आउँगा ।

क्या आप काम करने के लिए  
मेरे घर आयेंगे ।

विद्या प्रदक्ष करने के लिए शिवा  
महा उग्र रहें ।

चोर चोरी करने के लिए घरों के  
पर में गया ।

अभ्यास २०

कृदन्त ( कन्या )

कन्या में अनुवाद करो

पिता मन्त्रा शिवा मन्त्रा पुन वच्य  
वचन

पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः  
पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः

पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः  
पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः

पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः  
पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः

पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः  
पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः पुत्रः

मन्त्रक में अनुवाद करो—

निज नरक कौन मुनी  
हाना है ।

मन्त्रक विद्या पढ़कर योग्य है  
मरना है ।

मन्त्रक्या भाजन पढ़ा कर लगे  
क काम से जाना है ।

मन्त्रक गुरु का  
पर जाना है



पुत्राः पितॄन् मुग्धं दातुं प्रयतन्ते ।

किं प्रष्टुं रामः कौशल्यामातर-  
मुपागच्छत ?

शिशुरपि मनुं न इच्छति ।

तस्य सुमधुरं वचनं श्रोतुं मम  
हृदयमुन्मुक्तं विद्यते ।

सीता प्रत्यहं मन्ध्यां कतुं नदी-  
तीरमगच्छत ।

कन्यां प्रहीतुं पिता जामातु-  
गृहमगच्छत ।

बालः पुस्तकं चोरयितुं प्रयतते ।

दान देने के लिए हरिश्चन्द्र  
विरवानिन्द्र को बुलाया ।

राजा जनक प्ररत पूजने के लिए  
शुचि याज्ञवल्क्य के पास गए ।

कौन मरना चाहता है ? मरने के  
जोना चाहता है ।

वेद-मन्त्रों को सुनने के लिए  
पाठशाला आऊंगा ।

क्या आप काम करने के लिए  
मेरे घर आयेंगे ।

विद्या ग्रहण करने के लिए शिष्य  
सदा उत्सव रहें ।

चोर चोरी करने के लिए घर  
घर में गया ।

## अभ्यास २२

### कृदन्त ( क्त्वा )

हिन्दी में अनुवाद करो—

शुद्धो मृत्वा शिशुः मृत्वा पुनर्जन्म  
गृह्णाति ।

चन्द्राषोडः विद्यालये पठित्वा  
पितुर्गृहमगच्छत ।

मूढो मिष्टान्नं पक्व्या अनिर्घीनं  
भोजयति ।

भवन्त नन्वा मम हृदय प्रमीरति ।

मंस्कृत में अनुवाद करो—  
निर्धन होकर कौन सु  
होता है ।

मनुष्य विद्या पढ़कर योग्य  
मरना है ।

रमोश्या भोजन पका कर स्व  
के पास ले जाता है ।

शिष्य गुरु का तमस्कार  
घर जाता है ।



## अभ्यास २६

संस्कृत में अनुवाद करो ।

१

ईश्वर संसार को बनाता है । वही इसे पालता तथा इमकी र करता है । सूर्य अपने प्रकाश से अन्धकार को दूर कर देता है । इ के लिए शिष्य उपहार लाता है । विद्वान् का यश सारे संसार में फैल है—राजा का केवल अपने देश में । नदियों का जल पर्वतों से आ है । सब नदियों में गंगा नदी परम पवित्र नदी है । बेटों पर भौरे (शुं) आनन्द करते हैं । वृत्तों के फूल और फल चिन्ता को प्रसन्न करते हैं । घाण्डी का बल आज सब से बड़ा बल है । जिमकी घाण्डी में बल है व संसार पर शासन करता है । जो शुद्ध मन से कार्य करता है, उमा कामनाएँ सफल होती हैं ।

२

ये दो बालक पुस्तकों को पढ़ते हैं । हम दोनों कल ( स्वः ) बाग व देखेंगे । जो हम तालाब (सरोवर) का पानी पीयेगा, वह बीमार (इष्य) हो जायगा । शिष्य को गुरु की सेवा करनी चाहिये । मैंने कल (प्रः) अपने मित्र के घर में भोजन खाया था । कल ग्वाले ने (गोपः) गौ व नहीं दुहा, अतः हम सब ने दूध नहीं पिया । बच्चा (शिशु) माता क गोद (अंक) में निःशंक सोता है । सब कोई मृत्यु से डरते हैं । जो दान देता है वह अपना ही उपकार करता है न कि औरों का । बाग में मो ताचते थे । मैं चाहता क्या था और हो क्या गया । गुरु ने अपने शिष्य ने प्रश्न पूछा । जो जैमा करता है परलोक में वैमा फल पाता है ।

३

इम सुन्दर वृत्त की शान्तल छाया में हरिण विधाम करते हैं ।



श्रीराम ने सीता को रावण के बन्धन से मुक्त किया (मोक्षित)। क्या तुने सोचा है कि तेरे इस कार्य का क्या परिणाम होगा ? तुम्हें ऐसा फिर न करना चाहिये । तुम्हें हमेशा अपनी मर्यादा में रहना चाहिये, अपने बड़ों का कहना मानना चाहिये और उनके विचारों का आदर करना चाहिये ।

११

किमी जंगल में भामुरक नाम का शेर रहता था । वह प्रतिदिन जीवों को मार कर आहार करता । सब जीवों ने मिल कर उसे धुंसा — 'तुम प्रतिदिन अनेक पशुओं का वध न किया करो । हम हर रोज एक पशु तुम्हारे आहार के लिए स्वयं भेंट करेंगे ।' शेर ने कहा— 'ऐसा ही हो ।'

एक दिन खरगोश की बारी आ गई । वह धीरे धीरे जाता हुआ सोचता था कि किस तरह शेर का वध किया जाय । उसे एक कुम्हों नखर आया । उसमें उसने अपनी परछाई को देखा । उसे शेर के वध का उपाय पता लग गया ।

जब वह भूखे शेर के पास पहुँचा । उसने गर्ज कर पूछा कि शेर करके तुम क्यों आये हो ? खरगोश बोला स्वामिन्, मुझे एक और शेर ने मार्ग में रोक लिया था । क्रोध में शेर ने पूछा वह कहाँ है ? पहले मैं उसे मारूँगा तब तुम्हें खाऊँगा । खरगोश ने शेर को कुम्हों के पास ले जाकर उमी की परछाई दिखलाई । शेर गर्जो—कुम्हों से गर्जन की प्रतिध्वनि आई । मूर्ख शेर समझने लगा कि कुम्हों का शेर मेरा मुकाबला कर रहा है । वह उस कुम्हों में कूद कर मर गया । खरगोश प्रसन्न होकर जंगल में पहुँचा और सब जीवों को समाचार सुनाया कि शेर मर गया । शेर कहा है जिसके पास बुद्धि है वह बलवान है । निबुद्ध के पास बल नहीं है । बुद्धिमान खरगोश ने शेर का भा मार दिया ।





कर चावलों को मराने के लिए उनमें का निरवय किया । उनमें से  
साथ ही वे जाल में फँस गये ।

अब लग राने और चिल्लाने । चूड़े चित्रप्रीथ ने कहा कि अब मे  
रक्षा का उपाय है । तुम सब एक साथ जाल को लेकर उड़ो । इस तरह  
तुम शिकारी से बच जाओगे । सब ने ऐसा ही किया । सब उड़ने लगे  
दूर जंगल में पहुँचे । चित्रप्रीथ ने अपने मित्र हिरण्यक चूड़े से कहा  
कि वह जाल को काट दे । जाल काट दिया गया और कबूतर बन्धन  
से छूट गये । ठीक कहा है—ममार में जितने कितने मित्र बना  
चाहिये । देखो मित्र चूड़े ने ही कबूतरों को बन्धन में मु  
कर दिया ।

१४

प्राचीन समय में एक राजा था । उसका नाम शिवि था । वह  
अत्यन्त धार्मिक दयालु एवं परोपकारी था । वह अहिंसा-धर्म का  
पालन करने वाला था ।

एक दिन एक भयभीत कबूतर उड़ता हुआ उसकी गोद में कै  
गया और कहने लगा—राजन मेरी रक्षा करो । एक हिंसक बाज मुझे  
मारना चाहता है । राजा ने कहा—तुम मेरी शरण में आओ तो  
भय न करो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा ।

बाज आया और कहने लगा—राजन इस कबूतर का छोड़ दो  
वह मेरा भय है । यदि इसे तुम नहीं छोड़ोगे तो मैं भयगर्हक  
तुम्हारे शिर पर प्राणत्याग कर दूँगा । तुम्हारे मेरे बंधन का पालन  
लगाता ।

राजा सोचने लगा—कबूतर का देना तो उसका हिंसा का पालन  
करना ही नहीं होता तो बाज का हिंसा का पालन करना ही  
नहीं है । बाज का कहना लगा—राजन यदि तुम मुझे  
न छोड़ोगे तो मैं तुम कबूतर का परमाणु ही मराने में सक्षम हूँ ।







( B ) १. कल शाम जब हेडमास्टर माहेव स्कूल के बगोचे में टहल रहे थे, तब उन्होंने वहाँ एक विद्यार्थी को पत्र लिखते हुए देखा।

२. मूर्य के अस्त होने पर यदि मैं घर न लौटा तो पिता मुझ पर नाराज होंगे।

३. महाजनों का जो मार्ग हो उसी पर हमें चलना चाहिए।

( C ) संसार के इतिहास में बड़े भयानक युद्धों का वर्णन है। भारत में भी एक ऐसा युद्ध पुराने जमाने में कौरवों और पाण्डवों के दरमियान हुआ था। पर जो युद्ध हम समय विरव मर में केल रहा है उसके विनाशक रूप को देखने से प्रतीत होता है कि यह सब में अधिक भयानक है।

१९४४

१. (क) मघाद् अकबर के शासनकाल में टोडरमल्ल एक बहादुर वीर था। लाहौर नगर में उसका जन्म हुआ।

(ख) कुमार और चन्द्र दोनों भाई एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। पढ़ाई में दोनों हांगियार हैं।

(ग) मुम कहते हैं कि यह पुस्तक बेरी नहीं। मुझे यह दिखाने दो थी।

(घ) श्रीमान् जी' डिग्री का अध्यापक हमें मेहनत से पढ़ाना है इसलिए हम सब उसका विशेष आदर करते हैं।

(ङ) दिवंगत का जोत कर अंशेज लोग मुझ में शायद करेंगे। तब शायद भारत देश का मा स्वराज्य मिल जायेगा।

२ (क) गर्मों में पार्किंग अचानक मन में वृद्ध का आया। मैं बैठे हुए हूँ कि त एक भयानक साथ हुआ।

ख 'उस वक्त' 'वन, अवन वरुण' का पालन करना है उमर

\* \* \* \* \* का पालन करना चाहिए



१६४:

(१) निम्नलिखित वाक्यमूहों में से किन्हीं पाँच का संस्कृत में अनुवाद करो :—

(a) परमात्मा को नमस्कार कर पाठ को आरम्भ करो इस पर विश्वास रखो, अवश्य अपने कार्य में सफलता मिलेगी।

(b) वृष्टि हो रही है; दरवाजा बन्द कर, खिड़कियाँ खोल दे।

(c) ब्रह्मचारी को घन से क्या. उमठा विद्या पढ़ने से ही प्रयोजन है।

(d) गुरुजी कुरमी पर बैठ तथा मेज़ पर पुस्तक रख हमें पढ़ाने दें।

(e) कोई विद्यार्थी परिश्रम के बिना परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकता। परिश्रम ही सुख का माधन है।

(f) तुम्हारी दयात में अच्छी स्याही हो तो मुझे दो। मैं अपने कलम से चिट्ठी लिख अभी डाकघर ( पत्रगृहम् ) भेजूँगा।

(g) हमारी श्रेणों में बालास लड़के हैं। इनमें मोहन सबसे अच्छा है।

(h) इस बगीचे में नाना प्रकार के सुन्दर फूलों के वृक्ष हैं। वहाँ एक सरोवर में कमल खिले हुए हैं।

(i) मेरा छोटा भाई ज्वर से पीड़ित होने के कारण कल स्कूल में अनुपस्थित था। आज उमने प्रधान शिक्षक महोदय के पास शर्जी ( प्राथनापत्रम् ) भेज दी।

(-) केवल एक का संस्कृत में अनुवाद करो:

(a) भारतवर्ष में कुरुकुल में शान्तनु नाम का मन्त्र गुणों से मन्त्र एक राजा हुआ। उसकी बड़ा राजा गगादेवा ने माल पुत्रों को उत्पन्न किया, किन्तु वे मन्त्र जन्म के कुछ काल के परचान हो मर गए। आखिरी पुत्र दशव्रत का उत्पन्न करके गगादेवा स्वर्ग चला गई। महर्षि वसिष्ठ ने दशव्रत को चांग बंद पढ़ाये। जमदग्नि के पुत्र परशुराम ने उसे





(१६) नित्य कर्म में निरूत होकर अपने काम में जुटा हुआ है।

(ख) किर्मा एक का संस्कृत में अनुवाद करो :—

(१) देवदत्त संस्कृत में १२० नम्बरों में से १०० नम्बर (अष्ट) प्राप्त कर वार्षिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हुआ।

(२) माधुसूयों की रक्षा के लिए, पापियों का विनाश करने के लिए तथा धर्म की स्थापना के लिए मैं युग युग में जन्म लेता हूँ।

१६४१

१. (क) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो:—

(१) मदा धर्म पर चलो।

(२) धर्म जीवन है।

(३) मत्स्य धर्म का अङ्ग है।

(४) मत्स्य में बड़ा धर्म नहीं।

(५) तप धर्म का अङ्ग था।

(६) आजकल के विशार्वी नपरहित हैं।

(७) तप में बहुत मुख्य है।

(८) निनेमा मत देखो।

(९) यह चरित्र को नष्ट करता है।

(१०) अध्यापक भी तपस्वी हों।

(ख) अब भारत स्वतन्त्र है। अंग्रेज यहाँ से चले गये हैं।

हिन्दी राष्ट्रभाषा बन रही है। संस्कृत का उत्थान समीप ही दिगर्भ देता है। अंग्रेजी की प्रधानता नष्ट हो जायगी। पुराने साहित्य का मूल्य अब पड़ेगा। हिन्दी संस्कृत न जानना घृणा का स्थान होगा। राम राज्य का आरम्भ होने वाला है।

१६४२

१) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो :—

(क) (१) ईश्वर पाप और पुण्य का देखता है।



२. (क) निम्नलिखित के स्त्रीप्रत्ययान्त (Feminine) रूप लिखो-  
युवन, राजन, विद्वान्, गन्धर्व ।

(ख) निम्नलिखित के तुलनावाचक (Comparative) अतिशयवाचक (Superlative) रूप लिखो -- दास, गुह, बड्ड ।

३. (क) कमधारण्य ममाम् का लक्षण एक उदाहरण देकर स्पष्ट करो  
(ख) इन ममम्न पदों में से केवल दो का विषद् करो : -  
पद्म, त्रिव, पितृमम, उपपद्म ।

४. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखा:

मेव् लङ् प्र लट् नृन्.....शृट्

६. रच् और अलम् के साथ कौन कौन-सी विभक्ति लगती है ?

एक एक उदाहरण देकर स्पष्ट करो ।

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों का संशोधन करो --

(क) विप्रं गां ददाति ।

(ख) उपप्युपरि लोहस्य हरि ।

(६०)

१. (a) केवल तीन रूपों का सन्धिच्छेद करो : -

पित्राज्ञा तच्छ्रुत्वा, नोरोग, मनोरथ ।

(b) केवल दो रूपों को सन्धिसहित लिखो --

क्षुधा + श्रुतः, मदान् + तडाग, मुनि + श्रयम् ।

[ नोट -- नियम लिखने की आवश्यकता नहीं ।

२. निम्नलिखित के रूप लिखो

भूपति .. .. . आठों विभक्तियों के बहुवचन

पितृ .. .. . आठों विभक्तियों के बहुवचन

इदम् ( पुंल्लिङ्ग ) .. .. . आठों विभक्ति में के बहुवचन

चन्द्रमम् .. .. . आठों विभक्तियों के बहुवचन ।

५ )



(ख) शाला, पितृ, वाच्, किम् ( पुँल्लिङ्ग ), युष्मद्—शब्दों की तृतीया तथा सप्तमी के एकवचन में रूप लिखो ।

(ग) विदुषे अथवा सिद्धः रूपों के शब्द, विभक्ति और वचन बताओ ।

३. (क) राजन्, बालक, गच्छन्—के स्त्री-प्रत्ययान्त रूप Feminine form- ) लिखो ।

(ख) मरिन्, गगन, अग्नि—शब्दों का लिङ्ग बताओ :—

४. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखो :—

जि और युष्—लङ् । गम् और कृ (परस्मै०)—विधिलिङ् । अप् अथवा शी—लट् । दृश अथवा स्या—लृट् ।

५. भू, इप्, ज्ञा के शत्रन् ( Present Active Participle ) और त्यज, प्रह्, चिन्त् के क्तवान्त ( Past Passive Participle ) रूप लिखो ।

६. नीचे लिखे पदों में-से केवल आठ के अर्थ बताओ :—

कुर्वाणः । ददति । सोढुम् । अमुष्मिन् । पितरि । भाषयति । षोडशी । आदाय । पथि । कनीयान् ।

७. ( राज्ञः पुरुषः ), ( अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः ), ( शक्तिम् अनतिक्रम्य )—इनमें से केवल दो विपदों के समस्तरूप (Compounds) बना कर दोनों समासों का नाम निर्देश करो ।

८. ( १ ) सा पूर्णचन्द्रं परयति । ( २ ) कृष्णेन हतः कंसः । इन वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन (Change of voice) करो ।

( २ ) निम्नलिखित में से केवल तीन को शुद्ध करो—

( १ ) असी यात्रकी । ( २ ) दरिद्र धनं देहि । ( ३ ) ईशस्य प्रति भक्ति-मान् भव । ( ४ ) वायुना वृक्षोऽय भग्नम् ।

१९४४

१ (क) ज+य+ए, र+ऊ, ध+ध—इन अक्षरों को संयुक्त करो । 'सु' किन अक्षरों के योग में बना है ?



इन वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन ( Change of voice ) करा ।

अथवा

निम्नलिखित में से केवल तीन को शुद्ध करो :—

- (क) कश्चिद् वाला । (ख) अयं भवनम् । (ग) भृत्ये क्रुष्यात् प्रः  
(घ) कुमारी गतः । (ङ) गोविन्दं नमो नमः ।

१९४५

I (a) सृ + ऐ, र् + त, ज् + व—इन अक्षरों को संयुक्त करो ।<sup>१९</sup>  
किन अक्षरों के संयोग से बनता है ।

(b) नियम लिखे बिना सन्धि करो—

इति + आदि, तन् + हितम्, मुनिः + गच्छति ।

सन्धिच्छेद करो—गणेशः, तेऽपि, करिष्यन् ।

(c) नराण्य और धातुसु रूपों को शुद्ध करो ।

II (a) फल, शाला, साधु, मातृ, मरुत्, नन् (पुल्लिङ्ग) शब्दों के लृटोः  
सथा पठ्यो के एकवचन में रूप लिखो ।

(b) 'स्वयि' रूप के शब्द और विभक्ति बताओ ।

III निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखो—दृश् दिव् हन् कृ (परस्मै०)  
के लट् में, अस् के लृट् में शक् के लृट् में ।

IV (a) प्रथम, महन्, राजन्—शब्दों के स्त्रीप्रत्ययान्त ( Feminine  
Forms ) लिखो ।

(b) वाच्, मरिष, मनम् शब्दों के लिङ्ग बताओ ।

(c) पर्यामुषु प्राप्य, कनिष्ठः त्रिशतं घातयति, स्रष्टुम्—पदों के  
अर्थ लिखो ।

V त्रि, प्रच्छ कथ धातुओं के शत (अन्) प्रत्ययान्त ( Present  
Act व Part ple ) नम दा स्वप धातुओं के क (त)  
प्रत्ययान्त ( Part Pa व Part ple ) रूप बताओ ।





(b) केवल आठ पदों के अर्थ लिखो :—

दर्शयति, गृहाण, ददति, श्रोतुम्, बलिष्ठः, सेवमानः, अह्न  
कृतवती, तिस्रः, पश्चाशान्, नेष्यति, पृष्ट्वा, गन्तव्यम्, मुबक्ते ।

IV. (a) केवल दो विभक्तियों से समस्त पद बनाओ :—माना च पितृ  
चः, राज्ञः पुरुषः, दिने दिने, त्रयाणां मुबनानां समाहारः, पीत  
अम्बरं यस्य सः ।

(b) केवल दो समस्तपदों का विभक्त लिखो :—

घनरयामः, महापुरुषः, पाणिपादम्, यथाशास्त्रम्, व्याघ्रभयम्

V. (a) केवल दो शब्दों के स्त्रीप्रत्ययान्त रूप (Feminine forms)  
लिखो :—प्राज्ञण, आचार्य, पति, गच्छन्, विद्वत् ।

(b) केवल दो शब्दों के चिह्न बताओ :—मति, पुस्तक, युवक  
अग्नि, जल ।

(c) केवल तीन धातुओं के क्त्वा (त्वा) प्रत्ययान्त (Indeclinable  
Past Participle) तथा तुमुन् ( तुम् ) प्रत्ययान्त ( Infinitive  
forms ) रूप बनाओ :—

हरा, कृ, हन्, भञ्, प्रह्, ह ।

(a) केवल दो वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन ( Change of voice )  
करो :—

(i) बालकः हसति । (ii) मया पुस्तकं पठितम् । (iii) एवं हि  
वदसि । (iv) मृत्युं अन्नं पच्यते ।

(b) निम्नलिखित वाक्यों में से केवल चार को शुद्ध करो :—

(i) भवान् कुत्र गच्छसि । (ii) म मां पुस्तकं दत्तवान् ।

(iii) पितुः मह पुत्रो गृहं गच्छति । (iv) नगरस्य वृत्तिर्नम रिचते ।

(v) त्रयं वाजिका अत्र पठन्ति । (vi) अन्नं कर्म करिष्यामि ।

(vii) मम मित्रः नास्ति ।



महान् बाहुः यस्य सः, शक्तिम् अनतिकम्ब ।

[b] केवल दो ममस्त पदों का विग्रह लिखो:—पुष्पमिंद्रः, गङ्गा-जलम्, प्रत्यहम्, पक्षपाणिः ।

V. [a] केवल दो शब्दों के स्त्रीप्रत्ययान्त रूप ( Feminine Forms ) लिखो:—नर, इन्द्र, कृतवान्, राजन् ।

[b] केवल दो शब्दों के लिंग [gender ] बनाओ :—भूमि, घन, आत्मन, गुण ।

[c] केवल दो धातुओं के क्त (त) प्रत्ययान्त तथा शट् या शान्त प्रत्ययान्त रूप बनाओ —स्था, मह्, पच्, हम् ।

VI [a] केवल दो वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन ( Change of Voice ) करो:— [i] अहम् गच्छामि । [ii] त्वया किं कृतम् ? [iii] पिता पुत्रेण सेव्यते [iv] शिष्यः गुरुं प्रणमति ।

[b] निम्नलिखित वाक्यों में से केवल चार को शुद्ध करो—

[i] शानस्य विना निष्फल जीवनम् । [ii] पत्नी पत्युः मह् वर्तयति । [iii] चतुर क्लानि आनय । [iv] मीना रामाय प्रिया आर्मान । [v] प्रह्लादारिणः धनस्य किम् ? [vi] गुरुं नमः ।

अथवा

[a] अभिनः या उपरि, पद्भिः या इदानी—इनके साथ कौन कौन सी विभक्तियाँ लगती हैं ? एक एक उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

१९४८

( Emergency Examination )

I a केवल तीन रूपों का मन्थिच्छेद करो.—

परमात्मा मुनोन्द् देवेन्द्, प्रातर्गेष कम्बम् ।

b केवल तीन रूपों का मन्थियुक्त करग —

गङ्गा + उद्दह्य भग्न + एव काक + ईश मुना • इसी क्रम + नायः ।  
केवल दो रूपों का शुद्ध करग -



उपधात्मक म् इति श्रावः ।

स्य म् इति श्रावः ।

म् इति श्रावः ।

इति श्रावः ।

अथवा

(घ) : गंधनं, दहति, गृह्णति, विमन्ति—इन क्रिया पदों में से क्विप्ति हो कर वाक्यों में प्रयुक्त क्यों, जिसमें यह प्रतीत हो कि पूर्व का एक ज्ञान है ।

॥ प्रति श्रुति, अलम्, साधन . मन्ति—इनमें से क्विप्ति हो कर वाक्यों में कौन सा विमन्ति आती है, यह ज्ञाने हुए दो वाक्य बनाओ ।

१६४६

I. निम्नलिखित शब्दों में से से क्विप्ति पाठ का मन्विच्छेद करो :—  
महर्षिः । वागांशुः । तद्विभव । जगन्नाथकः । नन्दुत्वा । विव्राज ।  
पुण्यं गच्छति । तन्वेष्टः ।

II. निम्नलिखित शब्दों में से से क्विप्ति पाठ में मन्वि करो :—  
माता + अत्र + । अति + एवम् । भवन् + आत्मा । पारशान् + क्षेपुर् ।  
गीः + पति । मानुः + उदेति । मज्ज + एव । नै + अकः ।

III. निम्नलिखित में से से क्विप्ति पाँच शब्दों के तृतीया एकवचन तथा पौडी द्विवचन में रूप लिखो :—  
गुह्य । पितृ । वीर्य । पवित्र । नद (स्त्रोलिङ्ग) । धनु । लता ।  
गुरु । पति । पुम ।

IV. निम्नलिखित धातुधातु म से क्विप्ति नाम धातुधातु के लङ्, लृट्, तथा लोट् के भावमव्यय के मध्य वचना में रूप लिखो :—  
अद् । अग । भा । मग । नृत् । मत् । घट । परस्मै (द) ।

V. निम्नलिखित धातुधातु म से क्विप्ति पाठ के लक्ष्य प्रत्यय लगाकर



उपाध्यायस्य सह याति छात्रः ।

तस्य शतं धारयामि ।

रजकं वस्त्राणि देहि ।

कुटिलं वचो मां न रोचते ।

अथवा

(स्र) : रोचते, ददाति, रक्षति, विभेति—इन क्रिया पदों में से किन्हीं दो को वाक्यों में प्रयुक्त करो, जिसमें यह प्रतीत हो कि तुम्हें कारक ज्ञान है ।

॥ प्रति, श्रुते, अलम्, साकम्, स्वस्ति—इनमें से किन्हीं दो के योग में कौन सी विभक्ति आती है, यह दर्शाते हुए दो वाक्य बनाओ ।

१६४६

I निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार का मन्विच्छेद करो :—  
महर्षिः । चागोराः । तद्धितम् । जगन्नायकः । तच्छ्रुत्वा । पित्राज्ञा ।  
पुरुषो गच्छति । तस्यैकः ।

II. निम्नलिखित रूपों में से किन्हीं चार में सन्धि करो :—  
सीता + अत्र + । अपि + एवम् । भवन् + आज्ञा । पाशान् + छेत्तुम् ।  
गौः + चलति । मानुः + उदेति । सदा + एव । नै + अकः ।

III निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच शब्दों के तृतीया एकवचन तथा पञ्ची द्विवचन में रूप लिखो :—

सुहन । पितृ । धीमत् । पथिन । तद् (खोलिङ्ग) । धेनु । लता ।  
सुर । पति । पुंस ।

IV निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं तीन धातुओं के लङ् लृट्, तथा लोट् के मध्यमपुरुष के मध्य वचनो में रूप लिखो :—

अद् । अम । भा । स्पृञ् । नृन् । भक्ष् । मह (परस्मै-४द्) ।

V निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं पाँच के तृतीय प्रत्यय लगाकर

अथ सर्वं हिंसां प्रलयं तदाश्च रूपं वनाशोः—

दा। न। म्। ह। व। वि। से। न्। ह्य। म्।

I. निर्मलितं नै मे हिंसां दो समानं पदो क विन्दे अर्थः—

निं। वं। सु। म्। अ। न्। प्र। ल। यं।

(II) निर्मलितं नै मे केवलं दो समानं पदं तिलोः—

दा। न। म्। ह। व। वि। से। न्। ह्य। म्।

III. निर्मलितं नै मे हिंसां सर्वं दो मुद्रं अर्थे तिलोः—

प्र। ल। यं। सु। म्। ह्यं। कुर। त। मु। दं। ह्मि। म्। कं।  
दा। न। म्। ह। व। वि। से। न्। ह्य। म्।

१९१०

1. निर्मलितं नै मे हिंसां सर्वं दो मुद्रं अर्थे तिलोः—  
अथ सर्वं हिंसां प्रलयं तदाश्च रूपं वनाशोः—

दा। न। म्। ह। व। वि। से। न्। ह्य। म्।

2. निर्मलितं नै मे हिंसां सर्वं दो मुद्रं अर्थे तिलोः—  
अथ सर्वं हिंसां प्रलयं तदाश्च रूपं वनाशोः—

दा। न। म्। ह। व। वि। से। न्। ह्य। म्।

3. निर्मलितं नै मे हिंसां सर्वं दो मुद्रं अर्थे तिलोः—  
अथ सर्वं हिंसां प्रलयं तदाश्च रूपं वनाशोः—

दा। न। म्। ह। व। वि। से। न्। ह्य। म्।







रोषते । (ज) यत्न बिना कार्यभिद्धि नं भवति । (क) वृत्त पत्राणि पठन्ति । (ख) काम क्रोधः प्रभवति ।

४. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन ममल पदों का विभ्द करो और समास भी बनाओ :—

कृष्णसर्पः, मालापितरौ, धनुयुगम्, गंगाजलम्, पोवाम्बरः, यथाशक्ति ।

५. निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं तीन के 'क्ल' और 'क्त्वा' प्रत्यय लगा कर रूप लिखो :—

हन्, चूर्, दृश्, कृ, पा. नी ।

६. निम्नलिखित शब्दों में किन्हीं चार का मन्धिच्छेद करो :—

शशांक, प्रमोदत्र, कर्वान्द्रः, दूरादागतः, नमस्कारः

जगन्नाथः, शिशुहंसति, रमेशः ।

७. निम्नलिखित में से किन्हीं चार में सन्धि करो :—

भेषः + गर्जति, कुर्वन् + अस्ति, विपन् + जालम्, वाक् + दत्ता, प्रमु + आशा, मदा + एव, गंगा + उदकम्, दया + अर्णवः ।

८. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो के अन्त में स्त्रीप्रत्यय ( Feminine affixes ) लगाकर इनके स्त्रीलिंग बनाओ :—

पिनामह, सपु, राजन्, बुद्धिमन्, गच्छन् ।

९. निम्नलिखित वाक्यों में किन्हीं दो का वाच्यपरिवर्तन ( Change of Voice ) करो :—

(क) रामः पुस्तकं पठति । (ख) नराः वध्नाणि धानवन्ति ।

(ग) शिशुः पयः पिबति (घ) अहं चन्द्रं पर्यामि ।

